## नजानू की कहानियां

१

निकोलाई नोसोव



# फूलनगर के बौने



रादुगा प्रकाशन · मास्को



# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

१

# फूलनगर के बौने

*अनुवादक:*
*सरस्वती हैदर*

*चित्रकार:*
*बोरीस कलऊशिन*




राद्गा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





क़िस्से-कहानियों के एक नगर में कुछ बौने रहते थे। उनको बौना इसलिए कहते थे कि वे बहुत ही छोटे थे। हर एक बौने का क़द बस खीरे के बराबर होता था। उनके नगर में बहुत सारी सुंदर-सुंदर चीज़ें थीं। हर घर के चारों ओर फूल खिले रहते थे: डेज़ी, कैमोमाइल, डैन्डेलियन। यहां तक कि उस नगर की सड़कों के नाम भी फूलों के नाम पर रखे गये थे: ब्लू-बेल्म सड़क, कैमोमाइल वीथिका, कार्नफ़्लार तरुपथ। और नगर का भी नाम था फूलनगर। यह नगर एक छोटी-सी नदी के तट पर बना था। बौनों ने इस नदिया का नाम रखा था खीरेवाली नदिया क्योंकि इसके किनारे पर बहुत से खीरे उगते थे।

नदी के उस पार एक जंगल था। बौने भूर्ज की छाल से छोटी-छोटी किश्तियां बनाते और उन पर बैठकर नदिया को पार करके जंगल में जाते थे। वहां वे जंगली फल, खुम्बियां और अख़रोट इकट्ठा करते थे। जंगली फलों को जमा करना बहुत कठिन था क्योंकि बौने बहुत ही छोटे-छोटे थे। अख़रोट को तोड़ने के लिए उन्हें ऊंची-ऊंची झाड़ियों पर चढ़ना पड़ता था और अपने साथ आरी भी ले जानी पड़ती थी। कोई भी बौना अपने हाथों से अख़रोट को नहीं तोड़ पाता था।



उन्हें रेती से रगड़ने की ज़रूरत होती थी। इसी प्रकार खुम्बियों को भी आरी से काटना पड़ता था। बौने पहले खुम्बियों को बिलकुल जड़ के पास से काटते, फिर उनके टुकड़े-टुकड़े करते, और उसके बाद एक-एक टुकड़े को अलग-अलग घसीटकर, उन्हें घर ले जाते।

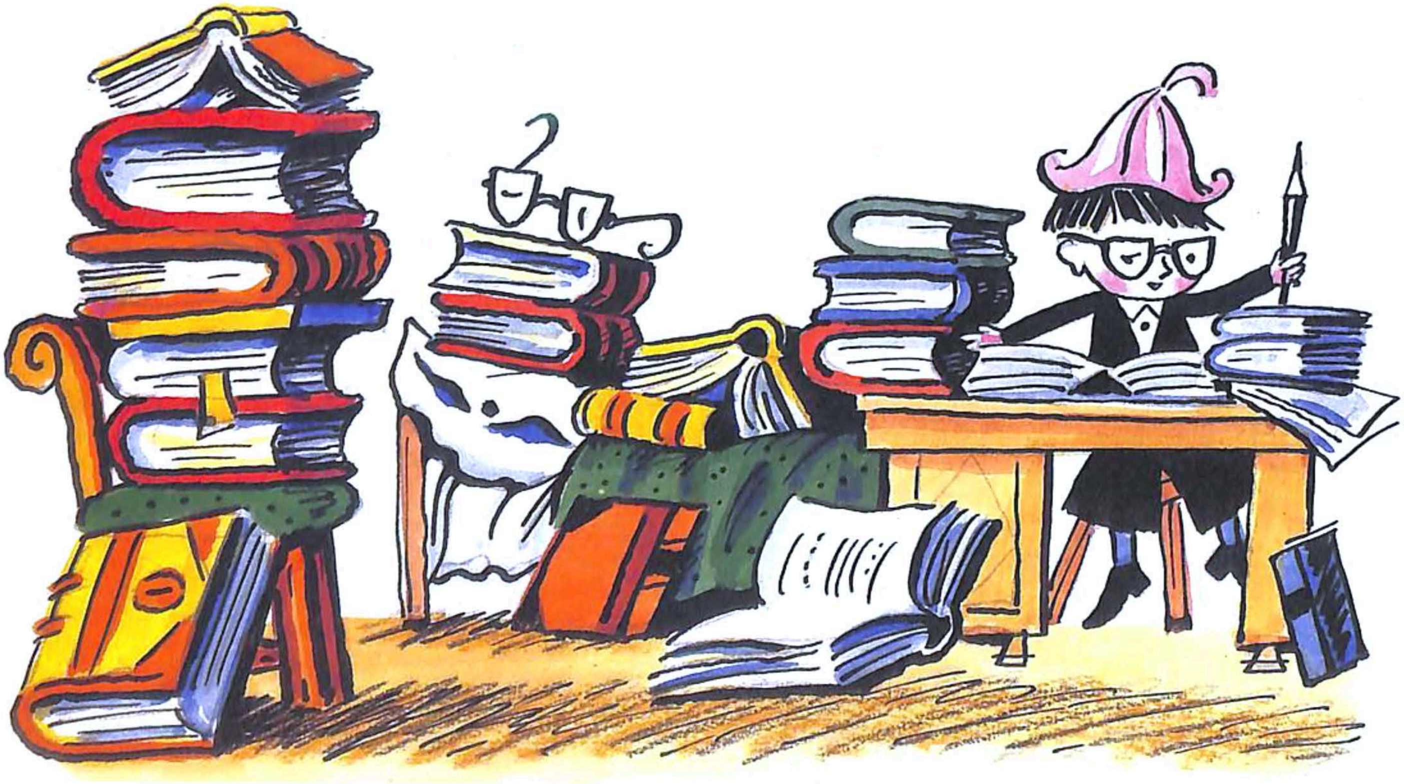
सब के सब बौने एक ही प्रकार के नहीं थे। बौनों में से कुछ का नाम था छुटका, और कुछ का नाम था छुटकी। छुटके ज़्यादातर या तो लम्बी पतलूनें पहनते, जिनके पांयचे वे अपने जूतों में घुसेड़ लेते थे, या फिर गेलिस लगी छोटी-छोटी निकरें पहनते थे। छुटकियों को रंगबिरंगी और चटकीले कपड़ों मे बनी फ़ाकें पहनना अच्छा लगता था। छुटके बाल बनाने के झंझट में नहीं पड़ना चाहते थे। इसलिए उनके बाल छोटे-छोटे होते थे जबकि छुटकियों के बाल लम्बे होते, इतने लम्बे कि उनकी कमर तक पहुंचते थे। छुटकियों को बालों को तरह-तरह से सजाना-संवारना अच्छा लगता था। वे अपने बालों की चोटियां बांधतीं, चोटियों में रिबन लगातीं और सर पर तितली-सी बनाती थीं। बहुत से छुटकों को इस पर बड़ा गर्व था कि वे छुटके हैं। वे ज़्यादातर छुटकियों से मेल-जोल नहीं रखते थे। छुटकियों को भी इस पर नाज़ था कि वे छुटकियां हैं और वे भी छुटकों के साथ दोस्ती करना पसंद नहीं करती थीं। अगर सड़क पर किसी छुटकी की भेंट किसी छुटके से हो जाती तो छुटकी दूर से ही उसे देखकर सड़क पार करके दूसरी ओर चली जाती थी। यह वह ठीक ही करती थी, क्योंकि छुटकों के बीच ऐसे बहुत-से होते थे जो ज़रूर कोई छेड़-छाड़ करते थे। छुटके अवश्य छुटकियों से कोई बुरी लगनेवाली बात कहते। हो सकता है वे उनको धक्के मारते, या फिर इससे भी बुरा व्यवहार करते और वे छुटकियों की चोटियां खींच लेते। सब छुटके तो इस



तरह के नहीं थे, मगर किसी के माथे पर तो लिखा नहीं होता कि वह कैसा है, इसलिए छुटकियों ने यह सोच लिया था, कि पहले से ही सड़क की दूसरी ओर चले जाना छुटकों के बीच में फंसने से ज़्यादा ठीक है। इसलिए बहुत-से छुटकों ने छुटकियों को नकचढ़ी नाम दे रखा था – क्या ख़ूब बेहूदा नाम चुना था उन्होंने! बहुत-सी छुटकियों ने छुटकों को छेड़ख़ोर तथा कई दूसरे अपमानजनक नाम दे रखे थे।

हमारी कहानी पढ़नेवाले लोग फ़ौरन कहेंगे कि यह सब मनगढ़ंत बातें हैं, कि जीवन में ऐसे छुटके नहीं पाये जाते। पर यह तो कोई भी नहीं कह रहा है कि वे जीवन में पाये जाते हैं। मगर जीवन की बात और है, और क़िस्सों-कहानियों के नगर की बात और। क़िस्सों-कहानियों के नगरों में सब कुछ पाया जा सकता है।

ब्लूबेल्स सड़क के एक छोटे-से घर में सोलह छुटके-बौने रहते थे। इनमें सबसे प्रमुख था एक छुटका-बौना जिसका नाम था जानू। उसको जानू नाम इसलिए दिया गया था कि वह हर चीज़ के बारे में जानता था। उसको सब चीज़ों के बारे में ज़्यादा जानकारी इसलिए थी कि वह तरह-तरह की किताबें पढ़ता रहता था। ये किताबें उसके यहां मेज़ पर, मेज़ के नीचे, पलंग पर, पलंग के नीचे हर जगह बिखरी रहती थीं। उसके कमरे में कोई भी जगह ऐसी नहीं थी जहां किताबें न पड़ी हों। किताबों को पढ़-पढ़कर जानू बहुत समझदार बन गया था और इस कारण सब लोग उसकी बात





मानते थे और उससे बहुत प्रेम करते थे। वह हमेशा काले कपड़े पहनता था और जब वह मेज़ के पास बैठता और अपनी नाक पर ऐनक चढ़ाकर कोई किताब पढ़ने लगता तो वह बिलकुल प्रोफ़ेसर लगता था।

इसी घर में एक प्रसिद्ध डाक्टर भी रहते थे जिनका नाम था टिकियावाला। वह बौनों की सारी बीमारियों का इलाज करते थे। वह हमेशा डाक्टरोंवाला सफ़ेद कोट और सर पर फुंदने लगी सफ़ेद टोपी पहने रहते थे। इस घर में एक बहुत योग्य मिस्त्री पेंचू भी खांचू नाम के अपने मददगार के साथ रहता था। और इसी घर में रहते थे शक्कर शरबतिया जिनका यह नाम इसलिए मशहूर हो गया था कि उनको सोडे के पानी में शरबत मिलाकर पीना बहुत पसंद था। वह बहुत ही तमीज़दार बौने थे। जब उन्हें शक्कर शरबतिया नाम से पुकारा जाता तो उन्हें यह बहुत भाता था, मगर अगर उन्हें सिर्फ़ शरबतिया कहकर सम्बोधित किया जाता, तो यह उनको अच्छा नहीं लगता था। इसी घर में एक शिकारी भी रहता था, जिसका नाम था गोलीबाज़। शिकारी के पास एक छोटा-सा कुत्ता था जिसका नाम था गुर्रा और एक बन्दूक़ भी थी जो सिर्फ़ काग दाग सकती थी। इन सबों के साथ ही रहता था एक कलाकार, जिसका नाम था ट्यूबेश, एक संगीतकार जिसका नाम था बाजाबाज़। और कई बौने भी इसी घर में रहते थे: जल्दबाज़, श्रीमान बड़बड़िया, ख़ामोश, गुलगुला, खोऊ, दो भाई – अगरकहीं और होशायद। मगर इन सबमें सबसे ज़्यादा मशहूर था एक बौना जिसका नाम था नजानू। उसको नजानू इसलिए कहा जाता था कि वह किसी भी चीज़ के बारे में कुछ नहीं जानता था।



नजानू बहुत ही चटक नीली टोपी पहनता था और उसके साथ कनेरी चिड़िया जैसे पीले रंग का पतलून और नारंगी रंग की क़मीज़, जिस पर वह हरी टाई बांधता था। उसको चटक रंग बहुत पसंद थे। इस तरह एक तोते की तरह सज-धजकर नजानू पूरे दिन सारे नगर में सटरगश्ती





करता फिरता था और बेसर-पैर की कहानियां गढ़कर सब को सुनाता रहता था। इसके अलावा वह छुटकियों को सताता भी था। इसी कारण छुटकियां अगर दूर से ही उसकी नारंगी क़मीज़ देख लेतीं तो वे फ़ौरन घूमकर दूसरी ओर चलने लगतीं और घर में जाकर छुप जाती। नजानू का एक दोस्त था जिसका नाम था चिथड़िया। वह डेज़ी सड़क पर रहता था। चिथड़िया के साथ नजानू घंटों गपशप कर सकता था। वे दोनों दिन में बीस बार झगड़ते और दिन में बीस बार उनमें मेल हो जाता।

नजानू की शोहरत एक घटना के बाद ख़ास तौर से बढ़ गयी।

एक बार नजानू नगर में चक्कर लगा रहा था और अचानक खेत में जा पहुंचा। उस खेत के आस-पास कोई नहीं था। उस समय वहां एक भौंरा उड़ रहा था। अनजाने में वह भौंरा सीधे नजानू की ओर उड़ आया और उसकी गुद्दी से टकरा गया। नजानू उसके वार से धरती पर मुंह के बल गिर पड़ा। उसी क्षण भौंरा उड़कर चला गया और ओझल हो गया। नजानू उठ खड़ा





हुआ और चारों तरफ़ यह देखने का प्रयत्न करने लगा कि उसको किसने टक्कर मारी थी। मगर चारों ओर कोई भी नहीं था।

"मुझको टक्कर किसने मारी ?" नजानू ने सोचा। "हो सकता है कि ऊपर से कोई चीज़ नीचे गिरी हो।"

उसने अपना सर उठाकर ऊपर देखा मगर वहां भी कुछ नहीं था। सिर्फ़ सूरज बड़ी तेज़ी से नजानू के सर के ऊपर चमक रहा था।

"इसका मतलब है कि सूरज से ही कोई चीज़ गिरकर मेरे ऊपर वार कर गयी," नजानू ने सोचा। "मेरे ख़्याल में सूरज का ही एक टुकड़ा टूटकर मेरे सर पर आ गिरा होगा।"

नजानू घर लौट पड़ा। रास्ते में उसकी मुलाक़ात अपने जान-पहचान के एक बौने से हुई जिसका नाम था शीशू।

शीशू बहुत प्रसिद्ध खगोलज्ञ था जो टूटी हुई बोतलों की किरचों से चीज़ों को बड़ा दिखाने-वाला शीशा बना सकता था। जब वह इस शीशे से अलग-अलग चीज़ों को देखता तो वे चीज़ें बहुत बड़ी दिखायी देती थीं। ऐसे ही कई शीशों से शीशू ने एक दूरबीन बनायी जिससे चांद और सितारों को देखा जा सकता था। इसी तरह शीशू खगोलज्ञ बन गया।

"सुनो शीशू," नजानू ने खगोलज्ञ से कहा, "जानते हो, मेरे साथ कैसी घटना घटी है: सूरज का एक टुकड़ा गिरकर मेरे सर आ टकराया।"

"क्या कह रहे हो, नजानू ?" शीशू हंसकर बोला, "अगर सूरज से कोई टुकड़ा गिरता तो वह तुमको चपाती बना देता। सूरज तो बहुत बड़ा है। वह तो हमारी पूरी धरती से भी बहुत ज़्यादा बड़ा है।"

"यह हो ही नहीं सकता," नजानू ने जवाब दिया। "मुझे तो लगता है कि सूरज एक तश्तरी से ज़्यादा बड़ा नहीं है।"

"तुमको सिर्फ़ ऐसा लगता ही है क्योंकि सूरज हमारी धरती से बहुत दूर है। वह एक बहुत बड़ा, दहकता गोला है। मैंने अपनी दूरबीन से ऐसा ही देखा है। अगर सूरज का एक छोटा-सा टुकड़ा भी गिर पड़े तो वह हमारे पूरे नगर को बरबाद कर सकता है।"

"बाप रे बाप !" नजानू ने जवाब दिया। "मैं यह नहीं जानता था कि सूरज इतना बड़ा है। मैं अभी जाकर सबको बताता हूं—हो सकता है कि उन्होंने सूरज के बारे में यह बात कभी न सुनी हो। फिर भी तुम अपनी दूरबीन से सूरज को एक बार फिर से देखो। हो सकता है सचमुच उसका एक कोना टूट गया हो !"





नजानू अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसे जो लोग भी मिलते उनसे वह यह कहता :

"भाइयो, आप जानते हैं सूरज कैसा है? वह हमारी धरती से भी बहुत ज़्यादा बड़ा है। ऐसा है सूरज! और सुनिये, भाइयो, सूरज में से एक टुकड़ा टूट गया है और वह सीधा हमारी ओर आ रहा है। बहुत जल्द ही वह हमारे ऊपर गिर पड़ेगा और हम सबको कुचल डालेगा। बड़ी भयंकर घटना घटेगी! जाइये, जाकर शीशू से पूछ लीजिये।"

सब नजानू की बात पर हंसते क्योंकि सब जानते थे कि नजानू कितना गप्पी है। मगर नजानू जितनी जल्दी उससे हो सका, घर के सब लोगों के पास दौड़कर गया और उनसे चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा :

"भाइयो, बचिये! टुकड़ा गिरने ही वाला है!"

"कैसा टुकड़ा?" लोगों ने उससे पूछा।

"टुकड़ा, भाइयो! सूरज में से एक टुकड़ा टूट गया है। बहुत जल्द ही वह टुकड़ा बड़े धमाके



से गिरेगा और उससे सब दब जायेंगे। आप जानते हैं सूरज कैसा है? वह हमारी पूरी धरती से भी बहुत बड़ा है!"

"तुम यह क्या मनगढ़ंत उड़ा रहे हो!"

"मैं मनगढ़ंत बात नहीं कह रहा। मुझे यह सब शीशू ने बताया है। उसने अपनी दूरबीन से सूरज को देखा है।"

सब आंगन में निकल आये और सूरज की ओर देखने लगे। जब तक उनकी आंखों से आंसू नहीं बहने लगे तब तक वे सूरज को घूरते ही रहे। आंखें चकाचौंध हो जाने के कारण सब लोगों को ऐसा लगा जैसे सचमुच सूरज में से एक टुकड़ा टूट गया है। नजानू तो चीखे ही जा रहा था:

"अगर बच सकते हैं तो बचिये! सर्वनाश होने ही वाला है!"

सब लोगों ने अपनी-अपनी चीज़ें जल्दी-जल्दी बटोरनी शुरू कर दीं। ट्यूबेश ने अपने रंग और बुरुश इकट्ठा किये और बाजाबाज़ ने अपने बाजे: वायोलिन, बलालायका और पीतल का





बिगुल। डाक्टर टिकियावाला अपने घर में इधर-उधर दौड़कर दवाइयों का सफ़री बैग ढूंढ़ने लगे जो पता नहीं उन्होंने कहां रख दिया था। गुलगुले ने अपने बरसाती जूते और छतरी उठा ली और फाटक की ओर दौड़ पड़ा मगर वहां जानू की आवाज़ सुनायी दी। वह कह रहा था :

"भाइयो, शांति से काम लीजिये! डरने की कोई बात नहीं है। आप क्या यह नहीं जानते कि नजानू बड़ा गप्पी है? उसने यह बात खुद ही गढ़ी है।"

"बात खुद गढ़ी है?" नजानू चिल्लाकर बोला, "जाओ, जाकर शीशू से पूछ लो।"

सब लोग दौड़कर शीशू के पास पहुंचे और तब बात साफ़ हुई कि नजानू ने सारी कहानी





खुद ही तैयार कर ली थी। ख़ूब हंसे सब लोग! सब नजानू पर हंस रहे थे और कह रहे थे:

"हमें ताज्जुब है कि हमने तुम पर विश्वास कैसे कर लिया!"

"और मुझे क्या खुद ताज्जुब नहीं है!" नजानू ने जवाब दिया। "मुझे तो अपनी बात पर कितना विश्वास था।"

कैसा अनोखा था यह नजानू!







ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002330-0

# नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

२



## नजानू संगीतकार कैसे बना



रादुगा प्रकाशन · मास्को



# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

२

# नजानू संगीतकार कैसे बना

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन




रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई. रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

**Н. Носов**
КАК НЕЗНАЙКА БЫЛ МУЗЫКАНТОМ
*На языке хинди*

**N. Nosov**
DUNNO TAKES MUSIC LESSONS
*in Hindi*



सोवियत संघ में मुद्रित



अगर नजानू किसी भी काम को करने का बीड़ा उठाता तो उस काम को वह उस तरह नहीं करता जैसा करना चाहिये। उससे हर काम उलटा-पुलटा होता। उसने सिर्फ़ अक्षर जोड़-जोड़कर पढ़ना सीखा और लिखना वह सिर्फ़ बड़े अक्षरों में ही जानता था। बहुत-से लोग यह कहते कि नजानू की खोपड़ी बिलकुल ख़ाली है मगर यह सच बात नहीं है क्योंकि अगर उसकी खोपड़ी बिलकुल ख़ाली होती तो वह सोचता कैसे? इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह कोई भी बात ठीक से नहीं सोचता था। मगर वह अपने जूते पैरों में ही पहनता था, सर पर नहीं, और यह करने के लिए भी समझ होनी चाहिये।

नजानू वैसे बुरा नहीं था। उसकी वड़ी इच्छा थी कि वह कोई चीज़ सीखे मगर वह काम करने से कतराता था। वह चाहता था कि वह हर चीज़ जल्दी से सीख ले, बिना मेहनत किये। मगर यों तो समझदार से समझदार बौने भी कुछ नहीं सीख सकते।

छुटकों और छुटकियों को संगीत से बड़ा प्रेम था और बाजाबाज़ बहुत ही अच्छा संगीतकार था। उसके पास तरह-तरह के बाजे थे और वह उनको अकसर बजाया करता था। सब लोग उसका संगीत सुनते और उसकी बड़ी प्रशंसा करते। नजानू को इससे बहुत





जलन होती कि सब लोग बाजाबाज़ की इतनी प्रशंसा करते हैं, इसलिए उसने बाजाबाज़ से आग्रह किया :

"मुझे भी बाजे बजाने सिखा दो। मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं संगीतकार बनूं।"

"सिखा दूंगा," बाजाबाज़ तैयार होकर बोला। "तुम कौन-सा बाजा बजाना सीखना चाहते हो?"

"किस बाजे को बजाना सीखना सबसे आसान है?"

"बलालायका को।"







"लाओ तो बलालायका ही मुझे दो। मैं उसे ही बजाने की कोशिश करता हूं।"

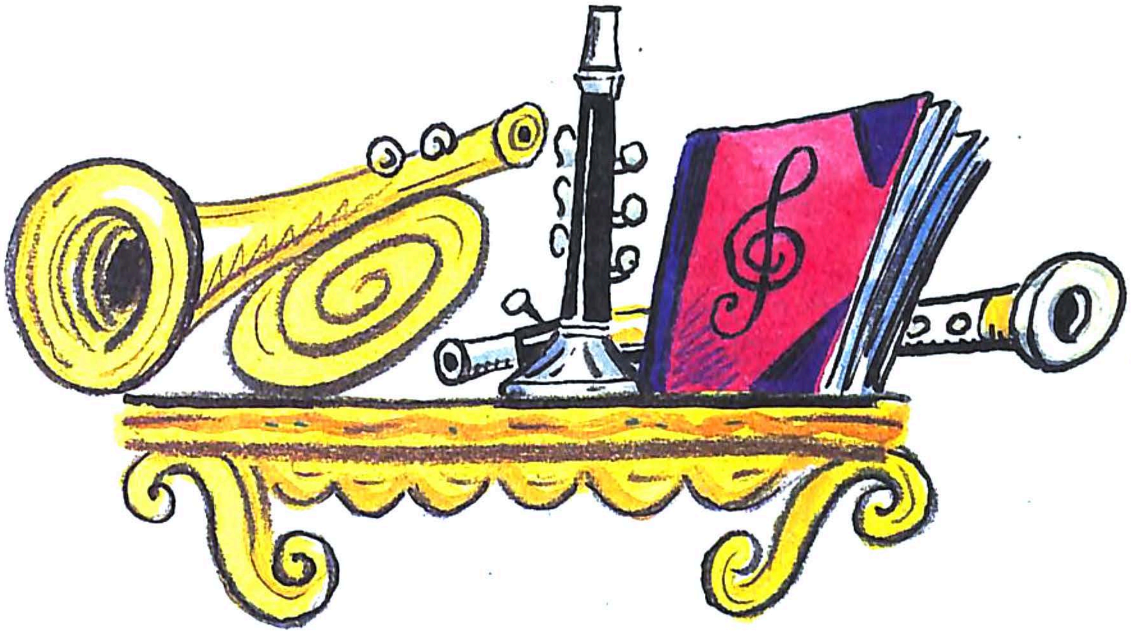
बाजाबाज़ ने नजानू को बलालायका दे दिया। नजानू ने उसके तार झनझनाये और फिर बोला:

"नहीं, बलालायका की आवाज़ तो बहुत हल्की है। मुझे कोई दूसरा ख़ूब ज़ोर से बजनेवाला बाजा दो।"

बाजाबाज़ ने उसे वायोलिन पकड़ा दिया। नजानू ने गज़ से वायोलिन के तारों को छेड़ा और बोला:







"इससे भी ज़्यादा ज़ोर से बजनेवाला कोई दूसरा बाजा नहीं है?"

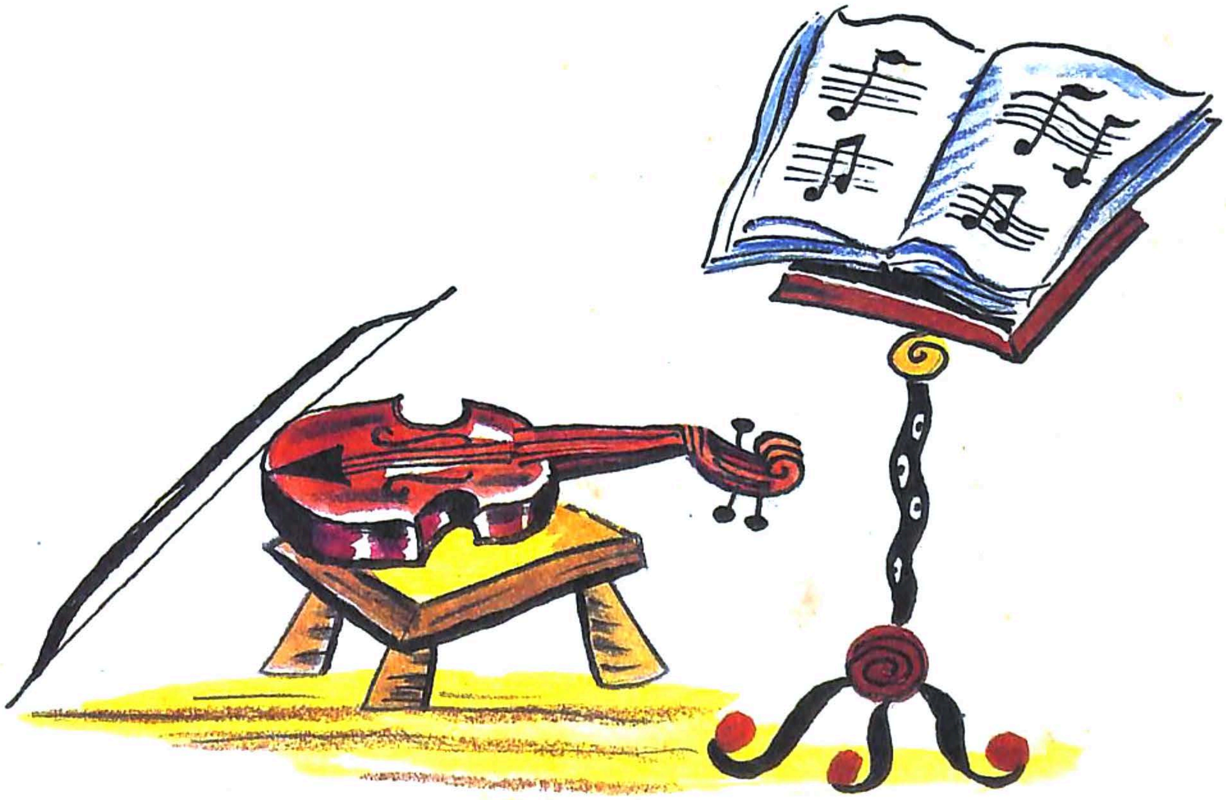
"बिगुल है," बाजाबाज़ ने जवाब दिया।

"लाओ, वही दो। ज़रा उसको बजाने की कोशिश करता हूं।"

बाजाबाज़ ने नजानू को एक बड़ा-सा पीतल का बिगुल थमा दिया। जब नजानू उसमें फूंकता तो बिगुल में से बड़ी ज़ोर की आवाज़ निकलती।

"यह है अच्छा बाजा," नजानू ने प्रसन्न होकर कहा। "ख़ूब ज़ोर से बजता है।"

"अगर तुम्हें बिगुल ही पसंद है तो तुम इसे ही बजाना सीख लो," बाजाबाज़ ने सहमत होकर कहा।





"मुझे सीखने की क्या आवश्यकता है? मैं तो बिना सीखे ही इसे बजा सकता हूं," नजानू ने जवाब दिया।

"ऐसा नहीं है। तुम अभी बिगुल बजाना नहीं जानते।"

"जानता हूं। ख़ूब बजाना जानता हूं! लो, सुनो!" नजानू ज़ोर से बोला और अपनी पूरी ताक़त से बिगुल में फूंकने लगा:

"बूं-बूं-बूं! टें-टें-टें!"

"तुम तो ख़ाली आवाज़ें निकाल रहे हो, बिगुल नहीं बजा रहे," बाजाबाज़ ने कहा।

"कैसे नहीं बजा रहा हूं?" नजानू ने बुरा मानकर कहा। "मैं तो बहुत अच्छा बजा रहा हूं! बड़े ज़ोर से!"

"ओह, बुद्धू कहीं के! बिगुल बजाने का मतलब यह नहीं है कि उससे ऊंची आवाज़ निकले, बल्कि उसे बजाने का मतलब है कि उससे सुंदर संगीत पैदा हो।"

"मेरे ख़्याल में तो मैं बहुत सुंदर संगीत पैदा कर रहा हूं।"

"जैसे तुम बजा रहे हो वह बिलकुल सुरीला नहीं है," बाजाबाज़ ने कहा। "मैं देख रहा हूं कि तुम्हें संगीत की ज़रा भी समझ नहीं है।"

"तुम्हें संगीत की समझ नहीं है," नजानू ने नाराज़ होकर कहा, "तुम मुझसे जलते हो, इसलिए ऐसा कह रहे हो। तुम चाहते हो कि लोग सिर्फ़ तुम्हारा ही संगीत सुनें और तुम्हारी ही प्रशंसा करें।"

"ऐसा कुछ भी नहीं है," बाजाबाज़ बोला। "यह बिगुल तुम अपने साथ ले जाओ और इसको जितना जी चाहे बजाओ, अगर तुम्हारा यही ख़्याल है कि इसको बजाना सीखने की कोई आवश्यकता नहीं है। लोग अगर तुम्हारी प्रशंसा करें तो इससे मुझे क्या।"

"मैं तो बिगुल अवश्य बजाऊंगा," नजानू ने जवाब दिया।





वह बिगुल में ज़ोर से फूंक मारता मगर उसे बिगुल को सही तरीक़े से बजाना बिलकुल नहीं आता था – बिगुल कभी गूंजता, कभी भर्राता, कभी कराहता तो कभी हुंकारता। बाजाबाज़ बहुत देर तक यह सब सुनता रहा और अंत में वह तंग आ गया। उसने अपना मख़मल का कोट पहना, अपने गले में टाई की जगह गुलाबी रंग की बो बांधी और किसी के घर चला गया।

शाम को जब सब छुटके घर में इकट्ठे हुए तब नजानू ने फिर अपना बिगुल उठाया और उसमें फूंकने लगा।

"बूं-बूं-बूं-ऊं। टूं-टूं-टूं-ऊं!"

"यह कैसा शोर है?" सब चिल्लाये।

"यह शोर नहीं है," नजानू ने उत्तर दिया। "मैं तो बिगुल बजा रहा हूं।"

"तुरन्त बन्द करो!" जानू चिल्लाया। "तुम्हारा संगीत सुनकर तो कानों में दर्द होने लगता है।"

"यह इसलिए कि तुम्हें अभी मेरा संगीत सुनने की आदत नहीं पड़ी है। जब आदत हो जायेगी तो कानों में दर्द नहीं होगा।"

"मैं तुम्हारा संगीत सुनने की आदत नहीं डालना चाहता। मुझे क्या पड़ी है!"

मगर नजानू ने जानू की बात नहीं सुनी और बिगुल बजाता ही रहा।

"बूं-बूं-बूं! खरर-खरर-खरर! खर-र-र! बिऊं-बिऊं!"





"बिगुल बजाना बन्द करो!" नजानू पर सब छुटकों ने हमला बोल दिया। "अपने इस रद्दी बिगुल को अपने साथ लेकर यहां से चले जाओ!"

"कहां चला जाऊं?"

"किसी मैदान में चले जाओ और वहां जाकर बिगुल बजाओ।"

"मैदान में तो मेरा बिगुल बजाना कोई नहीं सुनेगा।"

"क्या तुम्हारे लिए यह बहुत आवश्यक है कि कोई तुम्हें बिगुल बजाते हुए सुने?"

"अवश्य।"

"तो सड़क पर जाकर बजाओ। वहां से पड़ोसियों को तुम्हारा बिगुल बजाना सुनायी देगा।"

नजानू सड़क पर निकल आया और पासवाले घर के निकट उसने बिगुल बजाना फिर आरम्भ कर दिया, मगर पड़ोसियों ने भी उसे अपनी खिड़कियों के नीचे शोर मचाने से मना किया। तब नजानू दूसरे घर के पास गया, मगर उसको वहां से भी भगा दिया गया। वह तीसरे घर के पास पहुंचा और वहां भी लोगों ने उससे अपना रास्ता लेने के लिए कहा। तब नजानू ने यह फ़ैसला किया कि वह उन सब को चिढ़ाने के लिए बिगुल



बजाता ही रहेगा। पड़ोसियों को उस पर बड़ा ग़ुस्सा आया। वे अपने घर से निकलकर नजानू की ओर लपके। नजानू जान बचाने के लिए अपना बिगुल लेकर वहां से बमुश्किल भाग पाया।

तब से आज तक नजानू ने बिगुल बजाना बन्द कर रखा है।

"मेरा संगीत किसी की समझ में नहीं आता," वह बोला। "अभी तक लोगों का स्तर मेरे संगीत को समझने लायक़ नहीं हुआ। जब ये लोग लायक़ हो जायेंगे तो स्वयं मुझसे बिगुल बजाने को कहेंगे। मगर तब बहुत देर हो चुकी होगी। मैं तब बिगुल नहीं बजाऊंगा।"









ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002331-9

नजानू की कहानियां

3

निकोलाई नोसोव



# नजानू चित्रकार कैसे बना



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

3

# नजानू चित्रकार कैसे बना

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन




रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001


6





ट्यूबेश बहुत अच्छा चित्रकार था। वह हमेशा एक लम्बा ब्लाऊज़ पहनता था जिसको वह "ओवर-ऑल" कहता था। ट्यूबेश जब अपना ओवर-ऑल पहनकर, लम्बे बालों को पीछे करके हाथों में रंगपट्टिका लेकर चित्रफलक के सामने खड़ा होता तो देखने में बहुत अच्छा लगता था। सब लोग एकदम समझ जाते थे कि उनके सामने एक सच्चा चित्रकार खड़ा है।

उस घटना के बाद, जब किसी को नजानू का संगीत सुनना पसंद नहीं आया, नजानू ने निश्चय किया कि वह चित्रकार बनेगा। वह ट्यूबेश के पास पहुंचा और बोला:

"सुनो ट्यूबेश, मैंने भी यह निश्चय किया है कि मैं चित्रकार बनूंगा। मुझे कुछ रंग और एक बुरुश दे दो।"

ट्यूबेश कंजूस नहीं था। उसने नजानू को अपने पुराने रंग और बुरुश भेंट कर दिये। उसी समय नजानू के पास उसका एक मित्र आया जिसका नाम था चिथड़िया। नजानू उससे बोला:

"बैठो चिथड़िया, मैं अभी तुम्हारा चित्र बनाता हूं।"

चिथड़िया बहुत प्रसन्न हुआ और जल्दी से एक कुरसी पर बैठ गया। नजानू ने उसका चित्र बनाना आरम्भ कर दिया। नजानू की इच्छा थी कि वह चिथड़िये का ऐसा



चित्र बनाये जिसमें उसका मित्र बहुत ही ख़ूबसूरत नज़र आये। इसलिए नजानू ने चिथड़िये के चित्र में नाक लाल रंग से बनाया है, कान हरे रंग से, होंट नीले और आंखें नारंगी रंग से। चिथड़िया अपना चित्र तुरन्त देखना चाहता था। उसमें ज़रा भी धैर्य नहीं था। वह कुरसी पर चैन से नहीं बैठ पा रहा था और सारे समय कभी इधर मुड़ता कभी उधर मुड़ता रहता।

"हिलो-डुलो नहीं," नजानू ने उससे कहा, "नहीं तो तुम्हारा चित्र तुम्हारी सूरत जैसा नहीं बन पायेगा।"

"अब क्या चित्र मेरी सूरत से मिलता-जुलता बन रहा है?" चिथड़िया ने पूछा।

"हू-ब-हू तुम्हारी सूरत जैसा," नजानू ने उत्तर दिया और चित्र में बैंगनी रंग की मूंछें बना डालीं।

"मुझे दिखाओ तो चित्र कैसा बना है।" जब नजानू ने चित्र बनाना समाप्त किया तो चिथड़िया ने आग्रह किया।

नजानू ने चिथड़िया को उसका चित्र दिखाया।

"क्या मैं ऐसा हूं?" चिथड़िया डरकर चिल्लाया।

"और क्या, ऐसे ही तो हो। और कैसे हो सकते हो?"





"तुमने चित्र में मूंछें क्यों बनायीं? मेरी तो मूंछें हैं ही नहीं!"

"अरे, कभी न कभी तो निकल आयेंगी।"

"और नाक लाल क्यों है?"

"नाक को लाल मैंने इसलिए बनाया कि वह और सुंदर नज़र आये।"

"और बाल आसमानी रंग के क्यों हैं? क्या मेरे बाल आसमानी रंग के हैं?"

"हां, आसमानी रंग के हैं," नजानू ने उत्तर दिया। "लेकिन अगर तुम्हें आसमानी रंग के बाल पसंद नहीं हैं तो मैं उनको हरा भी बना सकता हूं।"

"नहीं, यह तो बहुत ही ख़राब चित्र है," चिथड़िया बोला। "इसे मुझे दे दो। मैं इसको फाड़ देता हूं।"

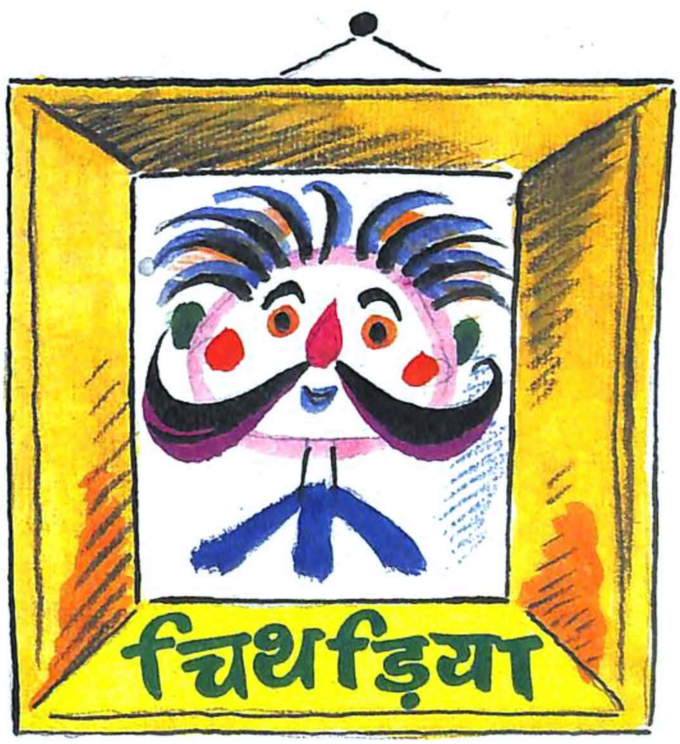
"इतनी कलात्मक रचना को नष्ट करने की क्या आवश्यकता है?" उत्तर में नजानू ने कहा।

चिथड़िया चित्र को झपट लेना चाहता था और इसपर उसमें और नजानू में झगड़ा होने लगा। शोर सुनकर जानू, डाक्टर टिकियावाला और बाक़ी छुटके दौड़कर वहां आये।

सब ने पूछा, "तुम दोनों लड़ क्यों रहे हो?"

"लीजिये," चिथड़िया चिल्लाया, "अब आप ही फ़ैसला कीजिये। आप बताइये यह चित्र किसका है? यह सही है न, कि यह मेरा चित्र नहीं है?"

"सही है, यह तुम्हारा चित्र नहीं है," छुटकों ने जवाब दिया। "इसमें तो कौओं को डराने के लिए बाग़ में लगाया जानेवाला पुतला बनाया गया है।"




गोलीबाज़
बड़बड़िया
गुलगुला
पेंचू

इस पर नजानू बोला:

"आप ठीक से नहीं बूझ पाये क्योंकि इस चित्र पर उसका नाम नहीं लिखा है। मैं अभी इस पर नाम लिख देता हूं तब आप सब लोग समझ जायेंगे कि यह किसका चित्र है।"

नजानू ने पेंसिल उठायी और चित्र के नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया: "चिथड़िया"। इसके बाद उसने चित्र को दीवार पर टांग दिया और बोला:

"चित्र दीवार पर टंगा रहे। सब इसको देख सकते हैं। किसी को मनाही नहीं है।"

"फिर भी," चिथड़िया बोला, "जब तुम सो जाओगे तो मैं आऊंगा और इस चित्र को फाड़कर फेंक दूंगा।"

"मैं रात भर सोऊंगा ही नहीं और पहरा दूंगा," नजानू ने उत्तर दिया।

चिथड़िया बहुत चिढ़ गया और घर लौट गया। नजानू सचमुच रात भर नहीं सोया।

जब सब की आंख लग गयी तब नजानू ने अपने रंग और बुरुश उठाये और सारे के सारे छुटकों के चित्र बनाने में जुट गया। गुलगुले को उसने ख़ूब मोटा बनाया, इतना मोटा कि चित्र में उसका शरीर बनाने के लिए जगह कम पड़ गयी। जल्दबाज़ के चित्र





में नजानू ने उसके पैर बहुत ही पतले-पतले बनाये और उसके शरीर के पिछले हिस्से पर पता नहीं क्यों कुत्ते जैसी दुम बना दी। शिकारी गोलीबाज़ को नजानू ने उसके कुत्ते गुर्रा पर सवारी करते हुए चित्रित किया। डाक्टर टिकियावाला की नाक के स्थान पर उसने थर्मामीटर बनाया। जानू के कान पता नहीं किस कारण गधे जैसे बना दिये। मतलब यह कि सबके चित्र उसने ऐसे बनाये कि उनको देखकर हंसी आती थी और सब ही चित्र बहुत बेतुके थे।

सुबह उसने ये सब चित्र दीवार पर टांग दिये और सब चित्रों के नीचे उसने सबों के नाम लिख दिये। इस प्रकार चित्रों की एक प्रदर्शनी लग गयी।

सवेरे सबसे पहले डाक्टर टिकियावाला जागे। उन्होंने दीवार पर टंगे चित्रों को देखा और ख़ूब हंसे। उनको सब चित्र इतने पसंद आये कि उन्होंने अपनी नाक पर बग़ैर कमानीवाली ऐनक चढ़ाकर उनको बहुत ध्यान से देखा। वह हर एक चित्र के पास गये और बड़ी देर तक हंसते रहे।

"शाबाश, नजानू!" डाक्टर टिकियावाला ने कहा। "मैं अपने जीवन में इतना कभी नहीं हंसा!"

अंत में वह अपने चित्र के पास जाकर खड़े हो गये और उन्होंने बड़ी सख़्त आवाज़ में पूछा:

"और यह कौन है? शायद यह मेरा चित्र है? नहीं, मैं ऐसा तो नहीं हूं। यह तो बहुत ख़राब चित्र है। अच्छा होगा अगर तुम इसको यहां से उतार लो।"

"क्यों उतार लूं? यह तो ऐसे ही टंगा रहे," नजानू ने जवाब दिया।

डाक्टर टिकियावाला बुरा मान गये और बोले:

"मैं देख रहा हूं, नजानू, कि तुम बीमार हो। शायद तुम्हारी आंखें कुछ ख़राब हो गयी हैं। तुमने यह कब देखा कि मेरी नाक की जगह पर थर्मामीटर है? तुम्हें रात को अंडी का तेल पीने की आवश्यकता है।"

नजानू को अंडी का तेल बिलकुल पसंद नहीं था। वह डर गया और बोला:

"नहीं, नहीं! अब मैं स्वयं देखता हूं कि यह चित्र बहुत ख़राब बना है।"

उसने डाक्टर टिकियावाला का चित्र उतार लिया और उसको फाड़ डाला।

डाक्टर टिकियावाला के बाद शिकारी गोलीबाज़ जागा। उसको भी चित्र बहुत पसंद आये। उनको देखकर हंसते-हंसते उसका दम फूल गया। मगर जब अंत में उसने




ट्यूबेश



अपना चित्र देखा तो उसका पारा फ़ौरन चढ़ गया।

"यह तो बहुत बुरा चित्र है," शिकारी ने कहा। "मेरी सूरत से तो यह बिलकुल नहीं मिलता। तुम इसको उतार लो, नहीं तो मैं तुम्हें अपने साथ शिकार पर कभी नहीं ले जाऊंगा।"

नजानू को दीवार पर से शिकारी गोलीबाज़ का चित्र भी उतारना पड़ा।

ऐसा ही सब चित्रों के साथ हुआ। सबको औरों के चित्र तो बहुत पसंद आते, पर अपने नहीं।

सबसे बाद में ट्यूबेश उठा। वह सबसे ज़्यादा देर तक सोता रहता था। जब





उसने अपना चित्र दीवार पर टंगा हुआ देखा तो वह बहुत नाराज़ हुआ और बोला कि वह चित्र नहीं है। वह तो किसी अनाड़ी की बनाई हुई तस्वीर है जो कला में कोई स्थान प्राप्त नहीं कर सकती। यह कहने के बाद ट्यूबेश ने चित्र दीवार से उतारकर फाड़ फेंका और नजानू से अपने रंग और बुरुश वापस ले लिये।

दीवार पर अब सिर्फ़ एक चित्र टंगा था – चिथड़िया का चित्र। नजानू ने उसे उतारा और अपने मित्र के पास गया।

"चिथड़िया, अगर तुम चाहो तो यह चित्र मैं तुम्हें भेंट कर सकता हूं। तुम इसको ले लो और मुझसे मेल कर लो," नजानू ने कहा।

चिथड़िया ने चित्र ले लिया और उसको फाड़कर चिन्दी-चिन्दी कर दिया और बोला :

"ठीक है, अब हममें सुलह हो गयी। लेकिन अगर तुम फिर कभी मेरा चित्र बनाओगे तो मैं किसी भी शर्त पर तुमसे मेल नहीं करूंगा।"

"अब मैं चित्रकारी कभी नहीं करूंगा," नजानू ने उत्तर दिया। "चित्र बनाते जाओ, बनाते जाओ, फिर भी कोई उसके लिए धन्यवाद नहीं देता, सब नाराज़ ही हो जाते हैं। मैं चित्रकार बनना नहीं चाहता।"

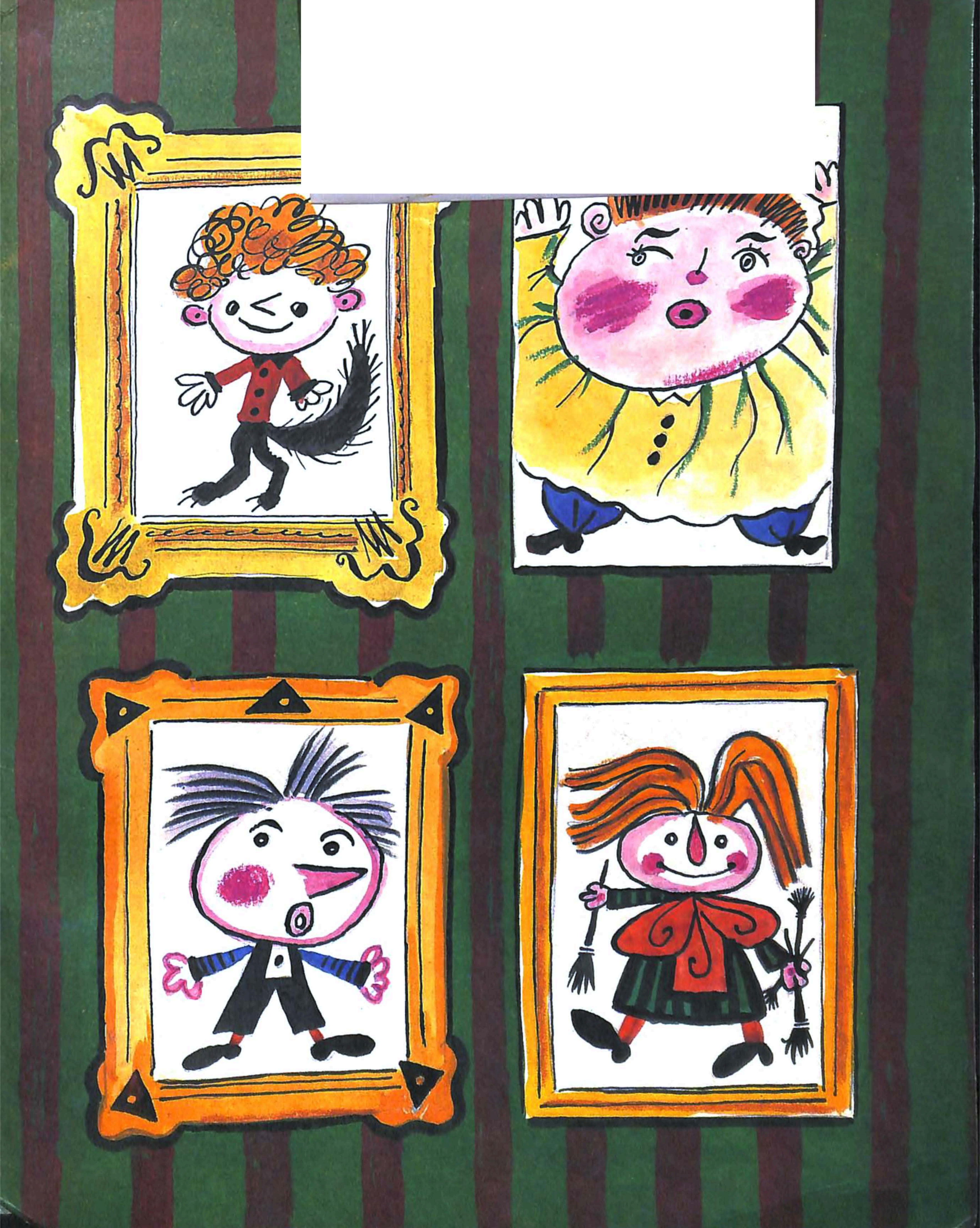


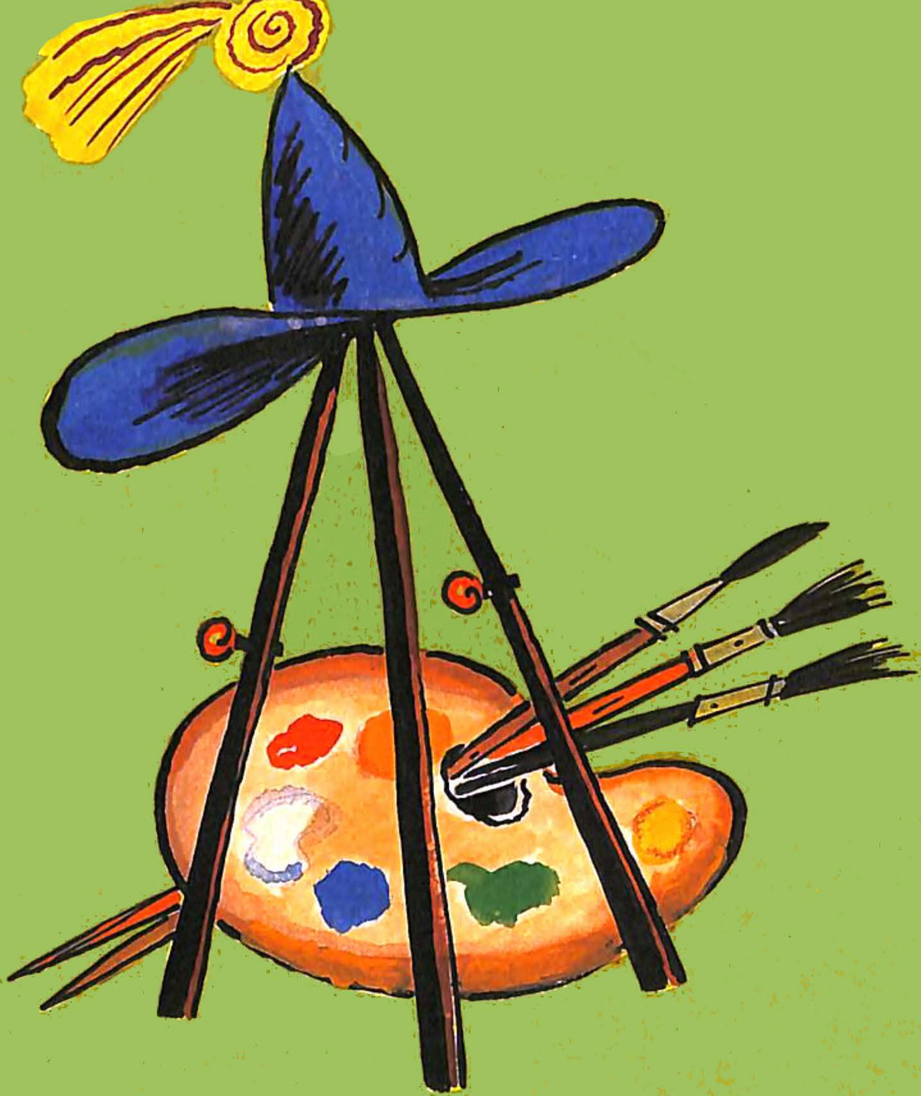
**Н. Носов**
КАК НЕЗНАЙКА БЫЛ ХУДОЖНИКОМ
*на языке хинди*

**N. Nosov**
HOW DUNNO BECAME AN ARTIST
*in Hindi*

सोवियत संघ में मुद्रित







ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002332-7

# नजानू की कहानियां

४

निकोलाई नोसोव



# नजानू कवि कैसे बना



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नज़ानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

४

# नज़ानू कवि कैसे बना

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन




रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





चित्रकार बनने में असफल रहने के बाद नजानू ने ठानी कि वह कवि बनेगा और कविताओं की रचना करेगा। उसकी जान-पहचान एक कवि से थी जो डैंडेलियनवाली गली में रहता था। इस कवि का असली नाम पंसेरिया था मगर, जैसा कि सभी जानते हैं, सारे कवि चाहते हैं कि उनका नाम ख़ूबसूरत सा हो। इसीलिए जब पंसेरिया कविताएं लिखने लगा तो उसने अपने लिए एक दूसरा नाम चुन लिया और वह गुलदस्ता के नाम से जाना जाने लगा।

एक दिन नजानू गुलदस्ता के पास आया और उसने कहा: "गुलदस्ता, सुनो, तुम मुझे कविता रचना सिखा दो। मैं भी कवि बनना चाहता हूं।"

"तुममें कविता रचने की प्रतिभा है?" गुलदस्ता ने पूछा।

"है कैसे नहीं। मैं बहुत प्रतिभाशाली हूं," नजानू ने उत्तर दिया।

"इसकी परख करना आवश्यक है," गुलदस्ता ने कहा। "तुम जानते हो तुक क्या होता है?"

"तुक? नहीं, मैं तो नहीं जानता।"

"तुक उसको कहते हैं जब दो शब्दों का अंत एक ही प्रकार होता है," गुलदस्ता ने समझाया, "जैसे चिड़िया-गुड़िया, घोड़ा-थोड़ा, समझे?"

"हां, समझ गया।"

"अच्छा 'छड़ी' शब्द का तुक बताओ।"

"'झाड़ी'," नजानू ने जवाब दिया।

"यह कैसा तुक है: छड़ी-झाड़ी? इन शब्दों से तुक नहीं बनता।"

"क्यों नहीं? इनका अंत तो एक़ ही प्रकार होता है।"

"मगर इतना ही काफ़ी नहीं है," गुलदस्ता ने कहा, "यह आवश्यक है कि शब्द







एक ही प्रकार के हों और कविता का जोड़ बैठ सके। लो सुनो : छड़ी-घड़ी, भट्टी-खट्टी, किताब-हिसाब।"

"समझ गया, समझ गया!" नजानू चिल्लाया, "छड़ी-घड़ी, भट्टी-खट्टी, किताब-हिसाब। शाबाश! हा-हा-हा!"

"अच्छा अब 'झोंटा' शब्द का तुक बताओ," गुलदस्ता ने कहा।

"'ठोंटा'" नजानू ने जवाब दिया।

"'ठोंटा' क्या?" गुलदस्ता ने ताज्जुब से पूछा, "ऐसा भी कोई शब्द है?"

"है क्यों नहीं?"

"बिल्कुल नहीं है।"

"अच्छा तो फिर 'उलठोंटा'।"

"यह 'उलठोंटा' क्या चीज़ है?" गुलदस्ता ने फिर ताज्जुब से पूछा।

"जब उलटी हो जाती है तो उसमें जो निकलता है वह 'उलठोंटा'," नजानू ने समझाया।

"तुम हवाई उड़ा रहे हो," गुलदस्ता बोला, "इस प्रकार का कोई शब्द नहीं है। ऐसा शब्द चुनना चाहिये जो इस्तेमाल होता है। ऐसा नहीं जो स्वयं गढ़ लिया हो।"

"और अगर मुझे इस्तेमाल में लाया जानेवाला शब्द न मिल सके तो?"

"इसका मतलब यह है कि तुममें कविता रचने की प्रतिभा नहीं है।"

"तो तुम स्वयं बताओ इस शब्द के तुक," नजानू ने उत्तर दिया।

"अभी लो," गुलदस्ता राज़ी हो गया।

वह कमरे के बीचों-बीच खड़ा हो गया। उसने अपने हाथ छाती पर रखे और सर एक तरफ़ झुकाकर सोचने लगा। फिर उसने अपना सर ऊपर उठाया और छत की ओर ताकते हुए फिर सोचने लगा। इसके बाद उसने अपनी ठोड़ी हाथ से पकड़ ली और फ़र्श





की ओर टकटकी बांधे फिर सोचने लगा और अपने आप धीरे-धीरे बुदबुदाने लगा :

"'झोंटा', 'कोंटा', 'खोंटा', 'गोंटा', 'योंटा', 'रोंटा ...' " वह बहुत देर तक यों ही बड़बड़ाता रहा और फिर बोला : "उफ़! इस शब्द को क्या हो गया? यह कैसा शब्द है, जिसका कोई तुक ही नहीं है!"

"देखा न!" नजानू ने प्रसन्न होकर कहा। "ख़ुद ही ऐसा शब्द दिया जिसका कोई तुक ही नहीं है और उस पर कहते हो कि मुझमें कविता रचने की प्रतिभा नहीं है।"

"है प्रतिभा, बस, रहने दो!" गुलदस्ता ने कहा। "मेरा तो सर दर्द करने लगा। इस तरह कविताओं की रचना करो कि उनमें कोई विचार हो और तुक भी। बस तुम्हारी कविता तैयार।"

"मतलब, यह तो बहुत आसान है?" नजानू ने ताज्जुब से कहा।

"बिल्कुल, बहुत आसान है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रचना से प्रतिभा का पता चले।"

नजानू घर चला गया और फ़ौरन कविता रचने लगा। सारे दिन वह कमरे में टहलता रहा। अपनी ठोड़ी को हाथ में पकड़े कभी वह फ़र्श को ताकता कभी छत को और अपने आप से कुछ बड़बड़ाता जाता।

अंत में कविताएं तैयार हो गयीं और वह बोला :

"भाइयो, सुनो मैंने कुछ कविताएं रची हैं।"

"अच्छा! ये कविताएं किसके बारे में हैं?" सबने जानना चाहा।

"ये कविताएं तुम लोगों के बारे में हैं," नजानू ने स्वीकार किया, "लो, सबसे पहली कविता जानू के बारे में :

"जानू गया टहलने नदी के तट पर,
जाते-जाते कूद गया भेड़ के ऊपर।"

"क्यों?" जानू चिल्लाया, "मैं भेड़ के ऊपर कब कूदा?"

"अरे, ऐसा तो सिर्फ़ कविता में हुआ, तुक मिलाने के लिए," नजानू ने समझाया।

"यानी तुक मिलाने के लिए तुम मेरे बारे में ऐसी झूठी बात कहोगे?" जानू ने आगबबूला होकर कहा।

"और क्या," नजानू ने उत्तर दिया, "मुझे सच्ची बात कहने की क्या पड़ी है? जो सच है वह तो है ही।"

"ठीक है! ज़रा फिर तो ऐसा करके देखो तब पता चलेगा!" जानू ने धमकी दी। "अच्छा, आगे देखें तुमने औरों के बारे में क्या कहा है?"

"लो जल्दबाज़ के बारे में सुनो," नजानू बोला:





"जल्दबाज़ को भूख लगी,
निगल गया इस्तरी ठंडी।"

"भाइयो", जल्दबाज़ चिल्लाया, "यह मेरे बारे में इसने क्या लिखा है? मैंने ठंडी इस्तरी नहीं निगली।"

"हां, हां, मगर तुम चिल्लाओ नहीं," नजानू ने उत्तर दिया, "यह तो मैंने तुक मिलाने के लिए कहा है कि तुमने ठंडी इस्तरी निगल ली।"

"मगर मैंने तो किसी प्रकार की इस्तरी नहीं निगली, न गरम, न ठंडी," जल्दबाज़ चिल्लाया।



"मैं तो यह नहीं कह रहा हूं कि तुमने गरम इस्तरी निगल ली। शांत हो जाओ," नजानू ने उत्तर दिया। "अब सुनो एक कविता कदाचित् के बारे में:

"कदाचित् के तकिये के नीचे देखो,
पड़ा मीठा पनीर का टुकड़ा देखो।"

कदाचित् अपने पलंग के पास गया। उसने तकिये को उठाकर उसके नीचे देखा और कहा:





"झूठ! यहां कोई भी पनीर का टुकड़ा नहीं है।"

"तुम कविता के बारे में कुछ भी नहीं समझते," नजानू ने जवाब दिया, "ऐसा सिर्फ़ तुक मिलाने के लिए कहा गया है कि पनीर का टुकड़ा तकिये के नीचे पड़ा है। असल में थोड़े ही पड़ा है। मैंने डाक्टर टिकियावाला के बारे में भी कविता लिखी है।"

"भाइयो," डाक्टर टिकियावाला चिल्लाये, "इस बकवास को बन्द करना चाहिये। क्या हम चुपचाप यह सब सुनते जायेंगे जो झूठ यह सबके बारे में बघार रहा है?"

"बहुत हो गया!" सब चिल्लाये, "हम और सुनना नहीं चाहते। यह कविता नहीं है। यह तो हमें चिढ़ाना है।"

सिर्फ़ जानू, जल्दबाज़ और कदाचित् ने चिल्लाकर कहा, "पढ़ने दो! जैसे उसने हमारे बारे में कविताएं पढ़ीं, उसी तरह वह और लोगों के बारे में भी पढ़ेगा।"

"हमें नहीं चाहिये। हम नहीं सुनेंगे," दूसरे लोग चिल्लाये।



"अगर तुम लोग सुनना नहीं चाहते हो तो मैं जाकर पड़ोसियों को सुनाऊंगा," नजानू ने कहा।

"क्यों?" सब चीख़े, "तुम अब पड़ोसियों के सामने हमें शर्मिंदा करोगे? ज़रा कोशिश करके तो देखो! हो सकता है उसके बाद तुम घर ही न लौट सको।"

"अच्छा, तो ठीक है, भाइयो, नहीं पढ़ूंगा," नजानू ने सब की बात मान ली। "सिर्फ़ तुम लोग मुझ पर नाराज़ न हो।"

तब से नजानू ने फ़ैसला किया कि वह और कविताएं नहीं रचेगा।



СТИХИ

*На хинди*

N. Nosov

*HOW DUNNO BECAME A POET*

In Hindi





H $\frac{4803010102-039}{031(05)-85}$ 367-85

सोवियत संघ में मुद्रित





अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं:

**नजानू ने गैस की मोटर को कैसे चलाया**

**जानू ने उड़न-गुब्बारा कैसे बनाया**

ISBN 5-05-000408-x

# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव



५



# नजानू ने गैस की मोटर कैसे चलायी

रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव ५

# नजानू ने गैस की मोटर कैसे चलायी


अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन





रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई. रानी भांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





मिस्त्री मोड़ू और उसका मददगार पेंचू बहुत अच्छे कारीगर थे। वे एक-दूसरे से काफ़ी मिलते-जुलते थे। बस, पेंचू क़द में कुछ लम्बा था और पेंचू क़द में थोड़ा छोटा। दोनों चमड़े की जैकट पहनते थे। उनकी जैकट की जेबों में हमेशा ढिबरी कसने के रिंच, चिमटियां, रेतियां और दूसरे लोहे के औज़ार भरे रहते थे। अगर जैकट चमड़े की न होती तो जेबें कब की फट गयी होतीं। उनकी टोपी भी चमड़े की थी जिसपर मिस्त्रियों के काम करने वाली ऐनक चढ़ी रहती थी। इस ऐनक को वे काम करते समय लगाते थे ताकि उनकी आंखों में धूल या बुरादा न जाये।

मोड़ू और पेंचू दिन-दिन भर अपने कारख़ाने में बैठे काम करते रहते थे और स्टोव, केतलियां, कढ़ाइयां मरम्मत करते रहते थे और जब मरम्मत करने के लिए कुछ भी नहीं होता तो वे छुटकों के लिए साइकिलें और ठेले बनाते थे।

एक बार मोड़ू और पेंचू किसी से कुछ कहे बिना अपने कारख़ाने में बन्द होकर



कोई चीज़ बनाने लगे। पूरे महीने वे आरी चलाते रहे, रन्दा फेरते रहे, कीलें ठोंकते रहे, झाल लगाते रहे। उन्होंने किसी को अपना कुछ भी काम नहीं दिखाया। जब महीना बीत गया तब पता चला कि उन्होंने एक मोटरगाड़ी बनायी है।

यह मोटरगाड़ी शरबत मिले हुए सोडा-पानी से चलती थी। मोटरगाड़ी के बीचों-बीच ड्राइवर की सीट थी और उसके ठीक सामने सोडा-पानी की टंकी लगी थी। इस टंकी की गैस एक नली से होकर तांबे के सिलिंडर में जाती थी और लोहे के पिस्टन को ढकेलती थी। लोहे का पिस्टन गैस के दबाव से कभी ऊपर जाता था कभी नीचे जाता था और पहियों को घुमाता था। ड्राइवर की सीट के ऊपर एक शरबत की बोतल लगी थी। शरबत नली से होकर टंकी में आता था और यंत्र-रचना में ग्रीस का काम देता था।

इस तरह की गैस की मोटरगाड़ी का इस्तेमाल छुटकों में आम हो गया था। मगर इस मोटरगाड़ी में, जिसे मोड़ और पेंचू ने बनाया था, एक बहुत ही अनोखा सुधार था: टंकी के एक ओर बहुत ही मुलायम रबड़ की एक नली लगी थी, जिसमें एक टोंटी लगी





थी, जिससे सैर के दौरान गाड़ी रोके बिना सोडा-पानी पिया जा सकता था।

जल्दबाज़ ने यह गाड़ी चलाना सीख लिया और जो भी उसमें बैठकर घूमना चाहता जल्दबाज़ उसे घुमा देता। वह किसी को मना नहीं करता था।

शरबतिया गाड़ी पर सैर करने को सबसे ज़्यादा पसंद करता था क्योंकि सैर के दौरान वह जितनी बार चाहता शरबत मिला सोडा-पानी पी सकता था। नजानू को भी गाड़ी में बैठकर सैर करने का शौक़ था और जल्दबाज़ उसको अकसर गाड़ी में घुमाता था। मगर नजानू ख़ुद भी गाड़ी चलाना सीखना चाहता था और इसलिए उसने जल्दबाज़ से कहा :

"मुझको मोटर चलानेवाला चक्का संभालने दो। मैं भी गाड़ी चलाना सीखना चाहता हूं।"

"तुम नहीं चला सकते," जल्दबाज़ ने कहा, "यह मोटर है, इसे अच्छी तरह समझना पड़ता है।"



"इसमें समझने की क्या बात है!" नजानू ने उत्तर दिया। "मैंने तो तुम्हें चलाते देखा है। कुछ डंडे इधर-उधर खींचो और स्टीयरिंग के पहिये को घुमाते रहो। बिल्कुल आसान है।"

"लगता बहुत आसान है, मगर असल में यह बहुत कठिन काम है। तुम ख़ुद तो मरोगे ही, गाड़ी भी तोड़-फोड़ डालोगे।"

"अच्छी बात है, जल्दबाज़!" नजानू ने बुरा मानकर कहा, "तुम भी मुझसे कोई चीज़ मांगोगे, मैं भी नहीं दूंगा।"

एक दिन जब जल्दबाज़ घर पर नहीं था तो नजानू गाड़ी में, जो अहाते में खड़ी थी, घुस गया। वह लीवर खींचने और पैडलों को दबाने लगा। पहले तो कुछ भी नहीं हुआ, मगर अचानक मोटर स्टार्ट हो गयी और चल दी। छुटकों ने यह सब अपनी खिड़कियों में से देखा और घर के बाहर भाग आये।

"क्या कर रहे हो," वे चिल्लाये, "टकरा जाओगे!"



"नहीं टकराऊंगा," नजानू ने जवाब दिया और उसी समय गाड़ी कुत्ते के घर की ओर बढ़ी। कुत्ते का घर आहाते के बीचों-बीच बना हुआ था।

धड़-धड़! कुत्ते का घर टुकड़े-टुकड़े हो गया। वह तो कहो अच्छा हुआ कि गुर्रा घर में से बाहर कूद आया, नहीं तो नजानू ने उसे कुचल दिया होता।

"देखा, तुमने क्या कर डाला!" जानू चिल्लाया, "फ़ौरन गाड़ी रोक दो!"

नजानू डर गया। वह चाहता था कि वह गाड़ी को रोक दे। उसने किसी लीवर को खींचा, मगर मोटरगाड़ी रुकने के बजाय और तेज़ भागने लगी। अहाते में एक कुंज था जो गाड़ी के रास्ते में आ गया। धड़-ध-ड़-ड़! कुंज भी तहस-नहस हो गया। नजानू सर से पैर तक चिपटियों से ढक गया। एक तख़्ता उसकी पीठ पर ज़ोर से आकर लगा और दूसरा उसकी गुद्दी पर।

नजानू ने स्टीयरिंग को घुमाकर गाड़ी को मोड़ना चाहा। गाड़ी अहाते में इधर-उधर भाग रही थी और नजानू गले के पूरे ज़ोर से चिल्ला रहा था:





"भाइयो, जल्दी से फाटक खोल दो, नहीं तो मैं अहाते में सब कुछ तोड़-फोड़ डालूंगा!"

छुटकों ने फाटक खोल दिया। नजानू गाड़ी में अहाते से बाहर आ गया और गाड़ी सड़क पर पूरी तेज़ी से भागने लगी। हंगामा सुनकर सारे छुटके अपने-अपने अहातों से बाहर दौड़ आये।

"बचो!" नजानू चिल्लाया और झपटता हुआ आगे निकल गया।

जानू, मोड़ू, कदाचित्, डाक्टर टिकियावाला और दूसरे छुटके नजानू के पीछे भाग रहे थे। मगर कहां! वे तो उसके बराबर पहुंच ही नहीं पा रहे थे।

नजानू पूरे नगर का चक्कर लगा रहा था और उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह गाड़ी को कैसे रोके।

आखिर में गाड़ी दौड़ती हुई नदी के पास पहुंच गयी। वह चट्टान के ऊपर से लुढ़की





और बड़ी तेज़ी से नीचे गिरने लगी। नजानू उसमें से बाहर उछलकर तट पर जा गिरा और गैस की मोटरगाड़ी पानी में गिरकर डूब गयी।

जानू, मोड़ू, कदाचित् और डाक्टर टिकियावाला नजानू को उठाकर घर ले गये। सब यह समझ रहे थे कि वह मर चुका है।

घर पर उसे बिस्तर पर लिटा दिया गया और तब जाकर नजानू ने अपनी आंखें खोलीं। उसने चारों ओर देखा, फिर पूछा:

"भाइयो, मैं अभी ज़िन्दा हूं?"

"ज़िन्दा हो, ज़िन्दा हो," डाक्टर टिकियावाला ने जवाब दिया, "बस, मेहरबानी करके चुपचाप लेटे रहो। मुझे तुम्हारी जांच करनी ज़रूरी है!"

उन्होंने नजानू के कपड़े उतार दिये और उसकी जांच करने लगे, फिर बोले:

"बड़े ताज्जुब की बात है! सब हड्डियां सही-सलामत हैं। सिर्फ़ कुछ घाव लगे हैं और कुछ चिपटियां घुस गयी हैं।"

"ये चिपटियां तख़्ते की मार से अंदर घुस गयी हैं," नजानू बोला।



"चिपटियों को निकालना पड़ेगा," डाक्टर टिकियावाला ने सर हिलाते हुए कहा।
"उससे दर्द होगा?" डरकर नजानू ने पूछा।
"नहीं, थोड़ा-सा भी नहीं। लाओ, मैं अभी सबसे बड़ी चिपटी निकालता हूं।"
"हाय-हाय!" नजानू चिल्लाया।
"क्या बात है? भला दर्द हुआ कहीं?" ताज्जुब से डाक्टर टिकियावाला ने पूछा।
"और क्या, बड़ा दर्द हुआ!"
"ख़ैर, धीरज से काम लो, सब्र करो। तुमको सिर्फ़ लगता है कि दर्द हुआ।"
"सिर्फ़ लगता ही नहीं है! आई-आई-आई!"
"अरे, तुम तो ऐसे चिल्ला रहे हो जैसे मैं तुम्हें चीरा लगा रहा हूं! आख़िर मैं तुम्हें चीरा तो नहीं लगा रहा।"
"दर्द हो रहा है! ख़ुद ही कहा था कि दर्द नहीं होगा, मगर दर्द हो रहा है।"
"अच्छा, शांत रहो, शांत रहो – बस अब एक चिपटी रह गयी है।"
"हाय-हाय, मत निकालिये! इससे तो अच्छा है कि चिपटी अंदर ही रहे।"
"यह ठीक नहीं है। फोड़ा बन जायेगा।"
"हाय-हाय-हाय!"
"लो, बस, खेल ख़त्म। अब सिर्फ़ आयोडीन लगाना है।"
"उससे दर्द होगा?"
"आयोडीन से नहीं, उससे दर्द नहीं होता है। चुपचाप लेटे रहो।"
"आ-आ-आ!"
"बस, बस! गाड़ी चलाने में बड़ा मज़ा आता है, मगर दर्द सहना अच्छा नहीं लगता।"
"हाय, बड़ी जलन हो रही है!"
"थोड़ी जलन होगी, फिर ठीक हो जायेगा। अभी मैं तुम्हें थरमामीटर लगाऊंगा।"
"ओह, थरमामीटर मत लगाइये, रहने दीजिये।"
"क्यों?"
"दर्द होगा।"
"थरमामीटर लगाने से बिल्कुल दर्द नहीं होता।"
"आप हमेशा कहते हैं दर्द नहीं होता और बाद में दर्द होता है।"
"कैसे बेवकूफ़ हो, क्या सचमुच मैंने तुम्हें थरमामीटर कभी नहीं लगाया?"
"कभी नहीं।"
"ठीक है, तो अब देख लेना कि उसके लगाने से दर्द नहीं होता," डाक्टर टिकियावाला ने कहा और थरमामीटर लेने चले गये।
नजानू बिस्तर पर से कूद पड़ा और खुली हुई खिड़की में से फांदकर अपने दोस्त



चिथड़िया के पास भाग गया। डाक्टर टिकियावाला जब थरमामीटर लेकर वापस आये तो उन्होंने देखा कि नजानू ग़ायब है।

"ऐसे बीमार का इलाज कैसे किया जा सकता है!" डाक्टर टिकियावाला बड़बड़ाये, "उसको ठीक करने की कोशिश करो और वह खिड़की में से कूदकर भाग जाता है। यह भी कोई तरीक़ा है?"



...ТАЛСЯ НА
...НОМ АВТОМОБИЛЕ

*На языке хинди*

N. Nosov

***HOW DUNNO TOOK A RIDE IN
A SODA-WATER CAR***

in Hindi





सोवियत संघ में मुद्रित





अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं :

**जानू ने उड़न-गुब्बारा कैसे बनाया**

**यात्रा की तैयारी**

ISBN 5-05-000407-1

नजानू की कहानियां

६

निकोलाई नोसोव



# जानू ने उड़न-
# -गुब्बारा
# कैसे बनाया



रादुगा प्रकाशन · मास्को



# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

६

# जानू ने उड़न-ग़ुब्बारा कैसे बनाया


अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन





रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





जानू को पढ़ने का बहुत चाव था। वह किताबों में दूर देशों और तरह-तरह की यात्राओं के बारे में पढ़ता था। अकसर जब शाम को कुछ करने को न होता तो वह अपने दोस्तों को उन बातों के बारे में बताता जिनके बारे में उसने पढ़ा था। छुटकों को ये कहानियां बहुत पसंद आती थीं। उनको उन देशों के बारे में सुनना अच्छा लगता था जहां वे कभी नहीं गये थे और सबसे अच्छा उनको लगता था यात्रियों के बारे में कहानियां सुनना क्योंकि यात्रियों के साथ अविश्वसनीय कहानियां जुड़ी होतीं और उनके अनुभव अद्‌भुत होते।

ये सब कहानियां सुनकर छुटके खुद लंबी यात्रा पर जाने के सपने देखने लगे। कुछ ने सुझाव दिया कि यात्रा पैदल की जाये। दूसरों ने कहा कि नाव में नदी की यात्रा ठीक रहेगी। मगर जानू ने कहा :

"चलो, एक गैस का गुब्बारा बनाते हैं। उस पर बैठकर हवा में उड़ेंगे।"

यह मनोरंजक सुझाव सबको भा गया। वे कभी गुब्बारे में नहीं उड़े थे और सब

छुटकों के लिए यह बहुत दिलचस्प सुझाव था। अलबत्ता, किसी को यह पता नहीं था कि गैस के गुब्बारे बनते कैसे हैं। मगर जानू बोला कि वह इसके बारे में सब कुछ सोचकर फिर सबको समझायेगा।

जानू ने सोचना शुरू कर दिया। तीन दिन और तीन रात वह सोचता रहा और इस नतीजे पर पहुंचा कि गुब्बारा रबड़ से बनाया जायेगा। छुटकों को रबड़ बनाना आता था। उनके नगर में ऐसे पौधे उगते थे जो रबड़ के पौधों से मिलते-जुलते थे। इन पौधों के तनों में कटाव बना देने पर उनमें से सफ़ेद रस निकलने लगता था। यह रस धीरे-धीरे गाढ़ा हो जाता था और रबड़ बन जाता था, जिससे गेंद और रबड़ के जूते बनाये जाते थे।

जब जानू ने रबड़ से गुब्बारा बनाने की सोची तो उसने सब छुटकों से रबड़ का रस इकट्ठा करने को कहा। सब लोग रबड़ का रस लाने लगे जिसके लिए जानू ने एक पीपा तैयार किया। नजानू भी रबड़ का रस इकट्ठा करने गया और रास्ते में उसकी भेंट अपने दोस्त चिथड़िया से हो गयी जो दो छुटकियों के साथ रस्सी कूद रहा था।





"सुनो, चिथड़िया, हम लोगों ने एक अजीब चीज़ निकाली है!" नजानू ने कहा, "भई, तुम तो मारे जलन के मर जाओगे जब तुम्हें पता चलेगा!"

"भला क्यों मरने लगा मैं," चिथड़िया ने जवाब दिया, "मैं इतनी आसानी से नहीं मरनेवाला।"

"मर जाओगे, मर जाओगे!" नजानू ने उसे विश्वास दिलाया, "भाई, चीज़ ही ऐसी है! तुमने उसे सपने में भी नहीं देखा होगा।"

"ऐसी कौन सी चीज़ है?" चिथड़िया को जानने की उत्सुकता हुई।

"बहुत जल्द हम लोग गैस का गुब्बारा बनायेंगे और उस पर उड़कर हवा में बहुत ऊपर जायेंगे।"





चिथड़िया को बड़ी जलन हुई। उसकी भी इच्छा हुई की वह भी किसी चीज़ की डींग मारे। वह बोला:

"बड़े आये गुब्बारा बनानेवाले! मैं तो छुटकियों के साथ खेलताहूं।"

"किन छुटकियों के साथ?"

"इन छुटकियों के साथ," चिथड़िया ने जवाब दिया और छुटकियों को अपनी उंगली से दिखाया। "इस छुटकी का नाम है मक्खी और इसका नाम है बटन।"

मक्खी और बटन कुछ दूरी पर खड़ी थीं और संदेह से नजानू की ओर ताक रही थीं।

नजानू ने उनकी ओर बड़े घूरकर देखा और चिथड़िया से बोला:

"अच्छा तो यह बात है! मैं समझता था तुम मेरे दोस्त हो!"

"सो तो हूं," चिथड़िया ने कहा। "और इनका भी। इसमें कोई बुराई तो नहीं है।"

"नहीं, बुराई है," नजानू ने जवाब दिया। "जो छुटकियों से दोस्ती करता है



वह खुद भी छुटकी होता है। फ़ौरन उनसे खुट्टी कर लो!"
"आखिर मैं इनसे क्यों खुट्टी कर लूं?"
"मैं जो कहता हूं – खुट्टी करो! नहीं तो मैं तुमसे खुट्टी कर लूंगा।"
"कर लो। ज़रा देखो तो इसे!"
"कर ही लूंगा, और तुम्हारी इन मक्खी और बटन की तो मैं ऐसी ख़बर लूंगा कि बस!"
नजानू मुट्ठियां तानकर छुटकियों की तरफ़ लपका। चिथड़िया ने उसका रास्ता



रोककर उसके माथे पर एक मुक्का जड़ दिया। दोनों में लड़ाई शुरू हो गयी। मक्खी और बटन डर गयीं और वहां से भाग लीं।
"तुमने उन छुटकियों की वजह से मेरे माथे पर मुक्का मारा?" नजानू चिल्लाया और उसने चिथड़िया की नाक पर मुक्का मारने की कोशिश की।
"तुम मक्खी और बटन के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़ गये हो?" चारों तरफ़ मुक्के चलाते हुए चिथड़िया ने पूछा।
"ज़रा देखो तो, बड़ा आया बचानेवाला उनका!" नजानू ने जवाब दिया और



उसने अपने दोस्त के सर पर ऐसा भरपूर हाथ मारा कि चिथड़िया गिरते-गिरते बचा और वहां से नौ दो ग्यारह हो गया।

"मेरी तुमसे खुट्टी!" नजानू ने उसका पीछा करते हुए चिल्लाकर कहा। "अब मैं तुम्हारे साथ कभी नहीं खेलूंगा।"

"न खेलना!" चिथड़िया ने उत्तर दिया। "तुम ही पहले सुलह करने आओगे।"

"देख लेना, नहीं आऊंगा। हम तो गैस के गुब्बारे में उड़ने जा रहे हैं।"

"तुम लोग छत से ज़मीन तक ही उड़ पाओगे!"

"छत से ज़मीन तक उड़ोगे तुम!" नजानू ने जवाब दिया और रबड़ का रस इकट्ठा करने चला गया।

जब पीपा रबड़ के रस से भर गया तो जानू ने रस को खूब अच्छी तरह से चलाया और पेंचू से पम्प लाने को कहा। इस पम्प से गाड़ी के पहियों में हवा भरी जाती थी। पम्प में जानू ने एक लम्बी रबड़ की नली जोड़ दी। नली के दूसरे सिरे को उसने रबड़ के रस में डुबो दिया और पेंचू से कहा कि वह धीरे-धीरे नली में पम्प से हवा भरे। पेंचू ने हवा भरनी शुरू कर दी और तुरंत रबड़ के रस में से एक बुलबुला बनने लगा, बिल्कुल वैसे ही जैसे साबुन के पानी से साबुन के बुलबुले बनते हैं। जानू पूरे समय इस बुलबुले के चारों ओर रबड़ का रस मलता रहा। पेंचू ने हवा भरनी बन्द नहीं की जिसके फलस्वरूप बुलबुला धीरे-धीरे फूलकर एक बड़ा गुब्बारा बनने लगा। यहां तक कि अब जानू उसके चारों तरफ़ रबड़ का रस नहीं मल पा रहा था। तब उसने यह आदेश दिया कि जो छुटके कुछ नहीं कर रहे थे वे भी उस पर रस मलें। अब सब इस काम में जुट गये। सिर्फ़ नजानू गुब्बारे के चारों तरफ़ चक्कर लगाता रहा और सीटी



बजाता रहा। वह इस कोशिश में था कि वह गुब्बारे से दूर रहे। वह गुब्बारे को दूर ही से देखता और अपने आप बड़बड़ाता रहा :

"यह तो फट जायेगा! बस अभी फटता है! फटाक!"

मगर गुब्बारा नहीं फटा। हर मिनट वह और बड़ा होता जा रहा था। जल्दी ही वह इतना फूल गया कि छुटकों को गुब्बारे के ऊपर और उसके बग़ल के हिस्सों पर रबड़ का रस मलने के लिए अहाते में उगी हुई झाड़ियों पर चढ़ना पड़ा।

गुब्बारा फुलाने का काम दो दिन चलता रहा और तब समाप्त हुआ जब गुब्बारा इमारतों से भी ऊंचा हो गया। इसके बाद जानू ने गुब्बारे की नली को डोरी से बांध दिया ताकि उसमें से हवा न निकल जाये और वह बोला :

"अब गुब्बारा सूखेगा और हम सब दूसरा काम करेंगे।"

उसने गुब्बारा झाड़ी से बांध दिया ताकि गुब्बारा उड़ न जाये और इसके बाद सब छुटकों को दो टोलियों में बांट दिया। एक टोली को उसने रेशम के कोये जमा करने का आदेश दिया और उसमें से रेशम निकालने का काम सौंपा कि उससे रेशम का धागा बन सके। इस धागे से उसने एक बड़ा-सा जाल बनाने का हुक्म दिया। दूसरी टोली को जानू ने भोज-वृक्ष की पतली छाल से एक बड़ा-सा झाबा बनाने का काम दिया।



जब जानू अपने साथियों के साथ ये काम कर रहा था तो फूलनगर के सारे निवासी बड़े से गुब्बारे को देखने आये जो झाड़ी में बंधा हुआ था। हर एक गुब्बारे को हाथ से छूकर देखना चाहता था और कुछ ने तो उसे उठाने की भी कोशिश की।

"गुब्बारा तो हल्का है," वे बोले, "इसे तो बड़ी आसानी से एक हाथ से ऊपर उठाया जा सकता है।"

"है तो हल्का, मगर मेरे ख़्याल में उड़ेगा नहीं," एक छुटके ने जवाब दिया जिसका नाम दलदलिया था।

"क्यों नहीं उड़ेगा?" दूसरे लोगों ने पूछा।

"वह कैसे उड़ सकता है? अगर वह उड़ सकता तो ऊपर उठ जाता, मगर वह तो सिर्फ़ ज़मीन पर पड़ा है। इसका मतलब है कि वह हल्का तो है, मगर फिर भी भारी है," दलदलिया ने जवाब दिया।

छुटके सोच में पड़ गये।

"हूं-हूं!" वे बोले, "गुब्बारा हल्का है, मगर फिर भी भारी है। यह तो सही है। यह उड़ेगा कैसे?"

वे यही सवाल जानू से पूछने लगे, मगर जानू ने कहा:

"ज़रा धीरज रखो, जल्दी ही तुम लोग देख लोगे।"





जानू ने छुटकों को कुछ समझाया नहीं था, इसलिए वे और दुबिधा में पड़ गये। दलदलिया सारे नगर में चक्कर लगाकर ऊटपटांग अफ़वाहें फैलाने लगा।

"गुब्बारे को कौन सी शक्ति ऊपर उठायेगी?" उसने पूछा और ख़ुद ही जवाब दिया: "ऐसी कोई शक्ति है ही नहीं! चिड़ियां उड़ सकती हैं क्योंकि उनके पंख होते हैं, मगर रबड़ का बुलबुला ऊपर नहीं उड़ सकता। वह उड़कर सिर्फ़ नीचे ही आ सकता है।"

अंत में नगर में कोई भी ऐसा आदमी नहीं रहा जिसको इस पर विश्वास रहा हो कि गुब्बारा उड़ेगा। सब मज़ाक उड़ाते और जानू के घर जाकर बाड़ पर से झांककर गुब्बारे को देखते और कहते:

"देखो, देखो! उड़ रहा है! हा-हा-हा!"

मगर जानू ने इन फब्तियों पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब रेशम का जाल तैयार हो गया तो उसने आदेश दिया कि उसको गुब्बारे के ऊपर डाल दिया जाये। जाल गुब्बारे के ऊपर फैलाया गया और गुब्बारे का ऊपर का हिस्सा उससे ढक गया।

"देखो!" बाड़ पर खड़े हुए छुटके चिल्लाये, "इन लोगों ने गुब्बारे को जाल में पकड़ लिया है। डरते हैं कि उड़ न जाये। हा-हा-हा!"

जानू ने अपने साथियों से कहा कि गुब्बारे के खुले हिस्से को डोरी बांध दें और डोरी को झाड़ी की एक टहनी में लपेटकर खींचे जायें और गुब्बारे को ऊपर उठायें।

जल्दबाज़ और पेंचू फ़ौरन डोरी लेकर झाड़ी पर चढ़ गये और गुब्बारे को ऊपर खींचने लगे। यह देखकर तमाशबीनों को बड़ा मज़ा आया।

"हा-हा-हा!" वे लोग हंसे, "अजब गुब्बारा है जिसे डोरी बांधकर खींचना पड़ता है। यह उड़ेगा कैसे अगर इसे डोरी से ऊपर चढ़ाना पड़ता है?"

"इसी तरह उड़ेगा," दलदलिया ने जवाब दिया, "ये लोग गुब्बारे के ऊपर





बैठ जायेंगे और डोरी को पकड़कर खींचेंगे और गुब्बारा उड़ चलेगा।"

जब गुब्बारा ज़मीन से ऊपर उठा तो रेशम का बड़ा सा जाल जो उसके ऊपर पड़ा था नीचे खिसक आया। जानू ने आदेश दिया कि जाल के कोनों में भोज की छाल से बना झाबा बांध दिया जाये। झाबा चौकोर था। उसके हर कोने पर छोटी-छोटी बेंचें बनी हुई थीं। हर बेंच पर चार छुटकों के बैठने के लिए जगह थी।

जाल के चारों कोनों को झाबे में बांध दिया गया और जानू ने यह घोषणा की कि गुब्बारे को बनाने का काम पूरा हो गया है। जल्दबाज़ ने सोचा कि अब वे गुब्बारे में उड़ सकते हैं, मगर जानू ने कहा कि अभी सब के लिए पैराशूट बनाने पड़ेंगे।

"पैराशूट किस लिए?" नजानू ने पूछा।

"मान लो अचानक गुब्बारा फट जाये! ऐसे में पैराशूट के सहारे बाहर कूदना पड़ेगा।"

अगले दिन जानू और उसके साथी पैराशूट बनाने में जुट गये। हर कोई अपने लिए डैंडेलियन के रोयों से पैराशूट बना रहा था और जानू उन्हें सिखा रहा था कि पैराशूट कैसे बनाते हैं।





नगरवासियों ने देखा कि गुब्बारा बिना हिले-डुले झाड़ी पर टंगा हुआ है। उन्होंने एक दूसरे से कहा:

"यह ऐसे ही टंगे-टंगे फट जायेगा। उड़ने की नौबत ही नहीं आयेगी।"

"तुम लोग आखिर गुब्बारे में बैठकर उड़ क्यों नहीं रहे हो?" लोग बाड़ पर से चिल्लाये, "गुब्बारा फटने से पहले उड़ जाना चाहिए।"

"परेशान मत होइये," जानू ने उनसे कहा, "उड़ान कल होगी। आठ बजे सुबह।"

बहुत से लोग इस पर हंसे, मगर कुछ लोग दुबिधा में पड़ गये।

"अगर सचमुच उड़ गये तो!" ये लोग बोले। "कल यहां आकर देखना पड़ेगा।"



Н. Носов

КАК ЗНАЙКА ПРИДУМАЛ ВОЗДУШНЫЙ ШАР

*На языке хинди*

N. Nosov

HOW DOONO INVENTED THE BALLOON

*in Hindi*





सोवियत संघ में मुद्रित





अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं :

**यात्रा की तैयारी**

**चलो, चलें!**

# नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव



७



# यात्रा की तैयारी

रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

# यात्रा की तैयारी

अनुवादक:
अचला जैन

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





अगले दिन सुबह जानू ने अपने सभी दोस्तों को जल्दी उठा दिया। सब जागे और उठकर जाने की तैयारी करने लगे। मोड़ू और पेंचू ने अपनी चमड़े की जाकेट पहनीं। शिकारी गोलीबाज़ ने चमड़े के अपने सुंदर बूट पहने। इन बूटों का ऊपरी भाग घुटनों से ऊंचा था और ऊपर से बकसुए लगाये गये थे। ऐसे बूटों से यात्रा में बड़ा आराम मिलता है। जल्दबाज़ ने "बिजली" नामक अपना सूट पहना। इस सूट के बारे में विस्तार से बताना ज़रूरी है। जल्दबाज़ ने जो हमेशा हड़बड़ी में रहता था और उसे बेकार समय बर्बाद करना पसंद नहीं था, अपने लिए ख़ास सूट सोच निकाला था, जिसमें एक भी बटन नहीं था। सभी जानते हैं कि कपड़े पहनने और उतारने में सबसे ज़्यादा समय बटन बंद करने और खोलने में बर्बाद होता है। जल्दबाज़ के सूट में क़मीज़ और पैंट अलग-अलग नहीं थे: क़मीज़ और पैंट जम्पसूट की तरह एकसाथ जुड़े हुए थे। यह पूरा जम्पसूट गर्दन पर बस एक बटन से बंद होता था। इस बटन को खोलो तो पूरा सूट न जाने कैसे बिजली की तरह कंधों से फिसलकर पैरों पर गिर जाता था।



मोटे गुलगुला ने अपना सबसे अच्छा सूट पहना। उसके सूटों में जेबें सबसे ज़्यादा काम की होती थीं। जितनी ज़्यादा जेबें होती थीं, सूट उतना ही अच्छा माना जाता था। उसके सबसे अच्छे सूट में सत्रह जेबें थीं। जाकेट में दस जेबें थीं: दो जेबें सीने पर, दो तिरछी जेबें पेट पर, दो जेबें बग़ल में, तीन जेबें अंदर और एक चोर जेब पीठ पर। पैंट में दो जेबें आगे, दो पीछे, दो जेबें बग़ल में और एक जेब घुटने पर। आम तौर पर घुटनेवाली जेब के साथ सत्रह जेबोंवाले ऐसे सूट सिर्फ़ कैमरामैनों के पास होते हैं।

शरबतिया ने चारख़ानेदार सूट पहना था। वह हमेशा चारख़ानेदार सूट पहनकर घूमता था। उसकी पैंट भी चारख़ानेदार थी, कोट भी चारख़ानेदार और टोपी भी चारख़ानेदार थी। दूर से उसे देखकर बौने हमेशा कहते थे: "देखो, देखो, वह शतरंज का बोर्ड आ रहा है!" कदाचित् ठाठदार स्कीइंग सूट पहने था, जोकि यात्रा के लिए बहुत आरामदेह था।

शक्कू ने धारीदार मोटा स्वेटर पहन रखा था, और पैरों को धारीदार पट्टियों, और गर्दन को धारीदार मफ़लर से लपेट रखा था। इस पोशाक में वह पूरा धारीदार लग रहा था। दूर से देखने पर लगता था, जैसे वह शक्कू न हो, बल्कि एक धारीदार गद्दा हो। वैसे तो जो जैसे कपड़े पहन सकता था उसने पहन लिये, बस भुलक्कड़, जिसे हर जगह अपना सामान खोने की आदत थी, किसी भी तरह अपनी जाकेट नहीं ढूंढ पाया। उसने अपनी टोपी भी कहीं घुसेड़ दी थी और लाख ढूंढने पर भी वह कहीं







मिल न सकी। आख़िरकार पलंग के नीचे उसे अपना सर्दीवाला कनटोप मिल गया।

चित्रकार ट्यूबेश ने यह फ़ैसला किया कि जो कुछ यात्रा के समय देखेगा उस सबके चित्र बनायेगा। उसने अपने रंग और ब्रश लिये और उन्हें उड़न-गुब्बारे के झाबे में रख दिया। बाजाबाज़ ने अपने साथ बांसुरी ले चलने का फ़ैसला किया। डाक्टर टिकिया-वाला ने यात्रावाला दवाओं का डिब्बा अपने साथ ले लिया और उसे झाबे में बेंच के नीचे रख दिया। यह उनकी दूरदर्शिता थी, क्योंकि यात्रा के समय कोई भी बीमार हो सकता था।

अभी सुबह के छह भी नहीं बजे थे, पर चारों ओर लगभग पूरा शहर इकट्ठा हो गया था। बहुत से बौने जो उड़ान देखना चाहते थे, चारदीवारी पर, घरों की छतों पर बैठे थे।

जल्दबाज़ सबसे पहले झाबे में चढ़ा और उसने अपने लिए सबसे आराम की जगह चुन ली। उसके पीछे चढ़ा नजानू।

"देखो," चारों ओर इकट्ठे हुए लोग चिल्लाये, "ये लोग बैठ रहे हैं!"

"तुम लोग झाबे में क्यों चढ़ गये?" जानू ने कहा, "उतर आओ, अभी तो काफ़ी देर है।"

"देर क्यों? अभी से उड़ सकते हैं," नजानू ने उत्तर दिया।

"बड़े समझदार बनते हो! गुब्बारे में पहले गर्म हवा भरनी है।"



"गर्म हवा क्यों?" जल्दबाज़ ने पूछा।

"क्योंकि गर्म हवा ठंडी हवा से हल्की होती है और हमेशा ऊपर उठती है। जब हम गुब्बारे को गर्म हवा से भरेंगे, तो गर्म हवा ऊपर उठेगी और गुब्बारे को ऊपर की ओर खींचेगी," जानू ने समझाया।

"मतलब, अभी गर्म हवा चाहिये," नजानू बोला, और जल्दबाज़ के साथ झाबे से उतर आया।

"देखो," बग़लवाले घर की छत से कोई चिल्लाया, "उतर रहे हैं! उड़ने का विचार छोड़ दिया!"

"ज़रूर," दूसरी छत से किसी ने हामी भरी। "भला ऐसे गुब्बारे में कहीं उड़ा जा सकता है! बस, लोगों को पागल बना रहे हैं!"

तभी जानू ने बौनों से कुछ बोरों में रेत भरकर झाबे में रखने को कहा। जल्दबाज़, ख़ामोशू, कदाचित् और दूसरे छुटकों ने बोरों में रेत भरकर उन्हें झाबे में रखना शुरू कर दिया।

"यह क्या कर रहे हैं ये लोग?" हैरानी से देखनेवालों ने एक-दूसरे से पूछा, "रेत के बोरे झाबे में क्यों रख रहे हैं?"

"ऐ, तुम्हें रेत भरे बोरों की क्या ज़रूरत पड़ेगी?" बाड़ पर बैठा दलदलिया चिल्लाया।

"अभी हम ऊपर उड़ेंगे और वहां से तुम्हारे सिर पर फेंकेंगे," नजानू ने उत्तर दिया।



सच तो यह है कि नजानू को ख़ुद भी मालूम नहीं था कि बोरों की क्या ज़रूरत है। उसने यह सब अपने मन से गढ़ लिया था।

"तुम लोग पहले ऊपर तो उड़ो!" दलदलिया चिल्लाया।

बाड़ पर दलदलिया के पास बैठे छुटके भुनगा ने कहा:

"हो सकता है कि वे उड़ने से डर रहे हों और अपनी जगह रेत से भरे बोरों को उड़ाना चाहते हों।"

सभी हंस पड़े।

"ज़रूर डरते हैं! डर किस बात का है? गुब्बारा तो उड़ेगा ही नहीं!"

"हो सकता है वह अभी उड़ेगा," छुटकियों में से एक ने कहा, जो चारदीवारी की दरार में से देख रही थीं।

अभी चारों तरफ़ बहस हो ही रही थी कि जानू ने आंगन के बीच में आग जलाने को कहा। सभी ने देखा कि मोड़ू और पेंचू ने अपने वर्कशाप से बड़ा तांबे का बर्तन निकाला और उसको आग पर रख दिया। यह बर्तन मोड़ू और पेंचू ने हवा गर्म करने के लिए बहुत पहले बनाया था। बर्तन मज़बूत ढक्कन से बंद था, जिसमें एक छेद था। उसकी बग़ल में लगे पम्प द्वारा बर्तन में हवा भर दी जाती थी। बर्तन में गर्म होकर वह छेद से ऊपर आ जाती थी।

वास्तव में तो देखनेवालों में से कोई समझ नहीं पाया कि बर्तन किसलिए है, पर हर एक अटकलें लगा रहा था।



"हो सकता है, अपने लिये शोरबा बनाने का फ़ैसला किया हो, कि यात्रा से पहले नाश्ता कर लें," एक छुटकी ने कहा, जिसका नाम बबूना था।

"और तुम क्या सोचते हो," भुनगा बोला, "तुम भी खाते अगर इतने लम्बे सफ़र पर जाते।"

"ज़रूर," बबूना ने हां में हां मिलायी। "हो सकता है, आख़िरी बार..."

"क्यों, आख़िरी बार क्यों?"

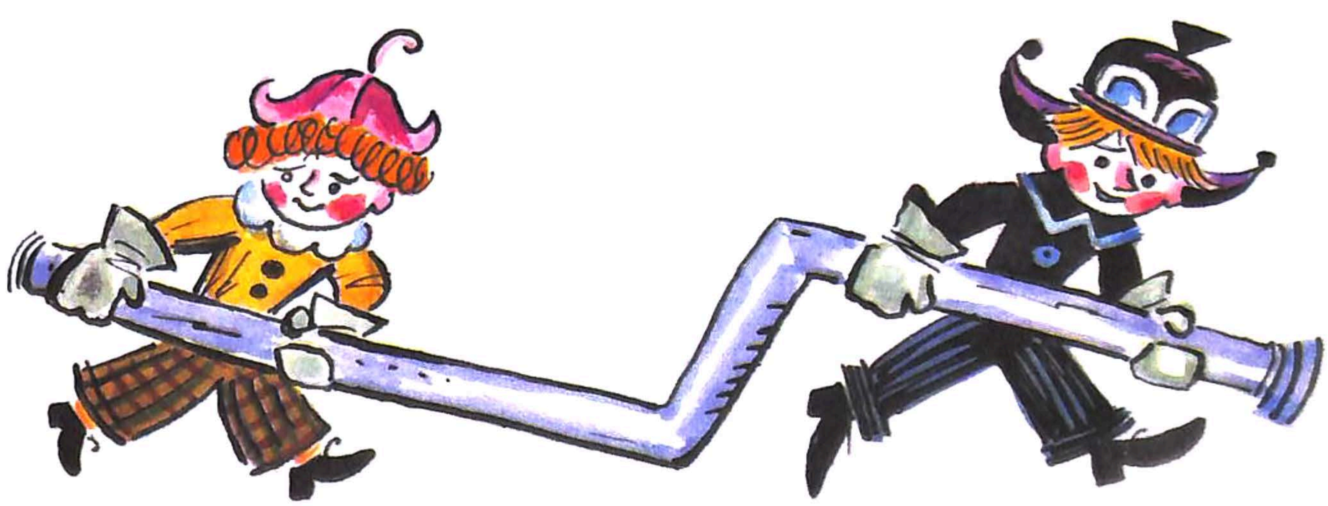
"आख़िरी बार खायेंगे, फिर उड़ेंगे, उड़न-गुब्बारा फट जायेगा और वे सब गिर जायेंगे।"

"डरो मत, फटेगा नहीं," दलदलिया ने उससे कहा। "फटने के लिये ज़रूरी है कि वह उड़े, लेकिन वह पूरे एक हफ़्ते से यहीं खड़ा है और कहीं भी नहीं उड़ रहा है।"

"देखो, अब उड़ेगा," बटन ने कहा जो मक्खी के साथ उड़ान देखने आई थी।

थोड़ी देर में सभी देखनेवालों में गर्मागर्म बहस होने लगी। कोई कहता कि गुब्बारा उड़ेगा, तभी दूसरा कहता नहीं उड़ेगा, और अगर कोई कहता कि नहीं उड़ेगा तो उसे तुरन्त उत्तर मिलता कि उड़ेगा ज़रूर। शोर इतना मच रहा था कि कुछ भी सुनायी नहीं दे रहा था। बहस में इतनी गर्मागर्मी पैदा हुई कि एक छत पर दो छुटके आपस में लड़ पड़े। बड़ी मुश्किल से दोनों को अलग अलग किया गया।

अब तक बर्तन में हवा काफ़ी गर्म हो चुकी थी और जानू ने फ़ैसला किया कि



गुब्बारे को गर्म हवा से भरना चाहिए। लेकिन गुब्बारे को गर्म हवा से भरने के लिए उसमें से ठंडी हवा निकालना ज़रूरी था। जानू ने गुब्बारे के पास आकर रबड़ की नली पर मज़बूती से बंधी हुई रस्सी को खोल दिया। ठंडी हवा तेज़ी से सनसनाहट के साथ गुब्बारे से निकलने लगी। जो बौने बहस कर रहे थे कि गुब्बारा उड़ेगा या नहीं, उन्होंने मुड़कर देखा कि गुब्बारा जल्दी-जल्दी छोटा होने लगा है। वह ढीला होकर सिकुड़ने लगा जैसे सूखी नाशपाती हो, और थोड़ी देर में झाबे की तली में ग़ायब हो गया। पहले जहां बहुत बड़ा गुब्बारा खड़ा था अब वहां बस जाली से ढंका हुआ झाबा रह गया था।

सनसनाहट बंद हुई और तभी सब का मिला-जूला ठहाका गूंज उठा। सभी हंसने लगे, वे भी जो कह रहे थे कि गुब्बारा उड़ेगा और वे भी जो कह रहे थे कि गुब्बारा नहीं उड़ेगा। नजानू का दोस्त चिथड़िया इतने ज़ोर से हंसा कि छत से नीचे गिर पड़ा और उसकी खोपड़ी के पीछे गूमड़ पड़ गया। डाक्टर टिकियावाला को तुरन्त मरहम-पट्टी करनी पड़ी और गूमड़ पर आयोडिन लगानी पड़ी।

"वाह, क्या ख़ूब उड़े!" चारों ओर खड़े लोग चिल्ला पड़े। "यह है जानू का गुब्बारा! हफ़्ते भर इसमें जुटे रहे और वह है कि फट गया। कैसी मज़े की बात है! ज़िंदगी में कभी इतना हंसने को नहीं मिला!"

पर जानू ने इस बार भी लोगों के हंसने पर ध्यान नहीं दिया। उसने गुब्बारे को बर्तन की लम्बी नली से जोड़ दिया और पम्प चलाने को कहा। बर्तन में साफ़ हवा



भरने लगी और गर्म हवा नली से होकर गुब्बारे में। देखते-देखते गुब्बारा जाली के नीचे से धीरे-धीरे फूलकर झाबे से बाहर निकल आया।

"देखो," आस-पास खड़े लोग हंसने लगे, "फिर हवा भर रहे हैं! कैसे लोग हैं! पर वह फिर फट जायेगा!"

किसी को विश्वास नहीं हुआ कि गुब्बारा उड़ेगा। और गुब्बारा इसी बीच बड़ा होता गया। झाबे से बाहर निकलकर वह उसके ऊपर जमकर बैठ गया, ठीक तश्तरी में रखे हुए बड़े तरबूज़ की तरह। तभी सभी ने देखा कि गुब्बारा जाली को खींचकर अपने आप धीरे-धीरे ऊपर उठने लगा। सभी वाह-वाह करने लगे। सबने देखा कि अब किसी ने भी गुब्बारे को रस्सी से ऊपर नहीं खींचा।

"हुर्रा!" बबूना तालियां बजा-बजाकर चिल्लाने लगी।

"चिल्लाओ मत!" दलदलिया ने उसे डांटा।

"हां, अब तो उड़ने लगा!"

"अब भी नहीं उड़ा, वह झाबे से जुड़ा है। भला वह उठा पायेगा झाबे को और वह भी बौनों के साथ!"

तभी दलदलिया ने देखा कि गुब्बारा बड़ा होकर ऊपर उठ गया और झाबा भी ज़मीन से अलग हो गया। दलदलिया अपने आप को रोक न पाया और पूरे ज़ोर से चिल्ला पड़ा:

"पकड़ो! नहीं तो उड़ जायेगा! यह क्या कर रहे हो तुम लोग?"



पर गुब्बारा उड़ा नहीं क्योंकि झाबा अखरोट के पेड़ से मज़बूती से बंधा हुआ था। वह तो बस ज़मीन से थोड़ा-सा ऊपर उठा था।

"हुर्रा-आ!" सभी ओर से आवाज़ें आयीं। "हुर्रा! शाबाश, जानू! यह है जानू का गुब्बारा! किस चीज़ से उसे भरा गया है? शायद भाप से।"

अब सभी को यक़ीन हो गया कि गुब्बारा उड़ेगा ज़रूर।





Н. Носов
ПОДГОТОВКА К ПУТЕШЕСТВИЮ
*На языке хинди*

N. Nosov
PREPARATIONS FOR A TRIP
*in Hindi*




सोवियत संघ में प्रकाशित





ISBN 5-05-000982-9
ISBN 5-05-[illegible]

# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव



८



# चलो, चलें

रादुगा प्रकाशन · मास्को



## नज़ानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

८

# चलो, चलें


अनुवादक:
अचला जैन

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन





रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई. रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





आख़िरकार गुब्बारे में गर्म हवा भरने का काम पूरा हुआ। जानू ने बर्तन हटा देने को कहा और रबड़ की नली को डोरी से बांध दिया, ताकि गर्म हवा गुब्बारे से बाहर न निकल जाये। इसके बाद उसने सबको झाबे में बैठने का आदेश दिया। सबसे पहले झाबे में चढ़ा जल्दबाज़, उसके पीछे गुलगुला जो दूसरे बौनों के सिरों पर गिरते-गिरते बचा। वह थोड़ा मोटा था और उसकी जेबों में बहुत-सी चीज़ें ठूंस-ठूंसकर भरी हुई थीं – किसी में चीनी भरी थी तो किसी में बिस्कुट। ऊपर से उसने रबड़ के जूते पहन लिये थे और हाथों में छाता ले लिया था। सब ने मिलकर गुलगुला को झाबे में बिठा दिया, उसके पीछे बाक़ी बौने भी चढ़ने लगे। शरबतिया झाबे के चारों ओर भाग-भागकर सबको बिठाने लगा।

"बैठो, बैठो," उसने कहा, "आराम से बैठ जाओ। गुब्बारे में सबके लिए जगह है।"

"तुम भी बैठो," सबने उससे कहा।

"बैठ जाऊंगा," शरबतिया ने कहा, "पहले तुम लोग तो बैठो।"

उसने मदद के लिए लोगों का हाथ पकड़कर उन्हें चढ़ने में सहारा दिया।

आखिर में सभी झाबे में चढ़ गये। बस एक शरबतिया नीचे रह गया।

"तुम क्यों नहीं बैठ रहे हो?" सबने उससे पूछा।

"शायद अच्छा यही हो कि मैं न आऊं?" शरबतिया ने कहा, "मैं बहुत मोटा हूं। मेरे बिना ही वहां इतनी घिचपिच है। मुझे डर है कि लोग ज़रूरत से ज़्यादा हो जायेंगे।"

"डरो मत, लोग ज़्यादा नहीं होंगे।"

"नहीं, भाइयो, तुम लोग मेरे बिना ही उड़ो। मैं तुम लोगों की यहीं राह देखूंगा। मैं तुम लोगों को तंग क्यों करूं?"

"किसी को तुम तंग नहीं करोगे। बैठो। अगर सबने उड़ने की ठानी है तो एकसाथ ही उड़ेंगे," जानू ने कहा।

शरबतिया न चाहते हुए भी झाबे में चढ़ गया, और तभी अचानक एक ऐसी घटना हुई, जिसके बारे में किसी ने सोचा भी नहीं था: झाबा गुब्बारे समेत ज़मीन पर उतर आया।

"बस, उड़ लिये!" चारदीवारी पर बैठा भुनगा हंस पड़ा।





"तुम हंस क्यों रहे हो? यहां हमारे ऊपर मुसीबत आ पड़ी है, और यह है कि हंस रहा है," दलदलिया ने कहा।

"कोई मुसीबत नहीं आयी है," शीशू ने कहा। "यह उड़न-गुब्बारा बस पंद्रह बौनों को उठा सकता है, सोलह को नहीं।"

"मतलब अब नहीं उड़ेंगे?" दलदलिया ने पूछा।

"किसी एक को छोड़ना पड़ेगा, तब उड़ पायेंगे," शीशू ने कहा।

"शायद नजानू को छोड़ दें," मक्खी ने कहा।

शरबतिया ने, जिसे गुब्बारे में उड़ने से डर लग रहा था, ख़ुश होकर कहा:

"अब देखो, मैंने तो पहले ही कहा था कि लोग ज़्यादा हो जायेंगे। अच्छा हो अगर मैं उतर जाऊं।"

उसने उतरने के लिए पैर भी उठा लिया, पर तभी जानू ने रेत भरी एक बोरी को झाबे में से उठाकर फेंक दिया। गुब्बारे का बोझ हल्का हो गया और वह फिर से ऊपर उठ गया। अब जाकर ही सबकी समझ में आया कि जानू ने रेत भरी बोरियां झाबे में रखने को क्यों कहा था। सभी तालियां बजाने लगे। जानू ने हाथ ऊपर उठाकर सभी बौनों से चिल्लाकर कहा:

"टा-टा, भाइयो! हम लोग बहुत दूर उड़ जायेंगे! एक हफ़्ते बाद वापस लौटेंगे! टा-टा!"

"टा-टा! टा-टा! तुम्हारी यात्रा सफल हो!" बौने हाथ और टोपियां हिलाते हुए चिल्लाये।

जानू ने जेब से चाक़ू निकाला और उस रस्सी को काट दिया, जिससे झाबा पेड़











के साथ बंधा हुआ था। गुब्बारा लहराता हुआ ऊपर उठ गया, एक तरफ़ से वह पेड़ की टहनी में अटक गया, पर तभी उससे निकलकर जल्दी से ऊपर उड़ चला।

"हुर्रा!" बौने चिल्लाये, "जानू और उसके साथी ज़िंदाबाद! हुर्रा-आ!"

सभी लोग तालियां बजाने और टोपियां ऊपर उछालने लगे। छुटकियों ने खुशी से









एक दुसरे को गले से लगा लिया। मक्खी और बटन ने तो एक दूसरी को चूम भी लिया और डेज़ी रो पड़ी।

इस बीच गुब्बारा ऊपर ही ऊपर उठता गया। हवा ने उसे एक ओर मोड़ दिया। जल्द ही वह एक छोटे-से बिंदु में बदल गया, जो नीले आसमान में मुश्किल से ही दिखायी दे रहा था। शीशू घर की छत पर चढ़कर दूरबीन से बिंदु देखने लगा। उसके साथ छत के बिल्कुल किनारे खड़ा था कवि गुलदस्ता। सीने पर हाथ बांधकर वह बड़ी उमंग से देख रहा था। लगता था कि वह किसी सोच में पड़ा हुआ है। अचानक उसने अपने हाथ फैला दिये और ज़ोर से चिल्ला उठा:

"कविता! सुनो कविता!"



चारों ओर एकदम से शांति छा गयी। सभी सिर उठाकर गुलदस्ता की ओर देखने लगे।

"कविता! अभी कविता होगी!" बौनों ने फुसफुसाकर कहा।

गुलदस्ता थोड़ी देर और रुका रहा कि पूरी शांति हो जाये। फिर उड़ते हुए गुब्बारे की ओर हाथ उठाकर, थोड़ा-सा खांसकर, उसने फिर से कहा:

"कविता!"

और कविता पढ़ने लगा, जो उसने अभी-अभी रची थी:

उड़ा गगन में गुब्बारा भारी भरकम – अजब कारीगरी!
ऐसे ही यह थोड़े हो जाता है, हवा है उसमें ख़ूब भरी
बौनों के पंख भले न हों उड़नेवाली चिड़ियों जैसे
लेकिन चाहे तो उड़ भी सकते हैं वे बिल्कुल वैसे,
काम कठिन हो चाहे जितना, पर हो जाता है आसान,
थोड़ी-सी बस अकल लगाओ, कुछ सूझ-बूझ औ' कुछ ज्ञान!



चारों ओर एकदम से शोर होने लगा! सभी तालियां बजाने लगे। छुटके गुलदस्ता को अपने हाथों में उठाकर छत से घसीटकर घर में ले आये और छुटकियों ने फूलों की पत्तियां तोड़कर गुलदस्ता की ओर फेंकनी शुरू कर दीं। उस दिन गुलदस्ता की इतनी धूम मच गयी, जैसे ख़ुद उसने उड़न-गुब्बारे को सोच निकाला हो, और उसमें आसमान में उड़ गया हो। सबने उसकी कविता रट ली और सड़कों पर गाने लगे।

उस दिन बड़ी देर तक, जहां देखो वहीं उसकी कविता सुनाई दे रही थी:

काम कठिन हो चाहे जितना, पर हो जाता है आसान,
थोड़ी-सी बस अकल लगाओ, कुछ सूझ-बूझ औ' कुछ ज्ञान!



Н. Носов
В ПУТЬ
*На языке хинди*

N. Nosov
UP IN THE AIR IN A BALLOON
*in Hindi*





सोवियत संघ में प्रकाशित





ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-000984-7

नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

६

# बादलों के पार



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

३

# बादलों के पार

अनुवादक:
अचला जैन

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





हमारे साहसी यात्रियों को पता भी नहीं चला कि कैसे गुब्बारा लहराता हुआ ज़मीन से ऊपर उठ गया। एक ही मिनट बाद उन्होंने भाबे से भांका तो नीचे दोस्तों की भीड़ दिखायी दी, जो हाथ हिला-हिलाकर उन लोगों को विदाई दे रहे थे और टोपियां ऊपर उछाल रहे थे। नीचे से "हुर्रा" की आवाज़ें आ रही थीं।

"टा-टा!" जानू और उसके दोस्त जवाब में चिल्लाये।

वे भी टोपियां हिलाने लगे। भुलक्कड़ ने टोपी उतारने के लिये सिर की ओर हाथ बढ़ाया तो उसे पता चला कि टोपी तो है ही नहीं।

"भाइयो, रुक जाओ!" उसने चिल्लाकर कहा, "गुब्बारा रोको! मैं टोपी घर भूल आया!"

"तुम हमेशा कुछ न कुछ भूल जाते हो!" श्रीमान बड़बड़िया बड़बड़ाया।

"गुब्बारा तो अब रोका नहीं जा सकता," जानू ने कहा, "अब तो वह तब तक उड़ेगा जब तक उसकी हवा ठंडी नहीं हो जाती।"

"यह क्या बात हुई! मुझे बिना टोपी के उड़ना पड़ेगा?" नाराज़ होकर भुलक्कड़ ने पूछा।

"तुम्हें तो अपनी टोपी खाट के नीचे मिल गयी थी," गुलगुला ने कहा।

"हां, मिल तो गयी थी, पर मुझे उसमें गर्मी लग रही थी, इसलिए मैंने उसे मेज़ पर रख दिया था, और ऐन वक़्त पर पहनना भूल गया।"

"तुम ऐन वक़्त पर हमेशा कुछ न कुछ भूल जाते हो," श्रीमान बड़बड़िया ने कहा।

"भाइयो, देखो!" अचानक नजानू ने चिल्लाकर कहा, "हमारा घर नीचे रह गया!"

सभी लोग हंस पड़े और श्रीमान बड़बड़िया ने कहा:

"और क्या! तुमने सोचा था कि घर भी हमारे साथ उड़ेगा?"

"मैंने ऐसा कुछ भी नहीं सोचा था," नजानू नाराज़ हो गया, "बस मैंने देखा कि हमारा घर खड़ा है, सो वही मैंने कह दिया। पहले हम लोग घर में रहते थे और अब गुब्बारे में उड़ रहे हैं।"

"हां, उड़ रहे हैं," श्रीमान बड़बड़िया ने बड़बड़ाकर कहा, "न जाने कहां उड़ जायेंगे!"

"तुम, श्रीमान बड़बड़िया, हमेशा बड़बड़ाते रहते हो," नजानू ने कहा, "तुम्हारी वजह से उड़न-गुब्बारे तक में शांति नहीं है।"

"अगर तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो तुम चले जाओ!"

"अब मैं कहां जाऊंगा!"

"बस, बस!" लड़नेवालों से जानू ने चिल्लाकर कहा, "उड़न-गुब्बारे में अब यह क्या लड़ाई-झगड़ा मचा रखा है?"

गुब्बारा ऊपर ही ऊपर उठता जा रहा था। सारा फूल-नगर जैसे हथेली पर दिखायी दे रहा था। घर बिल्कुल छोटे-छोटे लग रहे थे, और बौने तो अब दिखायी ही नहीं दे रहे थे। गुब्बारा हवा के साथ-साथ उड़ रहा था, और जल्दी ही पूरा नगर दूर कहीं पीछे छूट गया।

जानू ने जेब से क़ुतुबनुमा निकाला और उसमें गुब्बारे के उड़ने की दिशा देखने लगा।

क़ुतुबनुमा धातु की बनी एक छोटी सी डिबिया होती है, जिसमें चुंबकीय सूई लगी होती है। यह सूई हमेशा उत्तर की ओर रहती है। अगर इस सूई पर नज़र रखी जाये तो वापस लौटने का रास्ता हमेशा ढूंढा जा सकता है। इसीलिये जानू ने अपने साथ क़ुतुबनुमा ले लिया था।



“हवा हमको सीधे उत्तर की ओर ले जा रही है,” जानू ने कहा, “मतलब, लौटते समय दक्षिण की ओर चलना होगा।”

गुब्बारा आसमान में उठ गया था और खेतों के ऊपर उड़ रहा था। नगर कहीं दूर रह गया था। नीचे पतले-से फ़ीते जैसी नदी बह रही थी, जिसे बौने खीरेवाली नदी कहते थे। खेतों में खड़े पेड़ बिल्कुल छोटी-छोटी रोएंदार झाड़ियों जैसे लग रहे थे।

अचानक गुलगुला ने नीचे एक छोटा-सा काला बिंदु देखा। वह ज़मीन पर जल्दी-जल्दी चल रहा था, गुब्बारे के पीछे-पीछे भाग रहा था।

"देखो, भाइयो, कोई हमारे पीछे भाग रहा है," गुलगुला ने चिल्लाकर कहा।

सभी बिंदु को देखने लगे।

"देखो, कूदकर नदी पार कर गया!" भुलक्कड़ चिल्लाया।

"क्या हो सकता है यह?" जल्दबाज़ ने पूछा, "देखो, पेड़ों को ऊपर से फांद रहा है!"

गुब्बारा जंगल के ऊपर उड़ने लगा। बिंदु भी पेड़ों की फुनगियों पर चल रहा था।



डाक्टर टिकियावाला ने अपनी नाक पर चश्मा चढ़ा लिया, फिर भी देख नहीं सका कि वह था क्या।

"मुझे मालूम है!" अचानक नजानू ने चिल्लाकर कहा, "सबसे पहले मेरी समझ में आया! यह हमारा गुर्रा है। हम लोग उसे लेना जो भूल गये, अब वही हमारे पीछे भाग रहा है।"

"तुम भी अजब चीज़ हो!" गोलीबाज़ ने उत्तर दिया, "गुर्रा तो यहां है। वह देखो मेरी बेंच के नीचे बैठा है।"

"फिर यह है क्या? शायद तुम बता सको, जानू?" कदाचित् ने पूछा।

जानू ने क़ुतुबनुमा जेब में रख लिया और नीचे झांककर देखा।

"अरे, यह तो हमारी परछाईं है!" वह हंस पड़ा।

"हमारी परछाईं?" नजानू आश्चर्य में पड़ गया।

"बहुत सीधी-सी बात है। यह गुब्बारे की परछाईं है। हम लोग हवा में उड़ रहे हैं और परछाईं ज़मीन पर भाग रही है।"

छुटके देर तक परछाईं देखते रहे। वह लगातार छोटी होती जा रही थी। आख़िर में वह बिल्कुल ही ग़ायब हो गयी।

"कहां ग़ायब हो गयी परछाईं?" सभी चिंता में पड़ गये।

"हम लोग बहुत ऊपर आ गये हैं," जानू ने समझाया, "अब परछाईं देखी नहीं जा सकती।"

"अजीब बात है," श्रीमान बड़बड़िया मन ही मन बड़बड़ाया। "अपनी परछाईं भी नहीं देख सकते हम लोग।"

"तुम फिर बड़बड़ाने लगे," नजानू ने कहा। "तुम्हारे साथ कहीं भी शांति नहीं है।"

"शांति, शांति!" श्रीमान बड़बड़िया ने उसकी नक़ल उतारते हुए कहा, "गुब्बारे में कैसी शांति! शांति चाहिये तो घर बैठो!"

"तुम ही जो जाकर घर बैठो!"

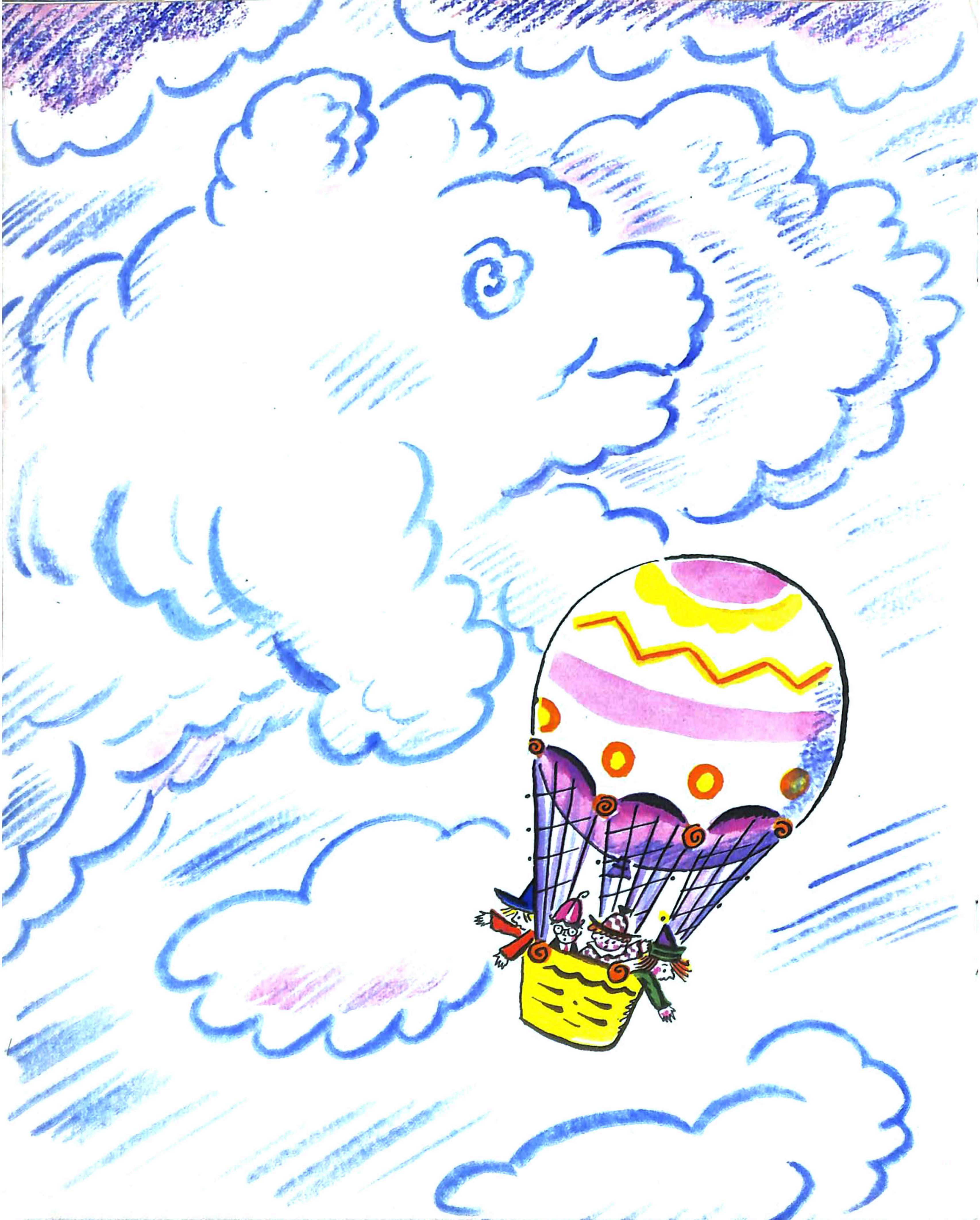
"मुझे तो शांति नहीं चाहिये!"

"तुम लोग फिर लड़ने लगे!" जानू ने कहा। "तुम लोगों को ज़मीन पर छोड़कर आना पड़ेगा।"

श्रीमान बड़बड़िया और नजानू डर गये और उन्होंने लड़ना बंद कर दिया।

इसी समय गुब्बारा धुएं या कोहरे में घुस गया। नीचे ज़मीन ग़ायब हो गयी। चारों ओर जैसे सफ़ेद पर्दा-सा तन गया।

"यह क्या है?" सभी चिल्ला पड़े। "यहां धुआं कहां से आ गया?"



"यह धुआं नहीं है," जानू ने कहा, "यह बादल है। हम बादलों तक उड़ आये हैं और अब बादलों के बीच में उड़ रहे हैं।"

"यह तो तुम अपने मन से गढ़ रहे हो," नजानू ने कहा। "बादल तो लेई जैसे होते हैं। यह तो कुछ कोहरा-सा है।"

"तुम क्या सोचते हो, बादल किस चीज़ के बने होते हैं?" जानू ने पूछा। "बादल भी तो कोहरे से ही बनते हैं। बस दूर से देखने पर ही घने लगते हैं वे।"

पर नजानू को उसकी बात पर विश्वास नहीं आया। वह बोला:

"भाइयो, तुम लोग इसकी बात मत सुनो। यह सब इसकी मनगढ़ंत है, बस यह दिखाना चाहता है कि बहुत कुछ जानता है। सच तो यह है कि इसे कुछ भी नहीं मालूम। जैसे मैं इसकी बात मान ही लूंगा कि बादल कोहरा होता है! बादल तो लेई की तरह होता है। जैसे मैंने लेई कभी देखी ही न हो!"

जल्दी ही गुब्बारा ऊपर उठ गया, बादलों से बाहर निकलकर उनके पार उड़ने लगा।

नजानू ने झाबे से झांककर देखा तो नीचे बादल दिखाई पड़े, जिन्होंने ज़मीन ढंक रखी थी।

"अरे बाप रे!" नजानू चिल्ला पड़ा, "आसमान नीचे है! हम लोग औंधे उड़ रहे हैं!"

"औंधे क्यों?" सभी आश्चर्य में पड़ गये।

"देखो, हमारे पैरों के नीचे आसमान है – मतलब हम औंधे उड़ रहे हैं।"

"हम लोग बादलों के ऊपर उड़ रहे हैं," जानू ने समझाया। "हम लोग बादलों से ऊपर निकल आये हैं, इसलिये बादल अब हम लोगों के ऊपर नहीं बल्कि नीचे हैं।"

पर नजानू ने इस पर भी विश्वास नहीं किया है। वह अपनी जगह बैठा रहा और सिर पर अपनी टोपी कसकर पकड़े रहा। उसने सोचा कि अगर उसके पैर ऊपर हैं तो टोपी सिर पर से गिर सकती है। बादलों के ऊपर हवा गुब्बारे को तेज़ी से खींच रही थी, पर जल्दी ही सबने महसूस किया कि गुब्बारा नीचे उतरने लगा है।

"हम नीचे क्यों उतरने लगे?" छुटके चिंता में पड़ गये।

"गुब्बारे की हवा ठंडी होने लगी है," जानू ने समझाया।

"मतलब, अब हम लोग ज़मीन पर उतर रहे हैं?" जल्दबाज़ ने पूछा।

"हमने रेत से भरे बोरे क्यों लिये थे?" जानू ने कहा। "झाबे से रेत नीचे फेंक देंगे, तो फिर ऊपर की ओर उड़ने लगेंगे।"

कदाचित् ने जल्दी से रेत भरा बोरा उठाया और नीचे फेंक दिया।



"अरे, यह तुम क्या कर रहे हो?" जानू ने चिल्लाकर कहा, "भला कहीं पूरा बोरा फेंका जाता है? वह तो किसी का सिर भी फोड़ सकता है!"

"शायद नहीं फोड़ेगा," कदाचित् ने कहा।

"शायद नहीं फोड़ेगा!" जानू ने उसकी नक़ल उतारते हुए कहा, "बोरे को खोलकर उसमें से धीरे-धीरे रेत गिरानी चाहिये।"

"अभी मैं फेंकता हूं," शक्कू ने कहा।

उसने एक और बोरा खोल दिया और सारी रेत झाबे में ही बिखेर दी।

"एक से एक बढ़कर समझदार हैं!" जानू ने सिर हिलाकर कहा। "यह क्या समझदारी की बात हुई कि रेत झाबे में ही रह जाये? इससे तो गुब्बारा हल्का होगा नहीं।"

"अच्छा, मैं अभी रेत नीचे फेंकता हूं" शक्कू ने कहा और मुट्ठी भर-भरकर रेत झाबे से बाहर फेंकने लगा।

"सावधानी से!" भुलक्कड़ चिल्लाया। "तुम तो मेरी आंखें ही अंधी कर दोगे!"

"अच्छा, मैं तुम्हारी आंखें अंधी नहीं करूंगा," शक्कू ने कहा और यह कहते-कहते भी उसकी आंखों में रेत भर दी।

सब लोग शक्कू को डांटने लगे और कदाचित् ने चाक़ू लेकर झाबे की तली में बड़ा-सा छेद कर दिया, जिससे रेत बाहर निकल सके। जानू ने देख लिया और चिल्ला पड़ा:

"रुको! यह तुम क्या कर रहे हो? तुम्हारी वजह से तो झाबा ही टूट जायेगा और हम सभी उसमें से गिर जायेंगे।"

"शायद न भी टूटे," कदाचित् ने कहा।

"तुम दोनों बस 'शायद' और 'अच्छा' ही कहना जानते हो," जानू ने कहा और कदाचित् से चाक़ू छीन लिया।

छेद के रास्ते रेत झाबे से निकल गयी, गुब्बारा हल्का हो गया और फिर से ऊपर उठ गया। छुटके ख़ुश होकर झाबे से बाहर झांकने लगे। सभी ख़ुश थे कि ग़ुब्बारा फिर से ऊपर की ओर उड़ने लगा। बस श्रीमान बड़बड़िया जो हमेशा किसी न किसी बात से नाख़ुश रहता था, बड़बड़ाता रहा:

"यह क्या बात हुई? कभी ऊपर, कभी नीचे! ग़ुब्बारे क्या ऐसे ही उड़ते हैं?"

फिर समझ में न आने पर कि और क्या कहा जाये, उसने गुलगुला की ओर देखा, जो चुपचाप चीनी का डला कुतर रहा था:

"और यह तुम क्या कुतर रहे हो?"

"मेरी जेब में चीनी का डला है, मैं उसे जेब से निकालकर खा रहा हूं।"

"खूब समय ढूंढ निकाला है चीनी खाने का! अभी नीचे उतर जायें तब खाना।"

"मैं फ़ालतू बोझ क्यों ढोता फिरूं?" गुलगुला ने कहा। "मैं चीनी खा लूंगा तो ग़ुब्बारा हल्का हो जायेगा, और ऊपर उठने लगेगा।"

"ठीक है, खा लो! देखते हैं क्या होगा तुम्हारे कुतरने से!" श्रीमान बड़बड़िया ने कहा।



Н. Носов
НАД ОБЛАКАМИ
*На языке хинди*
N. Nosov
UP IN THE CLOUDS
*in Hindi*





सोवियत संघ में प्रकाशित

अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं:

**'और फट गया गुब्बारा ...' तथा 'अपरिचितों के बीच'।**

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-000985-5

# नजानू की कहानियां

१०

निकोलाई नोसोव



# और फट गया गुब्बारा...



राडुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१०

# और फट गया गुब्बारा...

अनुवादक:
अचला जैन

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





कुछ लोग सोचते हैं कि हवा में जितना ऊपर उठते जायें, वह उतनी ही गर्म होगी, लेकिन यह सच नहीं है। जितना ऊपर उठेंगे, उतनी ही ठंड होगी। ऐसा क्यों? इसलिये कि सूरज हवा को कम गर्म कर पाता है, क्योंकि सूर्य की किरणें बिना किसी रुकावट के उसके पार निकल जाती हैं। नीचे हवा हमेशा गर्म होती है। सूरज अपनी किरणों से ज़मीन को गर्म करता है, हवा ज़मीन से ठीक उसी प्रकार गर्म होती है, जैसे गर्म स्टोव से। गर्म हवा ठंडी हवा से हल्की होती है और इसीलिये ऊपर उठती है। वह जितनी ऊपर उठती है, उतनी ही ठंडी होती जाती है। इसीलिये बहुत ऊंचाई पर हमेशा ठंड होती है।

जब बौने अपने गुब्बारे में बहुत ऊंचाई पर पहुंच गये तो उन्होंने ऐसा ही महसूस किया। सर्दी के मारे उनकी नाक और गाल लाल हो गये। सभी उछलने और हाथ-पांव रगड़ने लगे, जिससे कुछ तो गर्मी आये। सर्दी के मारे सबसे ज़्यादा तो भुलक्कड़ जम गया, जो अपनी टोपी घर पर ही भूल गया था। बेहद ठंड से उसकी नाक के नीचे बर्फ़ की झालर सी लटक आयी थी। वह पतझड़ की सूखी पत्ती की तरह कांप रहा था और पूरे समय उसके दांत किटकिटा रहे थे।

"बस, बहुत हो गया दांत किटकिटाना," श्रीमान बड़बड़िया झल्लाकर बोला। "यहां वैसे ही ठंड है, और ऊपर से यह दांत किटकिटा रहा है!"

"लेकिन ग़लती मेरी तो नहीं है कि ठंड है," भुलक्कड़ ने कहा।

श्रीमान बड़बड़िया ने अपनी जगह से उठकर कहा:

"मुझ से बर्दाश्त नहीं होता जब कोई कान के पास दांत किटकिटाता है! मुझे खुद कंपकंपी होने लगती है।"

वह ट्यूबेश के साथ बैठ गया, लेकिन वह भी अपने दांत किटकिटा रहा था। श्रीमान बड़बड़िया ने उसे शक की नज़र से देखा:

"बात क्या है? शायद, तुम मुझे चिढ़ाने के लिये दांत किटकिटा रहे हो?"

"चिढ़ा बिल्कुल नहीं रहा हूं, ठंड है ही।"

श्रीमान बड़बड़िया उठकर दूसरी जगह बैठ गया। उसने कई बार जगह बदली और बस दूसरों को परेशान करता रहा।

ठंड से उड़न गुब्बारा पाले से ढक गया और छुटकों के सिर पर ऐसे चमकने लगा, जैसे शुद्ध चांदी से बना हो। धीरे-धीरे खोल में हवा ठंडी होने लगी और गुब्बारा नीचे उतरने लगा। कुछ देर बाद वह बड़ी तेज़ी से नीचे गिरने लगा। रेत के बोरे भी खत्म हो गये थे और अब गिरना रोका नहीं जा सकता था।

"खबरदार, खतरा!" शरबतिया चिल्लाया।

"मर गये!" नजानू ज़ोर से चिल्लाया और बेंच के नीचे छिप गया।

"उतरो!" जानू उसे देखकर चिल्लाया।

"क्यों?" नजानू ने बेंच के नीचे से जवाब दिया।

"पैराशूट से कूदेंगे।"

"मैं यहीं ठीक हूं," नजानू ने उत्तर दिया।

जानू ने ज़्यादा सोच-विचार नहीं किया, उसकी गरदन पकड़ी और उसे बेंच के नीचे से घसीट निकाला।

"तुम कौन होते हो?" नजानू चिल्लाया। "मैं तुम्हारी शिकायत कर दूंगा।"

"चिल्ल-पों मत कर!" जानू ने शांत भाव से कहा। "देख, जैसे ही मैं पैराशूट से कूदूं, वैसे ही मेरे पीछे कूदना, डरने की बात नहीं है।"

नजानू की जान में जान आयी। जानू झाबे के छोर पर चला गया।

"देखो, भाइयो!" वह ज़ोर से बोला। "सब मेरे पीछे बारी-बारी कूदना। जो नहीं कूदेगा, उसे गुब्बारा लेकर ऊपर चला जायेगा। अच्छा, पैराशूट तैयार करो... चलो!"

जानू सबसे पहले कूदा। उसके पीछे जल्दबाज़, लेकिन इससे ही एक अनजानी स्थिति





पैदा हो गयी। पैराशूट खोलने से पहले कूदने के बजाय हड़बड़ी में जल्दबाज़ ने पहले पैराशूट खोला और फिर कूदा। इससे पैराशूट झाबे के किनारे में अटक गया। जल्दबाज़ का पैर डोरियों में अटक गया और वह सिर के बल नीचे लटक गया। ठीक मछली की कंटिया में लगे कीड़े की तरह वह अपने हाथ-पैर मारने लगा। उसके लाख कोशिश करने पर भी पैराशूट उलझा ही रहा।

"भाइयो!" डाक्टर टिकियावाला चिल्लाया। "अगर पैराशूट छूट गया, तो जल्दबाज़ का सिर ज़मीन से जा टकरायेगा!"

छुटकों ने पैराशूट को हाथों से पकड़कर जल्दबाज़ को वापस झाबे में खींच लिया। नजानू ने देखा कि गुब्बारा फिर से ऊपर की ओर उड़ने लगा है। वह चिल्लाया: "रुक जाओ, भाइयो! अब किसी को भी कूदने की ज़रूरत नहीं है! हम फिर ऊपर उड़ रहे हैं!"

"हम फिर से ऊपर क्यों उड़ रहे हैं?" कदाचित् अचरज में पड़ गया।

"अरे भई!" बड़बड़िया ने उत्तर दिया। "जानू के कूद जाने से गुब्बारा हल्का हो गया।"

"हमारे बिना जानू क्या करेगा?" गुलगुलिया ने पूछा।

"क्यों, क्या हुआ..." कदाचित् ने कंधे उचकाये, "धीरे-धीरे अपने घर चला जायेगा।"

"और हम जानू के बग़ैर क्या करेंगे?"

"सोचता है," नजानू ने उत्तर दिया, "जैसे जानू के बिना हम कुछ हैं ही नहीं।"

"किसी न किसी की तो सुनना ज़रूरी है," गुलगुला ने कहा।

"मेरी सुनोगे," नजानू ने घोषणा की। "अब मैं तुम लोगों का नेता हूं।"

"तुम?" बड़बड़िया आश्चर्य में पड़ गया। "ऐसी अक़्ल से हमारे नेता बनोगे?"

"अच्छा, तो यह बात है! ऐसी अक़्ल से नहीं बन सकता?" नजानू चिल्लाया।





"अच्छी बात है, अगर तुम्हें मेरी अक़्ल पसन्द नहीं है तो नीचे कूदकर ढूंढ़ो अपने जानू को!"

बड़बड़िया ने नीचे देखकर कहा:

"अब मैं कहां ढूंढूंगा? हम बहुत दूर उड़ आये हैं। तभी सबको कूद जाना चाहिये था।"

"नहीं, कूदो, कूदो!"

बड़बड़िया और नजानू बहस करने लगे और शाम तक बहस करते रहे। जानू था नहीं और उन्हें अब कोई रोक नहीं सकता था। सूरज डूबने लगा। हवा तेज़ हो गयी। गुब्बारा और भी ठंडा होने लगा और फिर से नीचे उतरने लगा, लेकिन बड़बड़िया और नजानू की नोक-झोंक चलती रही।

"बस, बहुत हो चुकी बहस," शरबतिया ने नजानू से कहा। "अगर तुमने नेता बनने का फ़ैसला कर ही लिया है, तो कुछ सोचो। देखो, हम फिर से नीचे जा रहे हैं।"

"अब सोचूंगा," नजानू ने उत्तर दिया।

वह बेंच पर बैठ गया और माथे पर उंगली रखकर सोचने लगा। गुब्बारा और भी तेज़ी से नीचे उतरने लगा था।

"अब सोचने की क्या बात है?" मोड़ू ने कहा। "अगर हमारे पास रेत के बोरे होते तो हम एक बोरा फेंक देते।"

"ठीक है," नजानू ने हां में हां मिलायी। "लेकिन अगर हमारे पास और बोरे नहीं हैं, तो तुम में से एक को बाहर फेंकना पड़ेगा। किसी को पैराशूट से फेंक देते हैं– गुब्बारा हल्का हो जायेगा और हम फिर ऊपर उड़ने लगेंगे।"

"किसको फेंकें?"

"किसको?" नजानू ने सोचते हुए कहा। "उसे फेंका जाये, जो सबसे ज़्यादा बोलता है।"

"तुम्हारी यह बात मैं नहीं मानता," बड़बड़िया ने उत्तर दिया। "यह भी कोई बात हुई कि सबसे ज़्यादा बोलनेवाले को फेंका जाये! फेंका उसे जाना चाहिये जो सबसे भारी है।"

"ठीक है," नजानू सहमत हो गया। "गुलगुला को फेंक देते हैं। वही सबसे मोटा है।"

"ठीक है," शरबतिया ने हां में हां मिलायी।

"क्यों?" गुलगुला ने चिल्लाकर कहा। "कौन सबसे मोटा है? मैं सबसे मोटा हूं? शरबतिया मुझ से मोटा है!"

"इसको देखो!" शरबतिया ने ज़ोर से हंसकर गुलगुला की ओर उंगली दिखाते



हुए कहा। "देखो, भला, मैं इससे मोटा हूं! हा-हा! चलो, नापकर देखते हैं!"

"चलो-चलो, ठीक है," गुलगुला ने उस पर मुर्गे की तरह झपटते हुए कहा।

सबने गुलगुला और शरबतिया को घेर लिया। नजानू ने जेब से डोरी निकाली और गुलगुला की कमर पर लपेटी। बाद में ऐसे ही शरबतिया को भी नापा और पता लगा कि शरबतिया थोड़ा नहीं, बल्कि गुलगुला से डेढ़ गुना मोटा है।

"यह ठीक नहीं है!" शरबतिया उस पर चिल्लाया। "गुलगुला ठग रहा है! मैंने देखा था कि वह अपना पेट सिकोड़ रहा था!"

"मैंने पेट-वेट कुछ नहीं सिकोड़ा था!" गुलगुला ने सफ़ाई देते हुए कहा।

"नहीं, सिकोड़ा था! मैंने देखा था। चलो, फिर से नापते हैं!" शरबतिया ज़ोर से चिल्लाया।

नजानू गुलगुला को फिर से नापने लगा और शरबतिया चारों तरफ़ घूमते हुए चिल्लाया:

"ए-ए! क्या? मुंह फुला रहे हो?"

"मैं क्यों मुंह फुलाने लगा?" गुलगुला ने उत्तर दिया। "अगर मुंह फुलाऊंगा, तो ज़रूर तुमसे मोटा लगूंगा।"

"चलो, ठीक है, मुंह मत फुला। और पेट सिकोड़ने का तुमको कोई हक़ नहीं

है। भाइयो, देखो, यह क्या कर रहा है! ईमानदारी कहां है? तनिक भी ईमानदारी नहीं है! यह तो सरासर ठगी है!"

नजानू ने गुलगुला को नापने के बाद उसी नाप से शरबतिया को नापा, और इस बार पता लगा कि दोनों की मोटाई एक जैसी है।

"दोनों को फेंकना पड़ेगा," नजानू ने कंधे उचकाये।

"दोनों को क्यों, जब एक ही काफ़ी है!" शरबतिया ने कहा।

शिकारी गोलीबाज़ ने झाबे से नीचे देखा कि ज़मीन बड़ी तेज़ी से पास आती जा रही है।

"सुनो, नजानू," उसने कहा, "जल्दी फ़ैसला करो, नहीं तो हम धड़ाम से ज़मीन पर जा गिरेंगे!"

"चुनना ज़रूरी है, कि किसे पैराशूट से कुदायें," कदाचित् ने कहा।

"बिलकुल सही!" शरबतिया बोला। "मोटे और पतले सभी में से चुनना पड़ेगा कि किसी को भी बुरा न लगे।"



"ठीक है, चलो, गिनते हैं," नज़ानू मान गया।

सबने घेरा बना लिया और नज़ानू ने सब पर उंगली लगा-लगाकर गिनती शुरू कर दी:

"अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बौ
अस्सी-नब्बे पूरे सौ
सौ में लगा धागा
चोर निकलके भागा!"

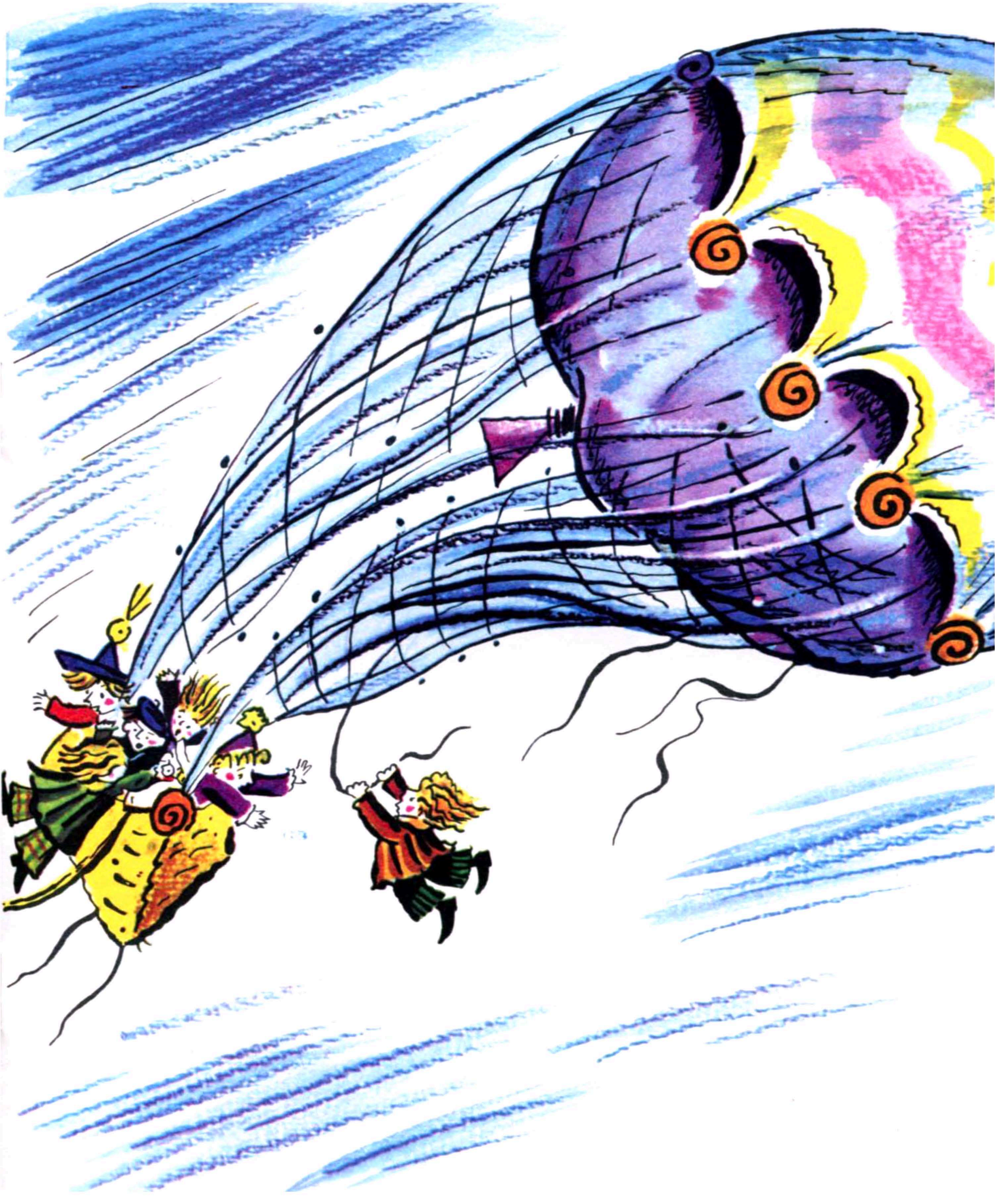
बाद में कहा:

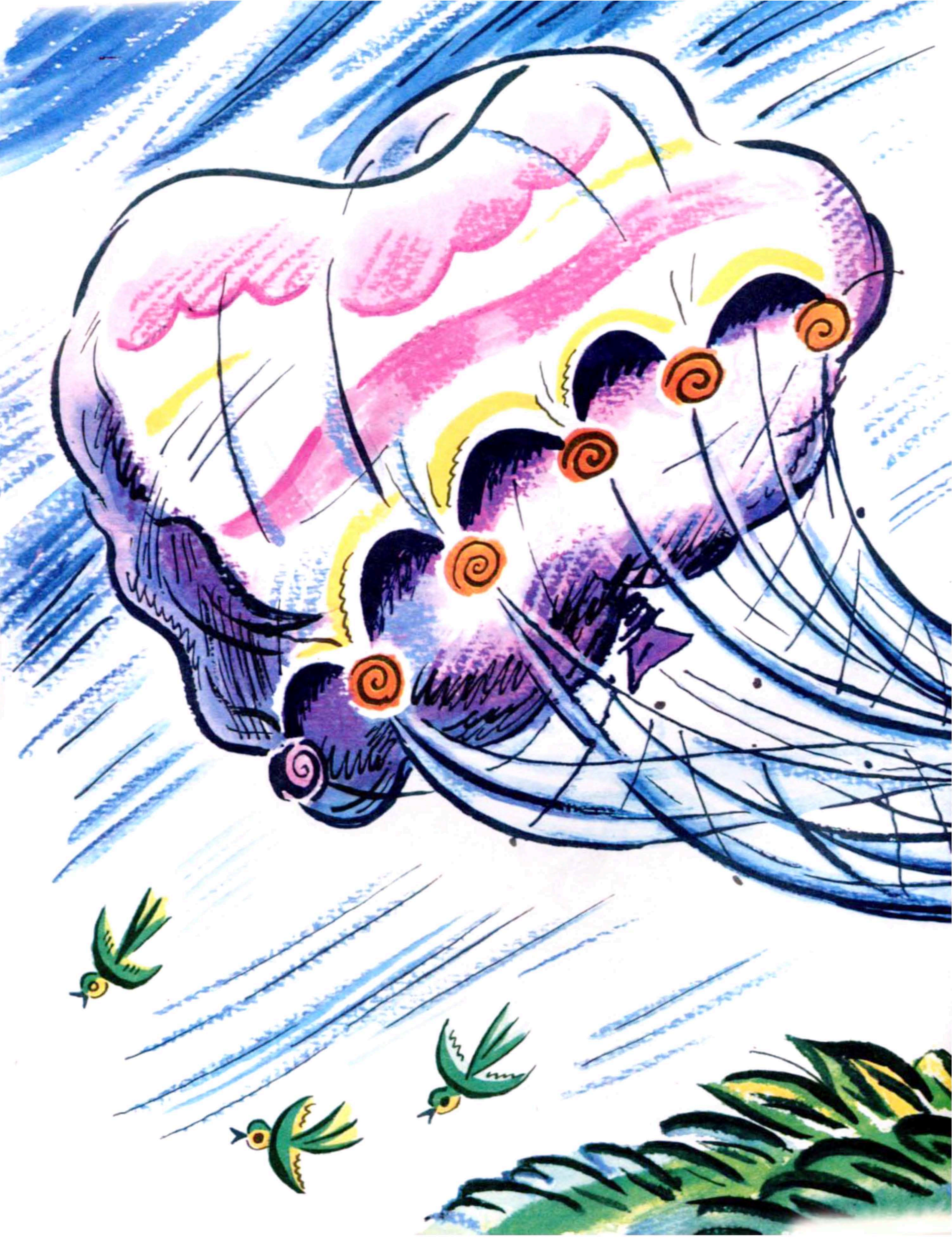
"मुझे ऐसे चुनना अच्छा नहीं लगता। मुझे यह पसंद नहीं," और दूसरी तरह चुनना शुरू किया:

"पोशम पार, भई, पोशम पार
डाकुओं ने क्या किया
सौ रुपये की घड़ी चुरायी
अब तो जेल में जाना पड़ा..."

इतने में झाबा ज़ोर से ज़मीन से जा टकराया और उलट गया। कदाचित् ने दोनों हाथों से शक्कू को पकड़ा और शक्कू ने कदाचित् को और वे एकसाथ झाबे से बाहर गिर पड़े। उनके पीछे सारे छुटके मटर के दानों की तरह बिखर गये। सिर्फ़ नज़ानू झाबे के किनारे से अटका रह गया क्योंकि गुर्रा ने दांतों से उसकी पैंट पकड़ रखी थी। ज़मीन से टकराने के कारण गुब्बारा गेंद की तरह ऊपर की ओर उछला और हवा में बड़ा-







सा गोला बनाते हुए नीचे गिरने लगा। झाबा फिर ज़मीन से टकराया और घिसटने लगा। ग़ुब्बारा कान फाड़ देनेवाली आवाज़ के साथ किसी ठोस चीज़ से टकराकर फट गया। गुर्रा हवा में पलटा और अजीब तरह से किकियाते हुए एक तरफ़ भागा। नजानू झाबे से गिरा और ज़मीन पर अचेत पड़ा रहा।

इस तरह हवाई यात्रा ख़त्म हो गयी।



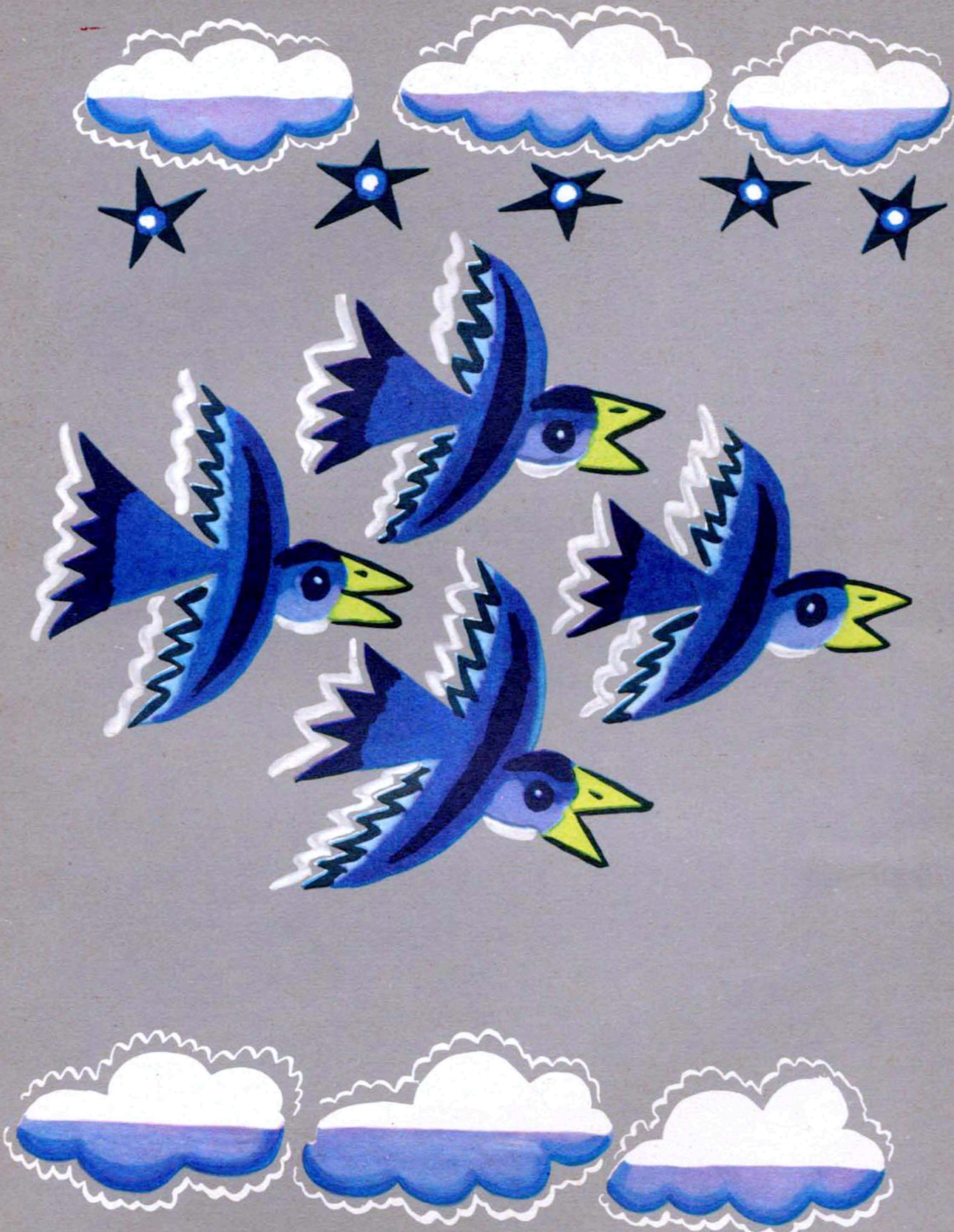
Н. Носов
АВАРИЯ
*На языке хинди*

N. Nosov
AN ACCIDENT
*In Hindi*

सोवियत संघ में मुद्रित









प्यारे बच्चो,

नजानू और उसके दोस्तों के रोचक कारनामे आपको ज़रूर पसन्द आये होंगे। नजानू की कहानियों के इस क्रम में फूलनगर के निवासियों के बारे में आप हमारे यहां से प्रकाशित होनेवाली आगामी पुस्तक में पढ़ेंगे :

**अपरिचितों के बीच**

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-001501-4

नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

११



# अपरिचितों के बीच



राडुगा प्रकाशन · मास्को



## नजानू की कहानियां

११

निकोलाई नोसोव

# अपरिचितों के बीच



*अनुवादक:*
*संगमलाल मालवीय*

*चित्रकार:*
*बोरीस कलऊशिन*

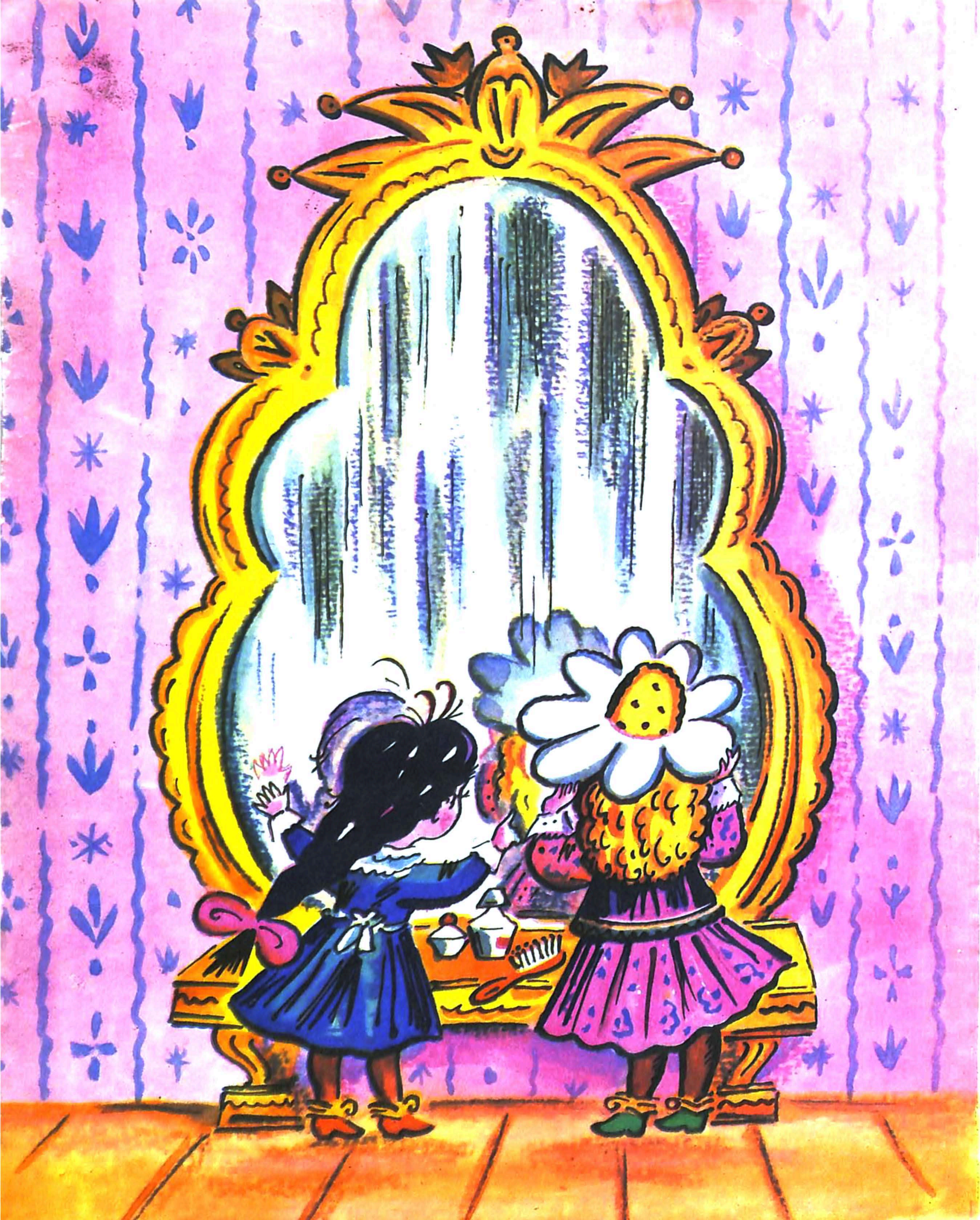
रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





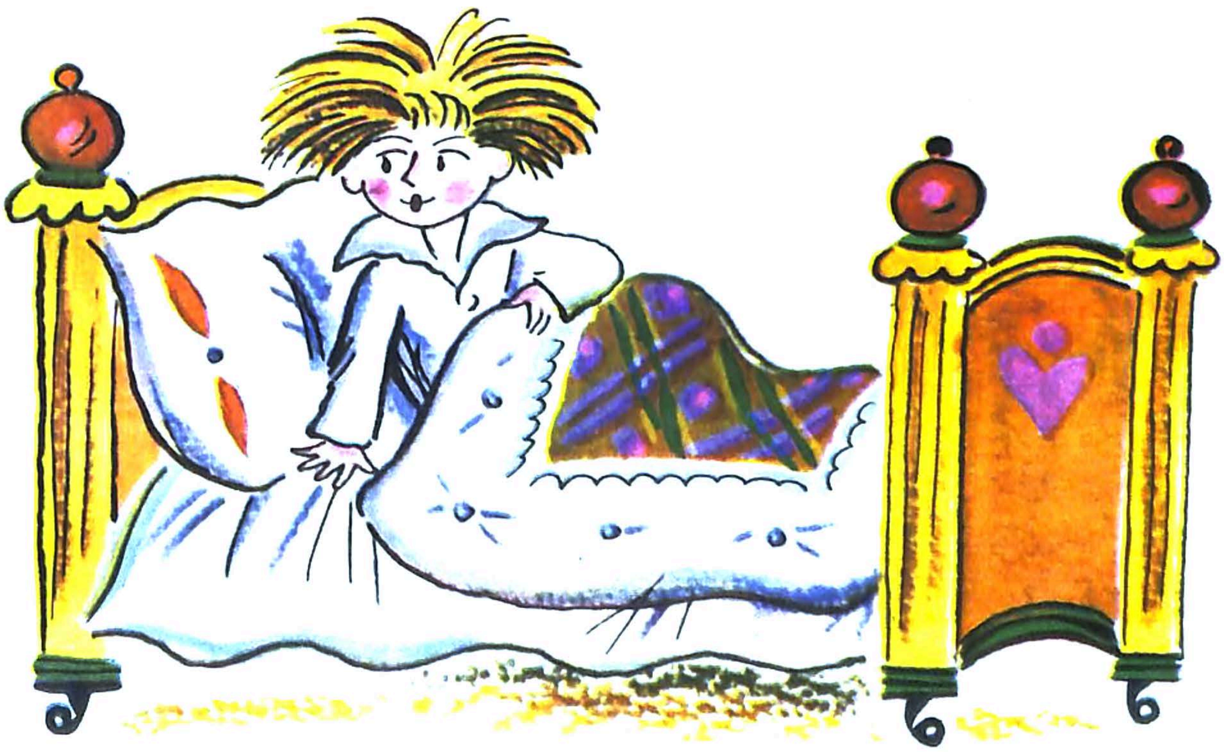
नजानू की आंख खुली, तो उसने ख़ुद को एक अनजान जगह में पाया। वह परोंवाले मुलायम गद्दे पर लेटा हुआ था। यह गद्दा इतना मुलायम था, जैसे फूलों की सेज हो। उसकी नींद किसी आहट से टूटी थी। उसने आंखें खोलकर चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी और देखा कि कमरा उसका अपना नहीं था। कोनों में नन्हे-नन्हे सोफ़े रखे हुए थे। दीवारों से लटके चित्रों और कालीनों पर तरह-तरह के फूल बने थे। खिड़की के पास एक गोल इकटंगी मेज़ रखी थी। उस पर कशीदाकारी के लिये रंग-बिरंगे धागों का ढेर दिख रहा था। मेज़ पर ही एक पिनकुशन था, जिसमें तरह-तरह की छोटी-बड़ी सूइयां चुभी हुई थीं, जैसे अपने कांटे उठाये हुए कोई साही हो। थोड़ी दूर पर लिखने की मेज़ रखी थी। उसके बग़ल में किताबों की आलमारी थी। सामनेवाले दीवार पर दरवाज़े के पास एक बड़ा सा आइना था। आइने के सामने दो छुटकियां खड़ी आपस में बातें कर रही थीं। उनमें से एक तो नीले रंग का चमकदार

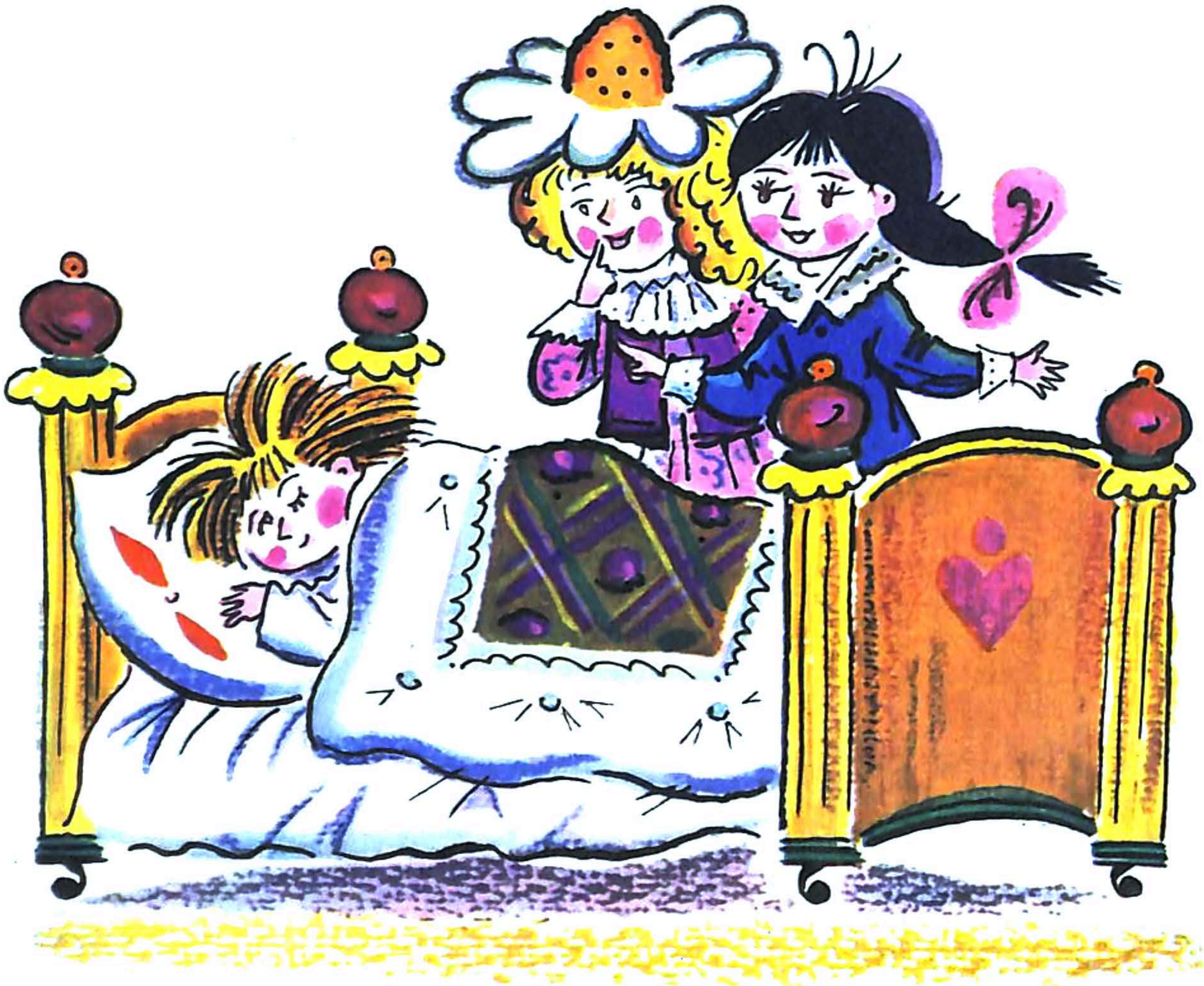


रेशमी फ़्रॉक पहने थी। कमर पर उसी रंग का रेशमी फ़ीता था, जो पीछे फूल की तरह बंधा हुआ था। उसकी आंखें नीली थीं, पीठ पर काली लम्बी चोटी लटक रही थी। दूसरी छुटकी नन्हे-नन्हे गुलाबी और बैंगनी फूलोंवाला रंग-बिरंगा फ़्रॉक पहने थी। उसके चमकदार सुनहरे बाल पीठ पर लहरा रहे थे। वह आइने के सामने एक टोपी पहनकर देख रही थी और गौरैया की तरह चहकती जा रही थी।

"कैसी रद्दी टोपी है! कैसे भी पहनो, जचती नहीं। मैं तो चौड़े छज्जेवाली टोपी बनाना चाहती थी, पर कपड़ा ही कम पड़ गया, संकरे छज्जे-वाली बनानी पड़ी। जब छज्जा संकरा होता है, तो चेहरा गोल-मटोल दिखने लगता है। यह सचमुच अच्छा नहीं लगता।"

"बहुत सज-संवर चुकी आइने के सामने! मुझसे बिलकुल बर्दाश्त नहीं होता जब लोग आइने के सामने सजने-संवरने लगते हैं," नीली आंखोंवाली छुटकी ने कहा।





"आख़िर आइना बनाया किसलिये गया है?" श्वेतकेशी ने जवाब दिया।

टोपी को बिलकुल पीछे खिसकाकर उसने सिर को पीछे किया और अकड़कर आंखें सिकोड़े आइने में देखने लगी।

नजानू को हंसी आने लगी। रोकते-रोकते भी मुंह से हंसने की आवाज़ निकल आयी। श्वेतकेशी यक़ायक़ आइने से दूर उछल खड़ी हुई और नजानू को सन्देह की नज़र से देखने लगी।

लेकिन नजानू ने आंखें मूंद लीं और सोने का बहाना किया। उसने सुना कि दोनों छुटकियां दबे पांव उसकी ओर बढ़ीं और कुछ दूरी पर ठहर गयीं।

"मुझे लगा कि उसने कुछ कहा है," नजानू ने फुसफुसाहट सुनी। "हो सकता है कि मुझे भ्रम ही हुआ हो... कब उसे होश आयेगा? कल से बेहोश पड़ा हुआ है।"

दूसरी आवाज़ में जवाब मिला :

"मधुमालती ने उसे जगाने से मना किया है। कहा है कि जब ख़ुद जग जाये, तो मैं उसे बुला लाऊं।"

"यह मधुमालती क्या बला है ?" नजानू ने सोचा, लेकिन उसी तरह पड़ा रहा ताकि उनको सन्देह न हो कि वह उनकी बातें सुन रहा है।

"कितना साहसी छुटका है !" फिर कोई फुसफुसाया। "देखो तो – ग़ुब्बारे पर उड़ने चला गया !"

नजानू ने सुना कि उसे साहसी कहा गया है, और उसके होंठ ख़ुद-ब-ख़ुद कानों तब लम्बे होने लगे। लेकिन उसने ऐन मौके पर मुस्कराहट रोक ली।

"मैं बाद में आऊंगी जब वह जग जायेगा," आवाज़ जारी रही, "मैं उससे उड़न ग़ुब्बारे के बारे में पूछना चाहती हूं। कहीं चोट से उसका सिर न फिर गया हो !"

"ठेंगा !" नजानू ने सोचा। "सिर मेरा ठीक-ठाक है।"

श्वेतकेशी विदा लेकर चली गयी। कमरे में सन्नाटा छा गया। नजानू आंखें मूंदे हुए देर तक कान खड़े किये लेटा रहा। अन्त में उसने एक आंख खोली और उसने देखा कि नीली आंखोंवाली छुटकी का सिर उसके ऊपर झुका हुआ है। छुटकी स्वागत मुद्रा में मुस्करायी और उंगली से धमकाकर बोली :

"आप क्या हमेशा इसी तरह सोकर उठते हैं ? पहले एक आंख खोलते हैं, फिर दूसरी ?"

नजानू ने सिर हिलाया और दूसरी आंख खोली।

"मतलब यह कि आप सो नहीं रहे हैं ?"

"नहीं, मेरी नींद अभी-अभी खुली है।"

नजानू और भी कुछ कहनेवाला था, पर छुटकी ने उसके होंठों पर उंगली रखते हुए कहा :

"चुप रहिये ! आपको बातें नहीं करनी चाहिये। आप बहुत बीमार हैं।"

"बिलकुल नहीं !"

"आपको कैसे मालूम ? क्या आप



कोई डाक्टर हैं?"

"नहीं।"

"देखा! और कहते हैं कि बीमार नहीं हैं। आपको चुपचाप लेटे रहना चाहिये, जब तक मैं डाक्टर को नहीं बुला लाती। आपका नाम क्या है?"

"नजानू। और आपका?"

"मेरा नाम नीलाक्षी है।"

"प्यारा सा नाम है," नजानू ने सराहना की।

"बहुत ख़ुशी हुई कि आपको मेरा नाम अच्छा लगा। आप बहुत सभ्य बालक हैं।"

नजानू का मुखड़ा ख़ुशी से खिल उठा। वह बहुत ख़ुश था कि उसकी तारीफ़ की गयी है, क्योंकि उसे शायद ही कोई सराहता था, ज़्यादातर सभी उसकी बुराई ही करते थे। छुटके आसपास नहीं थे और नजानू को इस बात का डर नहीं था कि छुटकी से बातें करने के लिये वे उसे चिढ़ायेंगे। इसीलिये वह नीलाक्षी से बेझिझक नम्रतापूर्वक बातें कर रहा था।





"और उसका क्या नाम है, दूसरी का?" नजानू ने पूछा।

"दूसरी कौन?"

"जिससे आप बातें कर रही थीं। सुन्दर सी थी, सुनहरे बालोंवाली।"

"अच्छा!" नीलाक्षी उछल पड़ी। "मतलब यह कि आप बहुत देर से जाग रहे हैं!"

"नहीं, मैं तो सिर्फ़ एक मिनट के लिये उठा था, फिर तुरन्त सो गया।"

"झूठ, बिलकुल झूठ!" नीलाक्षी ने सिर हिलाया और भौंहें चढ़ा लीं। "तो आपका कहना है कि मैं इतनी सुन्दर नहीं हूं?"

"क्या कहती हैं!" नजानू सहम गया। "आप भी सुन्दर हैं।"

"लेकिन कौन ज़्यादा सुन्दर है, मैं या वह?"

"आप... और वह। आप दोनों ही बहुत सुन्दर हैं।"

"आप बड़े भुद्दे हैं, पर मैं आपको माफ़ करती हूं," नीलाक्षी ने कहा। "आपकी सुन्दरी का नाम हिमपुष्पा है। आप उससे फिर मिलियेगा। बस, अब बहुत हो चुका। आपके लिये देर तक बातें करना नुकसानदेह है। चुपचाप

लेटे रहिये और बिस्तर से उठने की मत सोचिये। मैं मधुमालती को बुलाती हूं।"

"और यह मधुमालती कौन है?"

"मधुमालती हमारी डाक्टर हैं। वह आपका इलाज करेंगी।"

नीलाक्षी चली गयी। नजानू तुरन्त बिस्तर से उठ खड़ा हुआ और अपने कपड़े ढूंढ़ने लगा। वह जल्द ही भाग लेना चाहता था, क्योंकि वह जानता था कि डाक्टर लोग अपने मरीज़ों को कड़वी-कड़वी दवाएं पिलाते हैं, आयडिन की मालिश करते हैं, जिससे सारा बदन बहुत ज़ोर से पड़पड़ाने लगता है। कपड़े आसपास कहीं दिख नहीं रहे थे। तभी उसका ध्यान एक गुड़िया ने आकर्षित किया, जो नन्हे से बेंच पर दीवार के सहारे बैठी हुई थी।

नजानू की तुरन्त इच्छा हुई कि गुड़िया को तोड़कर देखा जाये कि उसके भीतर क्या है – रूई या बुरादा। अपने कपड़ों की बात वह भूल गया और चाकू ढूंढ़ने लगा। लेकिन इसी बीच उसकी नज़र आइने में अपने प्रतिबिम्ब पर पड़ी। उसने गुड़िया को फ़र्श पर फेंक दिया और आइने में अपनी शक्ल देख-देखकर मुंह बनाने लगा। जी भरकर देख चुकने के बाद बोला:

"वैसे तो मैं भी सुन्दर हूं, और मेरा चेहरा बहुत गोल भी नहीं है।"

दरवाज़े के बाहर से किसी के आने की आहट सुनायी दी। नजानू तुरन्त बिस्तर में दुबक गया और ऊपर से रज़ाई ओढ़ ली।

कमरे में नीलाक्षी ने क़दम रखे, उसके साथ एक दूसरी छुटकी भी थी, सफ़ेद लबादा पहने। उसके सर पर सफ़ेद कपड़े की टोपी थी, हाथ में भूरे रंग का एक छोटा सा बैग था। उसके लाल-लाल और फूले हुए गाल थे। उसकी भूरी आंखें मोटे चश्मे के पीछे से कड़ाई के साथ देख रही थीं। नजानू समझ गया कि यही मधुमालती है, जिसके बारे में नीलाक्षी ने बताया था।

मधुमालती ने नजानू के बिस्तर की तरफ़ स्टूल खिसकाया, उस पर अपना बैग रखा और सिर हिलाकर बोली:

"अरे, ये छुटके! हमेशा कोई न कोई शैतानी करते रहते हैं! अब ज़रा बताइये तो कि इस गुब्बारे पर उड़ने की आपको क्या ज़रूरत पड़ी थी? चुप रहिये, चुप रहिये! मुझे मालूम है कि आप क्या कहेंगे: अब फिर ऐसा नहीं करूंगा। सभी छुटके यही कहते हैं और बाद में फिर से नटखटपन करने लगते हैं।"

मधुमालती ने बैग खोला और कमरे में आयडिन या किसी और दवा की



गंध फैल गयी। नजानू डर के मारे अकड़ बैठ गया। मधुमालती उसकी तरफ़ मुड़कर बोली:

"उठिये, मरीज़ जी।"

नजानू बिस्तर से उठने लगा।



"खड़े होने की ज़रूरत नहीं, मरीज़ जी!" मधुमालती ने कड़ाई के साथ कहा। "मैंने तो सिर्फ़ बैठने के लिये कहा था।"

नजानू ने कन्धे उचकाये और बिस्तर पर बैठ गया।

"कन्धे उचकाने की ज़रूरत नहीं, मरीज़ जी," मधुमालती ने टिप्पणी की। "जीभ दिखाओ तो।"

"किसलिये?"

"दिखाओ, दिखाओ। यह ज़रूरी है।"

नजानू ने जीभ बाहर निकाली।

"'आ' कहिये।"

"आ-आ-आ," नजानू ने ज़बान बाहर निकाली।

मधुमालती ने अपने बैग से स्टेथिस्कोप निकाला और नजानू के सीने से लगाकर जांच करने लगी:

"ज़रा गहरी सांस लीजिये।"

नजानू ने स्टीम इंजन की तरह नाक सुड़की।

"अब सांस रोके रहिये।"

नजानू ने हंसी पर काबू पाते हुए सांस खींची।

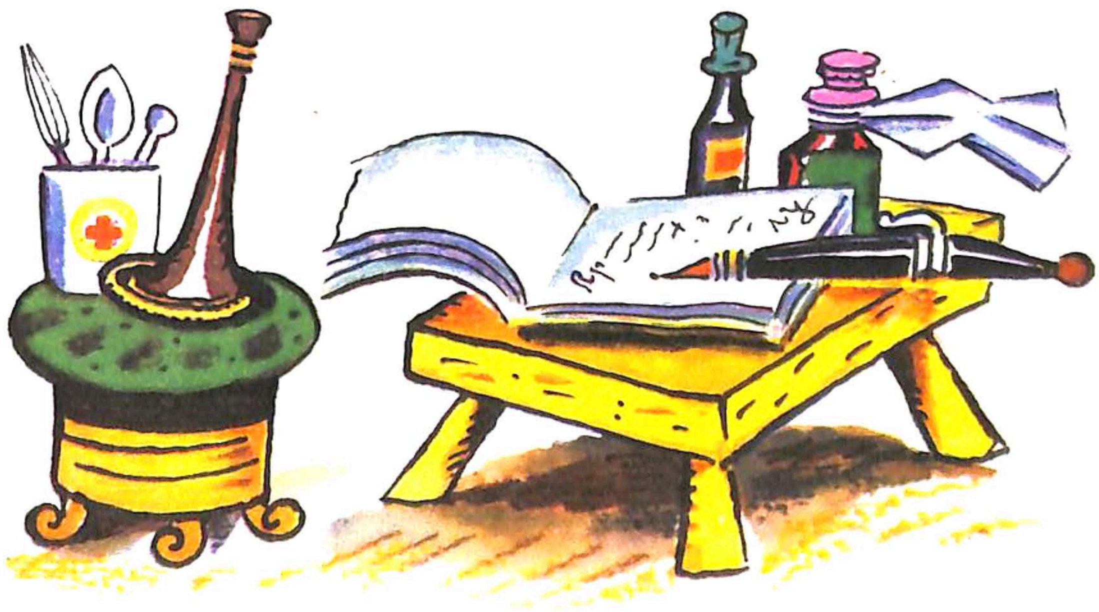
"आप हंस क्यों रहे हैं, मरीज़ जी? मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही है!"

"यह कैसे मुमकिन है कि मैं बिलकुल सांस न लूं!" नजानू ने खीसें निपोड़ते हुए पूछा।

"सचमुच आप सांस एकदम नहीं रोक सकते, लेकिन क्षण भर के लिये तो थाम ही सकते हैं।"

"ठीक है," नजानू ने सहमति प्रगट की और सांस रोक ली।

डाक्टरी मुआयना कर लेने के बाद मधुमालती मेज़ पर बैठकर नुसखा लिखने लगी।



"आपके मरीज़ के कन्धे पर नील पड़ गया है," उसने नीलाक्षी से कहा। "दवाखाने में जाकर मधु का प्लास्टर ले आओ। इसे काटकर मरीज़ के कन्धे पर चिपका दो। और उसे बिस्तर से उठने मत दो। अगर वह बिस्तर से उठेगा तो आपके सारे बर्तन तोड़ डालेगा और किसी का माथा भी फोड़ देगा। छुटकों के साथ ज़रा सख़्ती करना ज़रूरी है।"

मधुमालती ने स्टेथिस्कोप उठाकर बैग में रखा और एक बार फिर सख़्ती से नजानू की तरफ़ देखकर चली गयी।

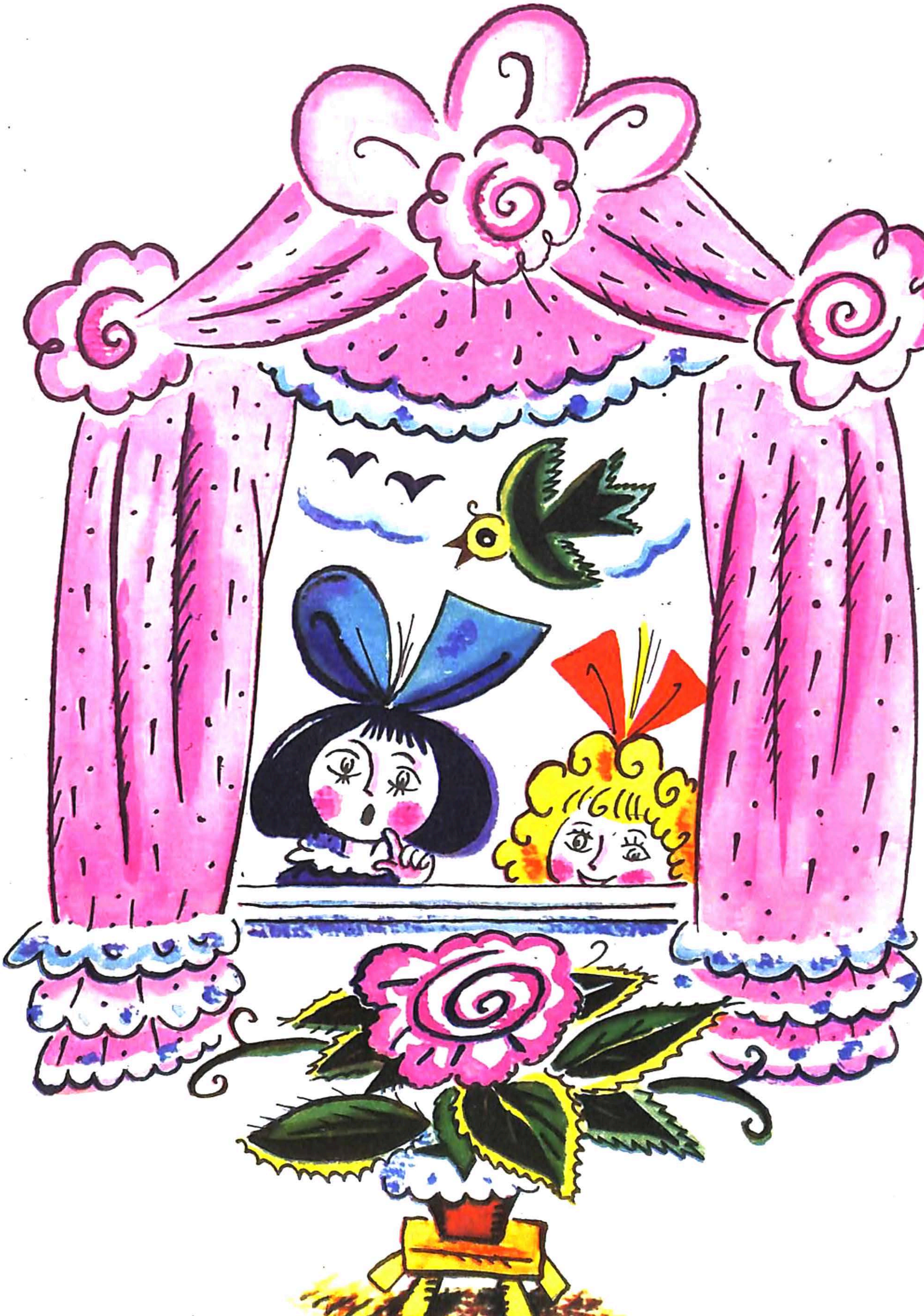
नीलाक्षी ने मेज़ पर से नुसखा उठाया और बोली:

"सुन लिया आपने? आपको लेटे रहना है।"

उत्तर में नजानू ने मुंह लटका लिया।

"मुंह बनाने की ज़रूरत नहीं है। और हां, अपने कपड़े ढूंढ़ने की कोशिश मत कीजियेगा क्योंकि मैंने उन्हें अच्छी तरह छिपा दिया है," नीलाक्षी ने कहा और दवा का नुसखा हाथ में लेकर कमरे से बाहर निकल गयी।



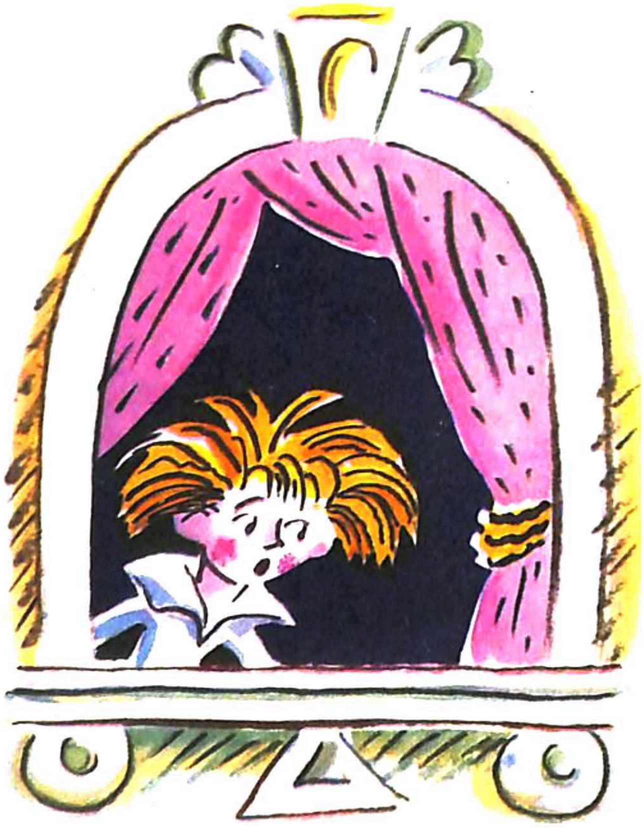


**Н. Носов**
НА НОВОМ МЕСТЕ
*на языке хинди*

**N.Nosov**
IN A STRANGE PLACE
*in Hindi*

सोवियत संघ में मुद्रित









प्यारे बच्चो,

नजानू और उसके दोस्तों के रोचक कारनामे आपको ज़रूर पसन्द आये होंगे। नजानू की कहानियों के इस क्रम में फूलनगर के निवासियों के बारे में आप हमारे यहां से प्रकाशित होनेवाली आगामी पुस्तकों में पढ़ेंगे:

नये दोस्त

मेज़ पर गपशप

ISBN 5-05-000982-0

ISBN 5-05-001502-2

# नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव



१२

# नये दोस्त

रादुगा प्रकाशन · मास्को



# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

१२

# नये दोस्त

*अनुवादक:*
**संगमलाल मालवीय**

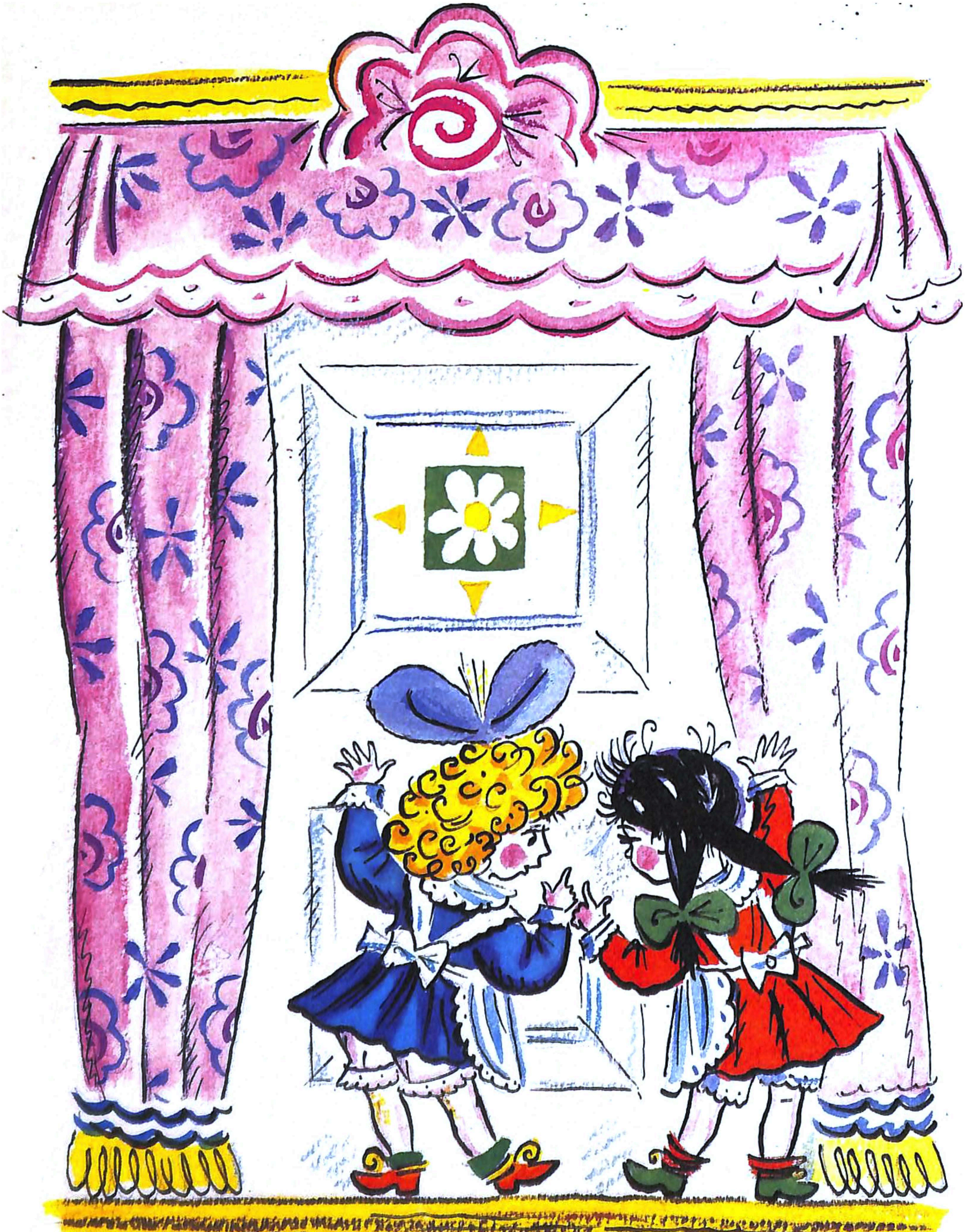
*चित्रकार:*
**बोरीस कलऊशिन**

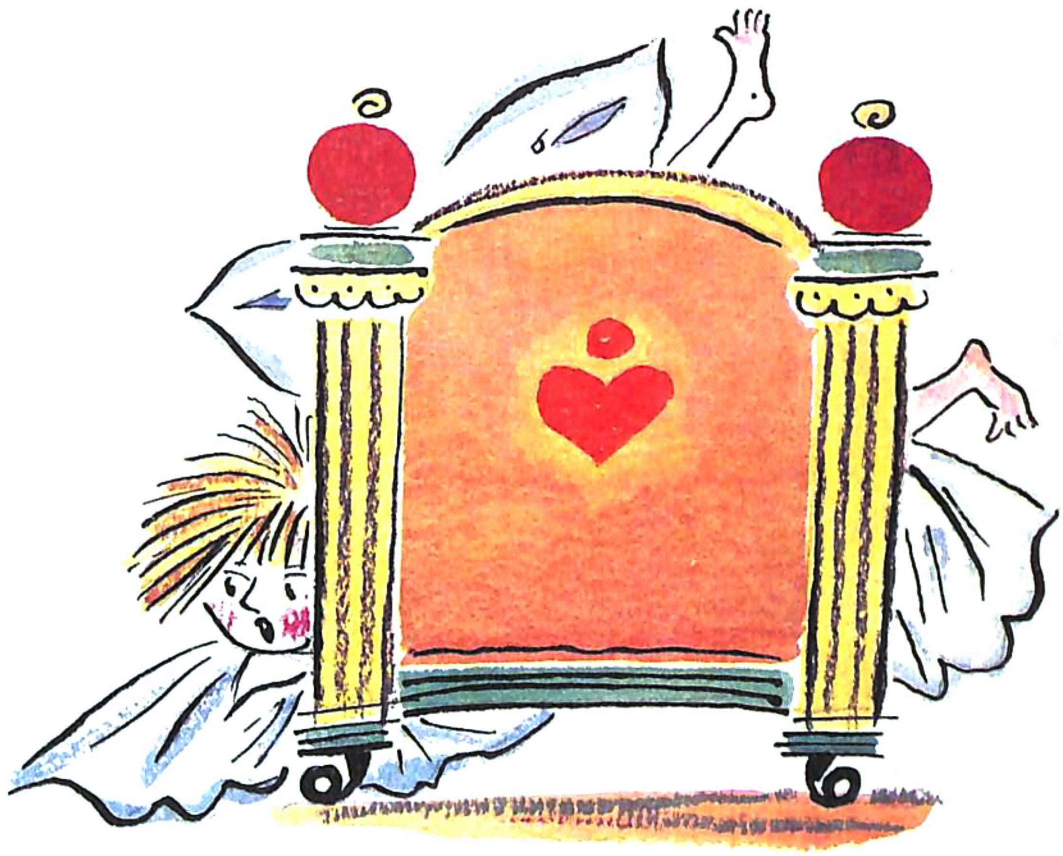



राादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.





नीलाक्षी के जाने के बाद नजानू थोड़ी देर बिस्तर पर लेटा रहा। फिर उसे गुड़िया का ख़्याल आया। आख़िर किस चीज़ की बनी है यह गुड़िया? अभी वह उठने ही वाला था कि उसे दरवाज़े के पीछे पैरों की आहट लगी। कुछ फुसफुसाती आवाज़ें सुनाई पड़ रही थीं:

"कहां है वह?"

"अन्दर।"

"क्या कर रहा है?"

"बिस्तर पर लेटा है।"

"मर गया?"

"नहीं, ज़िन्दा है।"

"मुझे भी देखने दो।"

"अभी ठहरो।"

नजानू ने दरवाज़े की तरफ़ मुड़कर देखा, लगा कोई उसे छिपकर देख रहा है।

"मुझे भी तो देखने दे। लोभी कहीं की!" फिर कोई फुसफुसाया।

"तुमने मुझे लोभी कहा। तुम्हारी—ये हिम्मत! जाओ नहीं हटती!"

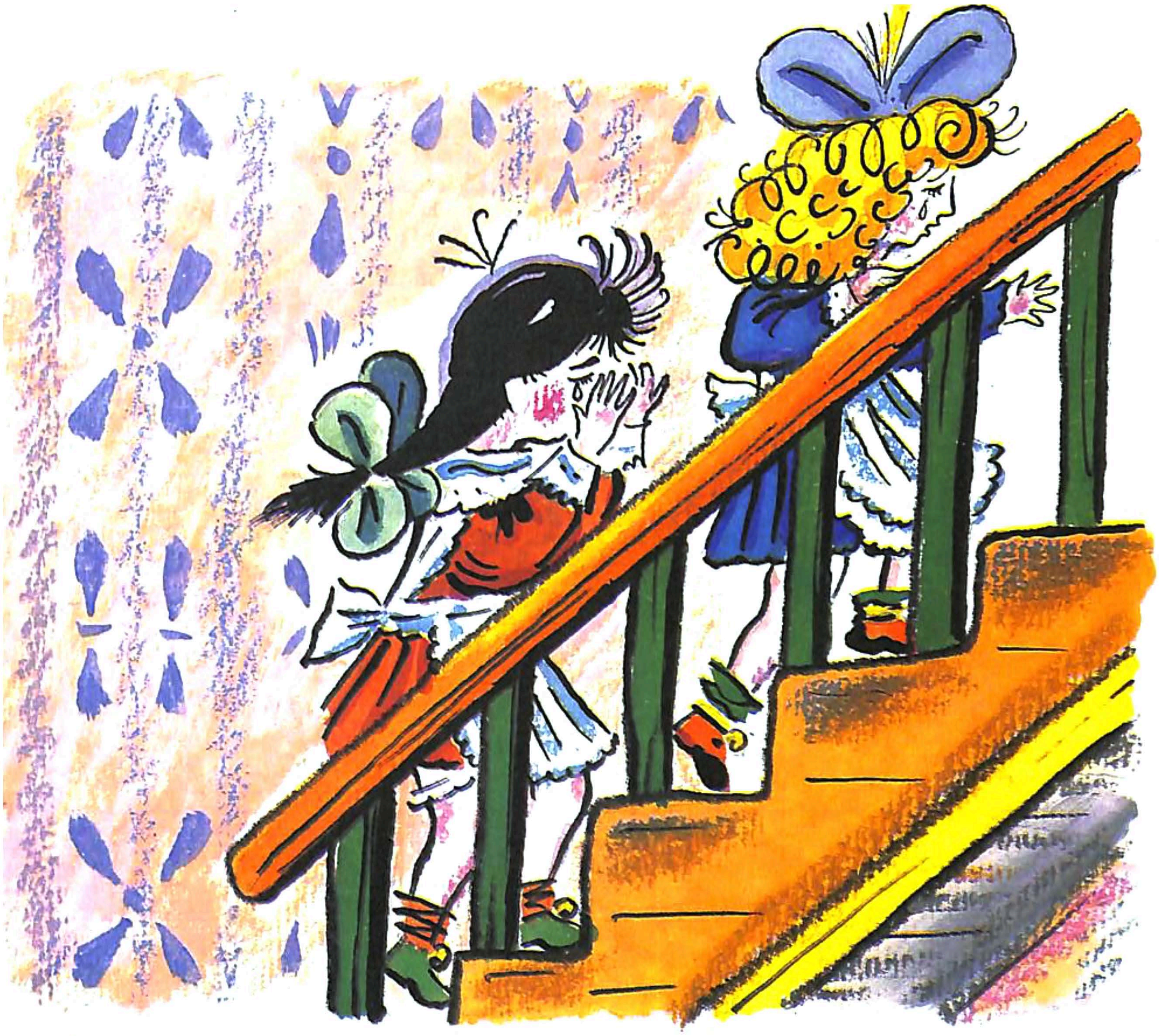
इस बार झगड़ने की आवाज़ सुनाई दी।

"देखो, धक्का न दो," एक ने गुस्से से कहा। "तुमने एक और धक्का दिया तो चोटियां नोच लूंगी!"

"तो क्या मैं तुम्हें छोड़ दूंगी। ऐसी दुलत्तियां झाड़ूंगी कि होश उड़ जायेंगे।"

नजानू ने यह देखना चाहा कि बाहर झगड़ कौन रहा है। उसने बिस्तर से कूदकर जल्दी से दरवाज़ा खोल दिया। दरवाज़ा भड़ाक से किसी चीज़ से जा टकराया।

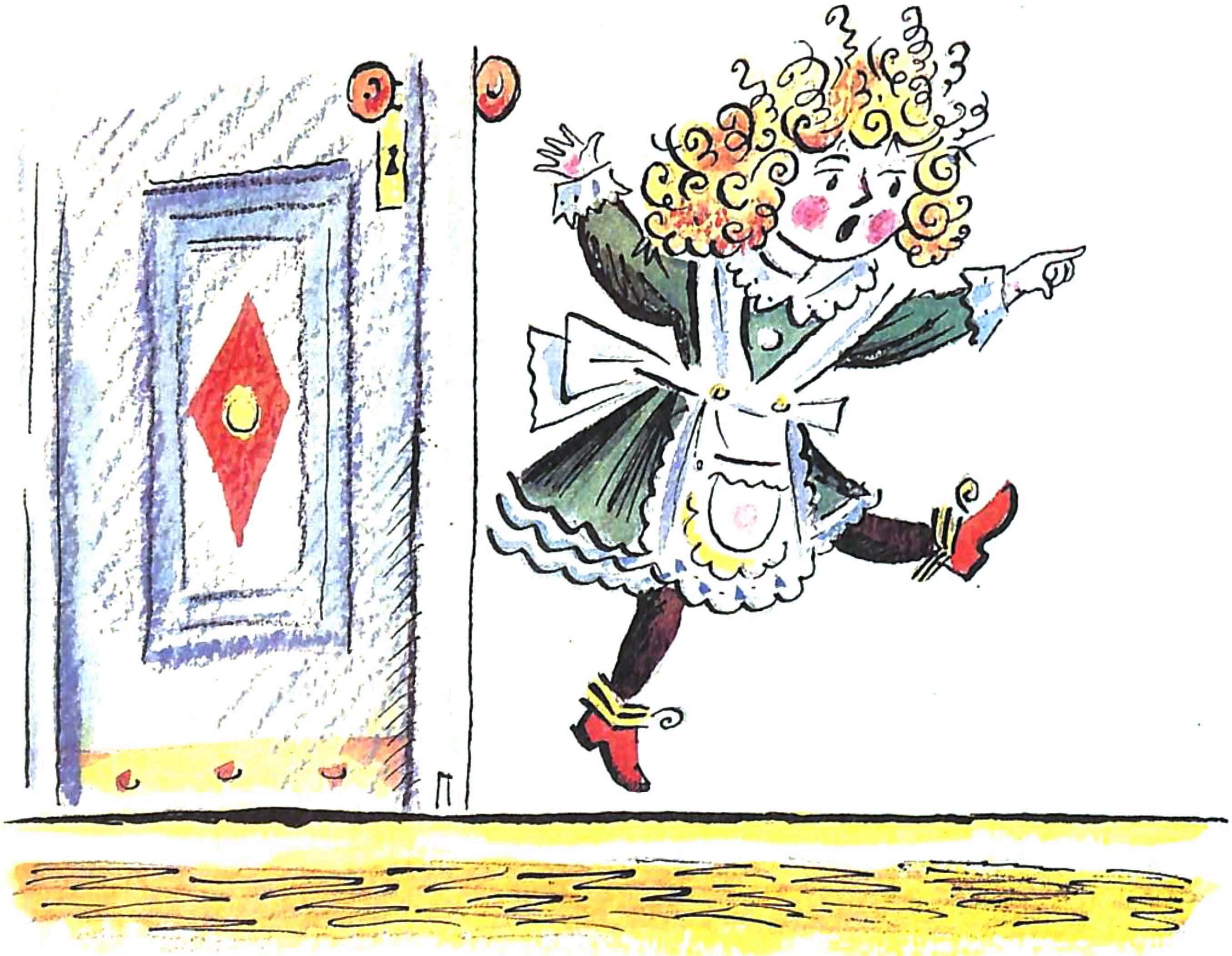




"ओह !" सिर पकड़े हुए दो छुटकियां उछलकर एक कोने में पहुंच गईं और सहमी-सहमी नजानू को देखने लगीं। वे दोनों चाबीवाली गुड़ियों की तरह जल्दी-जल्दी पलकें झपकाने और रोने लगीं। इसके बाद वे मुड़कर दरवाज़े के दाहिनी ओर संकरी सीढ़ी पर चढ़ने लगीं।

"आ-आ-आ !" नन्ही चोटियोंवाली छुटकी ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी, उसकी चोटियां इधर-उधर लहरा रही थीं।

"ऊ-ऊ-ऊ !" दूसरी भी उसी तरह रो रही थी, जिसके सिर पर आसमानी रंग का फूलदार रिबन बंधा हुआ था।



नजानू ने अपनी गुद्दी खुजला बड़बड़ाया :

"लो, हो गया न क़िस्सा! शायद उन्हें ज़ोर से चोट लगी है।"

वह डरा कि इस अपरिचित घर में कहीं और हंगामा न हो जाये, इसलिये वह बिस्तर में दुबककर झपकी लेने लगा। लेकिन दरवाज़े के पीछे क़दमों की आहट फिर सुनाई दी।

दरवाज़ा खुला और एक दूसरी छुटकी अन्दर झांकी। छोटा-सा शोख़ चेहरा, घुंघराले बाल, नुकीली नाक और शरारत भरी आंखें।

"लड़ाकू! लड़ाकू!" वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी।

नजानू बिस्तर पर उचककर बैठ गया। दरवाज़ा फिर भड़ाक से बन्द हुआ और

पैरों की फटफटाहट सुनाई दी, यानी कि वह छुटकी रफ़ूचक्कर हो गई। नजानू ने कन्धे उचकाये और उपेक्षा से बड़बड़ाया:

"हाय री, शोख़ छुटकी!"

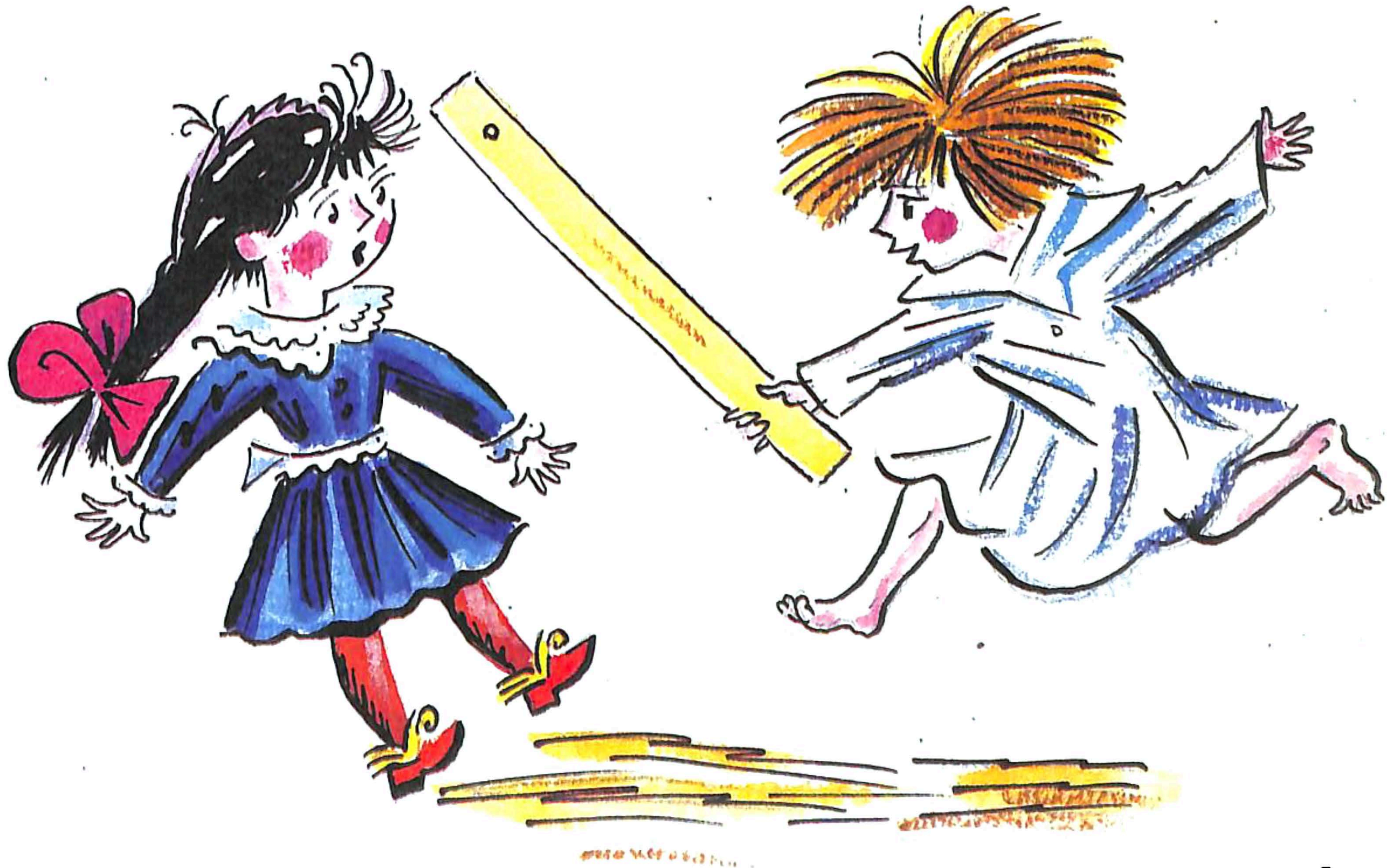
वह तकिये पर सिर टिकाए झपकियां लेने लगा कि दरवाज़ा फिर से खुल गया और कमरे में फिर से घुंघराले बालोंवाली छुटकी आ झांकी।

"लड़ाकू! लड़ाकू!" वह चिल्लाई। "हा-हा-हा!"

और दरवाज़ा फिर झट से बन्द हो गया। नजानू बिस्तर से कूदा और गलियारे की ओर लपका, लेकिन वहां कोई न था।

"ठहरो ज़रा! अभी ठीक करता हूं," नजानू गुस्से से बड़बड़ाया।

उसने मेज़ पर पड़ा लकड़ी का स्केल उठाया और दरवाज़े की आड़ में छिप गया। उसे ज़्यादा इन्तज़ार न करना पड़ा। गलियारे में फिर पदचाप सुनाई दी। नजानू स्केल



ऊपर उठाए मौके की तलाश में खड़ा था। दरवाज़ा खुला और लकड़ी के स्केल ने अपना कमाल कर दिखाया। लेकिन... यह तो नीलाक्षी थी। स्केल उसके माथे से जा टकराया।

"उफ़!"

नीलाक्षी ने अपना माथा पकड़ लिया।

"आपने मुझे स्केल से क्यों मारा?" वह ज़ोर से चिल्लाई। "मेरे माथे पर गुमटा निकल आयेगा।"

"शायद कुछ नहीं होगा," नजानू ने सकुचाते और स्केल घुमाते हुए कहा।

"नहीं, नहीं! शायद आप नहीं जानते कि मैं कितनी नाजुक हूं। भाई, मैं तो चिड़िया के पंख से भी ज़ख़्मी हो जाती हूं, जिस्म नीला पड़ जाता है।"

"तो लाइये, मैं आपके माथे पर प्लास्टर चिपका दूं!" नजानू ने कहा। "दवा की दुकान से आप प्लास्टर लाई हैं न?"

"मैं आपके लिये लाई हूं।"

"हम दोनों के लिये काफ़ी होगा," नजानू ने जवाब दिया।

उसने कैंची उठाई और प्लास्टर के चार टुकड़े कर डाले।

"जल्दी!" नीलाक्षी ने कहा। "यहां, इस जगह!"

उसने माथा झुकाते हुए उंगली से इशारा किया। लेकिन नजानू ने चोट पर प्लास्टर तिरछा चिपकाया, उसे उचाड़ना पड़ा।

"संभालकर उचाड़िये न," नीलाक्षी चिल्लाई। "भाई, बाज आई इस मुए प्लास्टर से! ऐसे तो सारा माथा ही मैला हो जायेगा।"

"तो लीजिये न, ठीक हो गया," प्लास्टर चिपकाकर नजानू ने कहा।

नीलाक्षी आईने की ओर लपकी।

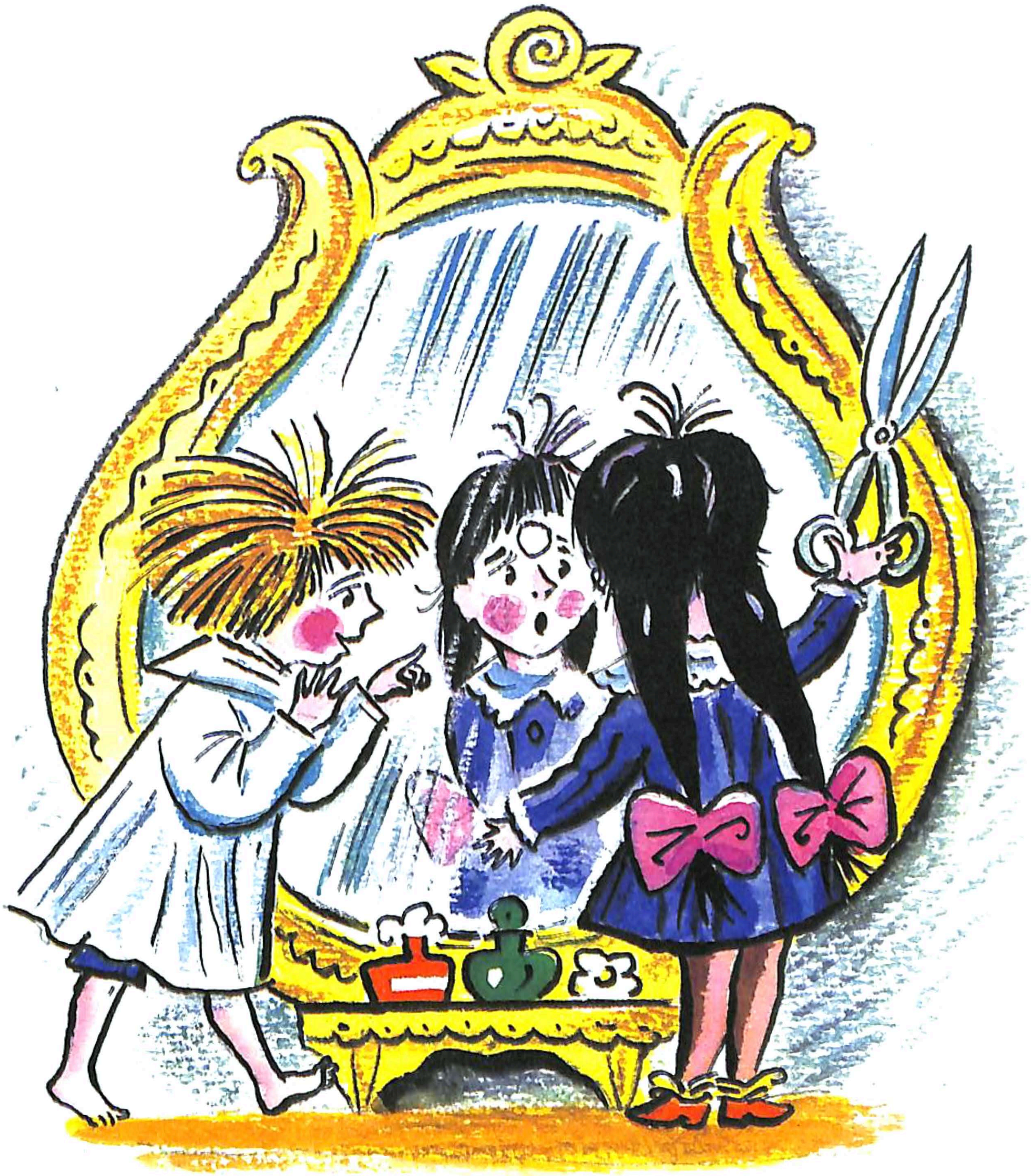
"क्या ख़ूब! यह तो बढ़िया चीज़ है न? इसे देखकर कोई क्या कहेगा? अच्छा, अब अपना कन्धा दिखाओ। तुम्हें कहां चोट लगी है?"

नीलाक्षी नजानू के कन्धे पर प्लास्टर चिपकाने लगी।

"माफ़ कीजियेगा, दरअसल मैं आपको चोट नहीं पहुंचाना चाहता था।"

"तब किसे?"

नजानू ने घुंघराले बालोंवाली छुटकी के बारे में बताना चाहा। लेकिन उसे शंका थी कि कहीं यह कोरी गप्प न मान ली जाये।



"अजी, किसी को नहीं!" नजानू ने कहा। "सच कहूं, मैं इसे आज़माना चाहता था। मारकर देखना चाहता था, यह स्केल मज़बूत है या नहीं?"

"आप सभी छुटके एक जैसे होते हैं। सिर्फ़ टकराने या टीप मारने की सोचते हैं।

पर जब आपकी ख़बर ली जाती है, तो बड़ा बुरा लगता है। आप मुस्करा क्यों रहे हैं? तो आपको मज़ा आ रहा है कि मेरे माथे पर प्लास्टर चिपका है न?"

वह फिर आईने के सामने आकर खड़ी हो गई।

"अजी, इसे तो देखकर बड़ी हंसी आती है, चिपका है माथे पर एक चौकोर टुकड़ा!"

"तो आप इसे गोल काटकर चिपका लीजिये," नजानू ने सलाह दी।

नीलाक्षी ने प्लास्टर उचाड़ा, उसे कैंची से काटकर गोल बनाया और फिर माथे पर चिपका लिया।

"अब ठीक है न?" उसने नजानू की ओर मुड़कर पूछा।

"बहुत ख़ूब, आप पर तो यह फब रहा है," नजानू ने पुष्टि की।

नीलाक्षी ने आंखें दबाकर आईने में देखा।

"अब मेरी पतलून-क़मीज़ तो वापस कर दीजिये न," नजानू ने कहा।

"चलिये, हाथ-मुंह धो लीजिये, कपड़े तो उसके बाद ही मिलेंगे।"

नीलाक्षी ने नजानू को ग़ुसलख़ाने तक पहुंचाया। दीवार पर टंगे तौलिये, मंजन, ब्रश और साबुन दिखाकर समझाया।



"तो यह रहा ब्रश और मंजन। चलिये, झट से दांत साफ़ कीजिये," नीलाक्षी ने कहा।

"मैं मंजन नहीं करूंगा!" नजानू बड़बड़ाया।

"क्यों?"

"कड़वा है!"

"भाई, यह कोई नाश्ता तो नहीं, मंजन है।"

"कुछ भी हो। इससे जीभ जल जाती है।"

"थोड़ी देर के लिए न।"

नजानू ने ब्रश लिया और बेमन से मंजन करने लगा। एक-दो बार ब्रश रगड़ने के बाद उसने मंजन थूक दिया और बुरा-सा मुंह बनाया। फिर उसने मुंह पानी से धोकर साबुन से हाथ साफ़ किये और साबुन शेल्फ़ पर रखकर वह चेहरे पर पानी के छींटे मारने लगा।

"ऐसे नहीं, साबुन से," नीलाक्षी ने कहा।

"भड़ में जाये साबुन!" नजानू ने कहा। "वह तो आंख में लगता है।"





"सोच लो," नीलाक्षी ने ज़रा सख़्ती से कहा। "यूं तो आपके कपड़े नहीं मिलेंगे।"

आख़िर नजानू करता तो क्या? उसने चेहरे पर साबुन लगाया और झटपट उसे पानी से धोने लगा।

"बाप रे बाप! कित्ता ठंडा पानी है!" वह कांपते हुए बोला।

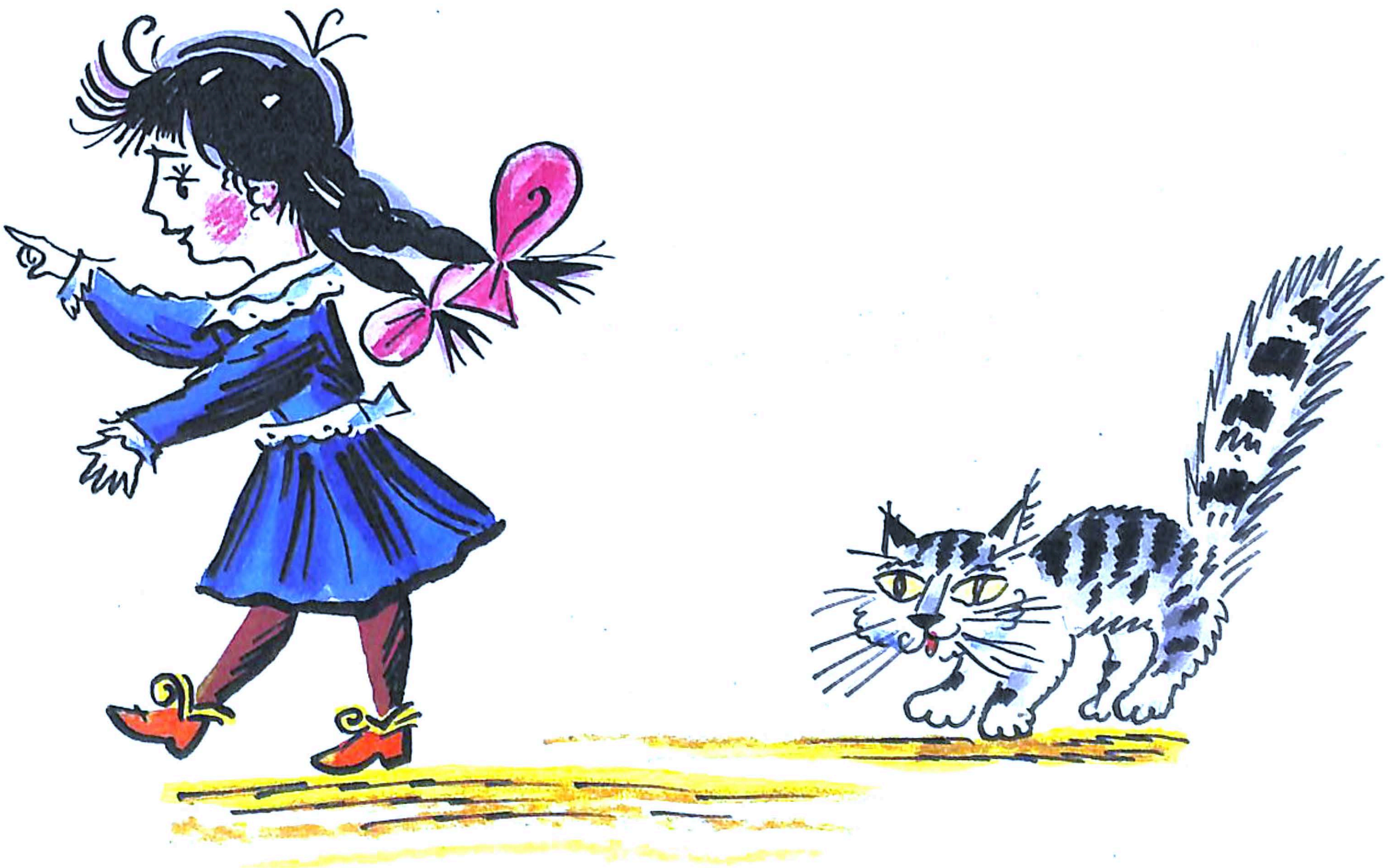
नजानू ने किसी न किसी तरह ठंडे पानी से चेहरा धो ही डाला और उसने आंखें खोले बिना अपनी बांहें फैलाकर दीवार पर कुछ टटोलने लगा।

नीलाक्षी ने अपनी हंसी को रोकते हुए नजानू की ओर देखा।

"आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?"

"त-तौलिया," ठंड से कंपकंपाते हुए नजानू ने कहा।

"आप आंखें मूंदकर तौलिया ढूंढ़ते हैं? अरे, आंखें तो खोलिये न।"



"किसलिये? यूं ही आंखों में साबुन लग रहा है।"
"आप उसे ठीक से धो लें।"



नीलाक्षी ने दीवार पर टंगे तौलिये को उठाया और नजानू की ओर बढ़ा दिया। नजानू ने अच्छी तरह चेहरा पोंछने के बाद ही अपनी आंखें खोलीं।

"यह हुई न बात! हो गये साफ़-सुथरे और सुंदर!" नीलाक्षी ने तौलिये पर जमी मैल को देखते हुए कहा: "हां, एक बात और! इस बार मैंने आपके साथ रियायत की है, अगली बार सफ़ाई का ज़रा ज़्यादा ख़्याल रखना पड़ेगा। समझ गये न?"

और तब उसने नजानू के कपड़े लाकर दिये।

"कपड़े पहनकर ऊपर आओ। नाश्ता तैयार है। भूख तो लगी है न?"

"अजी, पेट में चूहे कूद रहे हैं," नजानू ने कहा। "मैं इस समय एक समूचा हाथी खा जाऊंगा!"

"हाय री भूख! तब फिर देर क्या है? जल्दी आओ! आपका इन्तज़ार है।"



Н. Носов

НОВЫЕ ЗНАКОМЫЕ

*На хинди*

N. Nosov

NEW FRIENDS

*In Hindi*



Перевод сделан по книге:
Н. Носов. Приключения Незнайки и его друзей. М. „Дет. лит." 1958 г.
Для дошкольного возраста.


सोवियत संघ में प्रकाशित





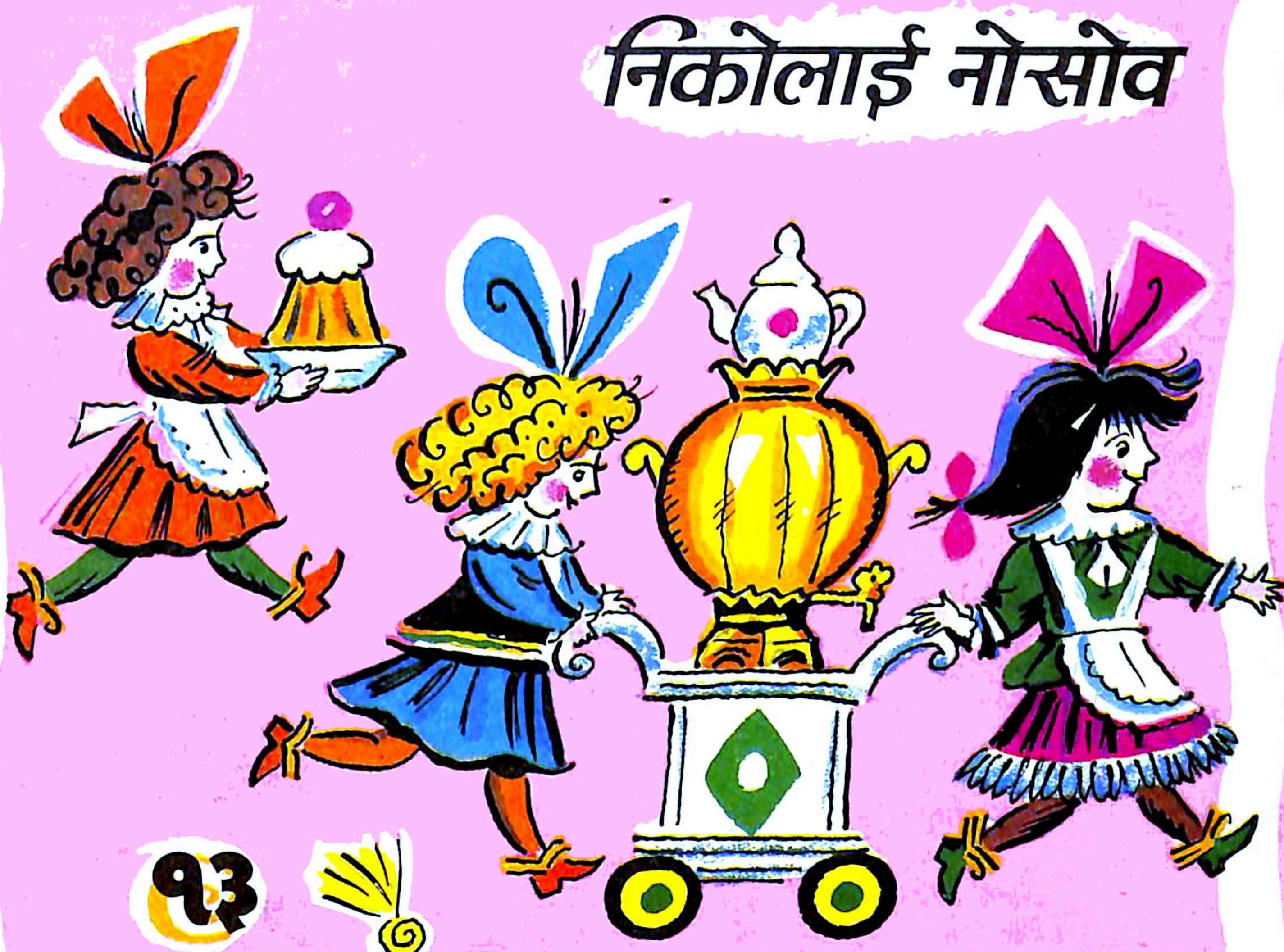
अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इस पुस्तक में पढ़ सकते हैं:

**मेज़ पर गपशप**

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002109-X

# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव



१३



# मेज़ पर गपशप

राडुगा प्रकाशन · मास्को



# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

१३

# मेज़ पर गपशप

अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन

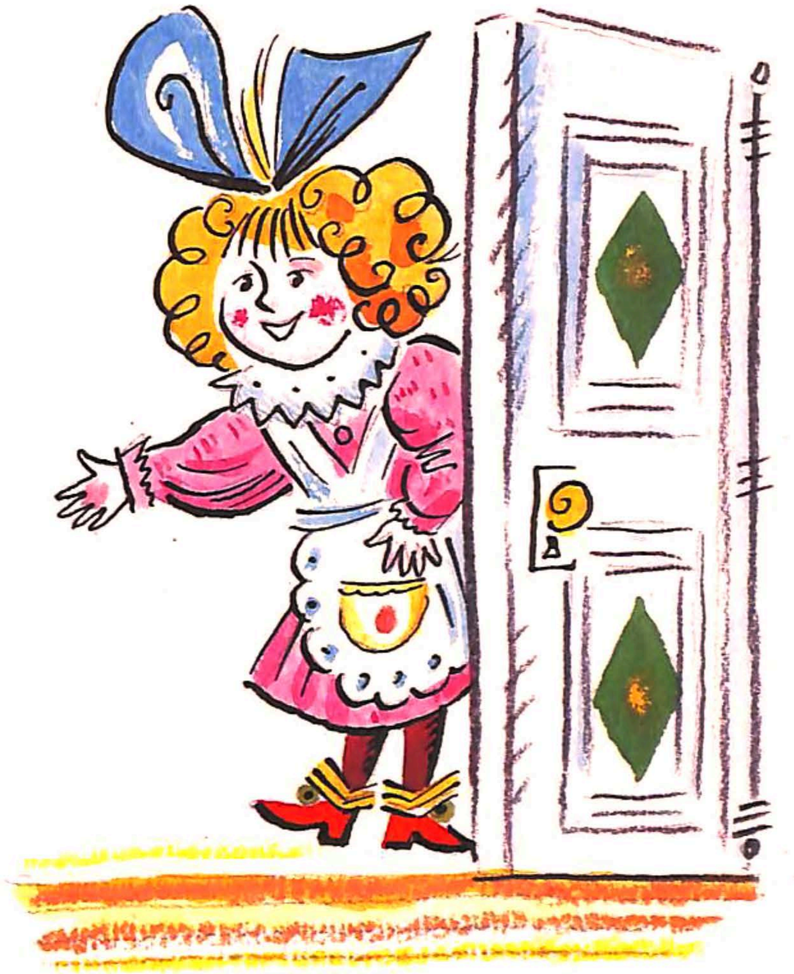


रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर 302001





नजानू ने झट से कपड़े पहने और लकड़ी की चरमराती सीढ़ियों पर चढ़कर दूसरी मंज़िल पर पहुंचा। यह कमरा नीचेवाले से छोटा, लेकिन ज़्यादा आरामदायक था। दो अर्धगोलाकार खिड़कियों पर ख़ूबसूरत परदे लहरा रहे थे। खिड़कियों के बीचवाला दरवाज़ा बरामदे की ओर खुलता था। कमरे के मध्य में एक मेज़ पर तरह-तरह की खाने की वस्तुएं – केक, पेस्ट्री, मुरब्बे, कचौरियां, अख़रोट वग़ैरह तश्तरियों में सजे हुए थे। तरह-तरह की चीज़ों से सजी मेज़ को देखते ही नजानू की नज़र फिसलने लगी।

इसी बीच सिर पर बंधे फूलदार रिबन और चोटियोंवाली छुटकियां चाय उड़ेल रही थीं। घुंघराले बालोंवाली छुटकी सेब की जेली लेकर आ रही थी। नीलाक्षी ने अपनी सहेलियों से नजानू का परिचय कराया। चोटियोंवाली छुटकी का नाम था श्वेता, रिबनवाली का – जेता और घुंघराले बालोंवाली छुटकी को मिट्ठू कहते थे। नजानू झट से मेज़ पर बैठना ही चाहता था कि दरवाज़ा खुला और कमरे में चार छुटकियां और आ पहुंचीं। नीलाक्षी ने इन सहेलियों का भी परिचय नजानू से कराया :

"और ये हैं हमारी पड़ोसिनें – डेज़ी, पिन्की, रोज़ा और मिली।" नीलाक्षी ने कहा।

नजानू अब तक छुटकियों से घिर चुका था।

"क्या आप गुब्बारे में उड़कर यहां आए हैं?" श्यामकेशी मिली ने पूछा।

"बेशक, गुब्बारे में," नजानू ने रौब मारते हुए कहा, लेकिन एक नज़र मेज़ पर थी।

"यूं उड़ने में आपको डर नहीं लगा?" मोटी-सी रोज़ा ने पूछा।

"ऐसा डर कि बस!.. अजी, नहीं, ज़रा भी नहीं!" नजानू ने जवाब दिया।

"आप कितने साहसी हैं! मैं तो किसी क़ीमत पर गुब्बारे में न उड़-ती!" पिन्की ने कहा।

"कहां से आए हैं आप?"

"फूलनगर से।"

"कहां है यह नगर?"

"वहां," अनिश्चित दिशा में हाथ हिलाकर नजानू ने कहा। "खीरे-वाली नदी के किनारे।"

"मैंने तो इस नदी का नाम ही नहीं सुना," मिली ने कहा। "बहुत दूर होगी शायद?"

"बहुत दूर," नजानू ने सहमति प्रगट की।

"आइए, बैठिए, चाय ठण्डी हो रही है," नीलाक्षी ने मेहमानों से कहा।

नजानू को दुबारा याद दिलाने की ज़रूरत न पड़ी। पलक झपकते ही वह मेज़ पर बैठ गया। और देखते ही देखते केकों, पेस्ट्रियों और बिस्कुटों की शामत आ गई। नजानू इन्हें ठूंस-ठूंसकर मुंह में भरने लगा। लेकिन छुटकियों ने सिर्फ़ मुंह जूठा कर लिया। वे तो नजानू से गुब्बारे के बारे में ढेर-सी बातें जानने की इच्छुक थीं।

"आख़िर इस गुब्बारे का आविष्कार किसने किया?" मिट्ठू ने पूछा।

"मैंने!" जल्दी-जल्दी जबड़े चलाते और मुंह में ठूंसी केक को ख़त्म करते हुए नजानू ने कहा।

"आप क्या कह रहे हैं?! सचमुच आपने ही?" सारी छुटकियां उसके और क़रीब आ गईं।

"हां, हां, यक़ीन करें! क़सम खाता हूं!" नजानू ने अस्पष्ट स्वर में कहा – उसके गले में केक अटक जो गयी थी।

"अहहा! कित्ते मज़े की बात है! कृपया विस्तार से सुनाइए न। कैसे हुआ यह सब?" रोज़ा ने पूछा।

"अरे, इसमें सुनाने की बात ही क्या है?" नजानू ने कंधे उचकाते हुए कहा। "सीधी-सादी बात है। बहुत दिनों से हमारे यहां के छुटके तंग



करते थे कि मैं कोई नया आविष्कार करूं। अक्सर वे कहते: 'भाई! कुछ सोचिए न, अक़्ल दौड़ाइए न?' और मैं कहता: 'भाइयो, मैं ऊब चुका हूं। ख़ुद ही सोचो, अक़्ल दौड़ाओ।' वे कहते: 'यह आप क्या कहते हैं? हमारी अक़्ल तो चरने गई है। एक आप ही बुद्धिमान हैं।' 'ठीक है,' मैंने कहा, 'कुछ करना ही पड़ेगा।' और मैंने सोचना शुरू किया।"

नजानू ध्यानमग्न-सा पेस्ट्री खाने लगा। छुटकियां अधीरता से उसे देख रही थीं। जब यह पेस्ट्री ख़त्म हो गई तो उसने एक और पेस्ट्री की ओर हाथ बढ़ाया। इस बार श्वेता ने ख़ामोशी तोड़ते हुए कहा:

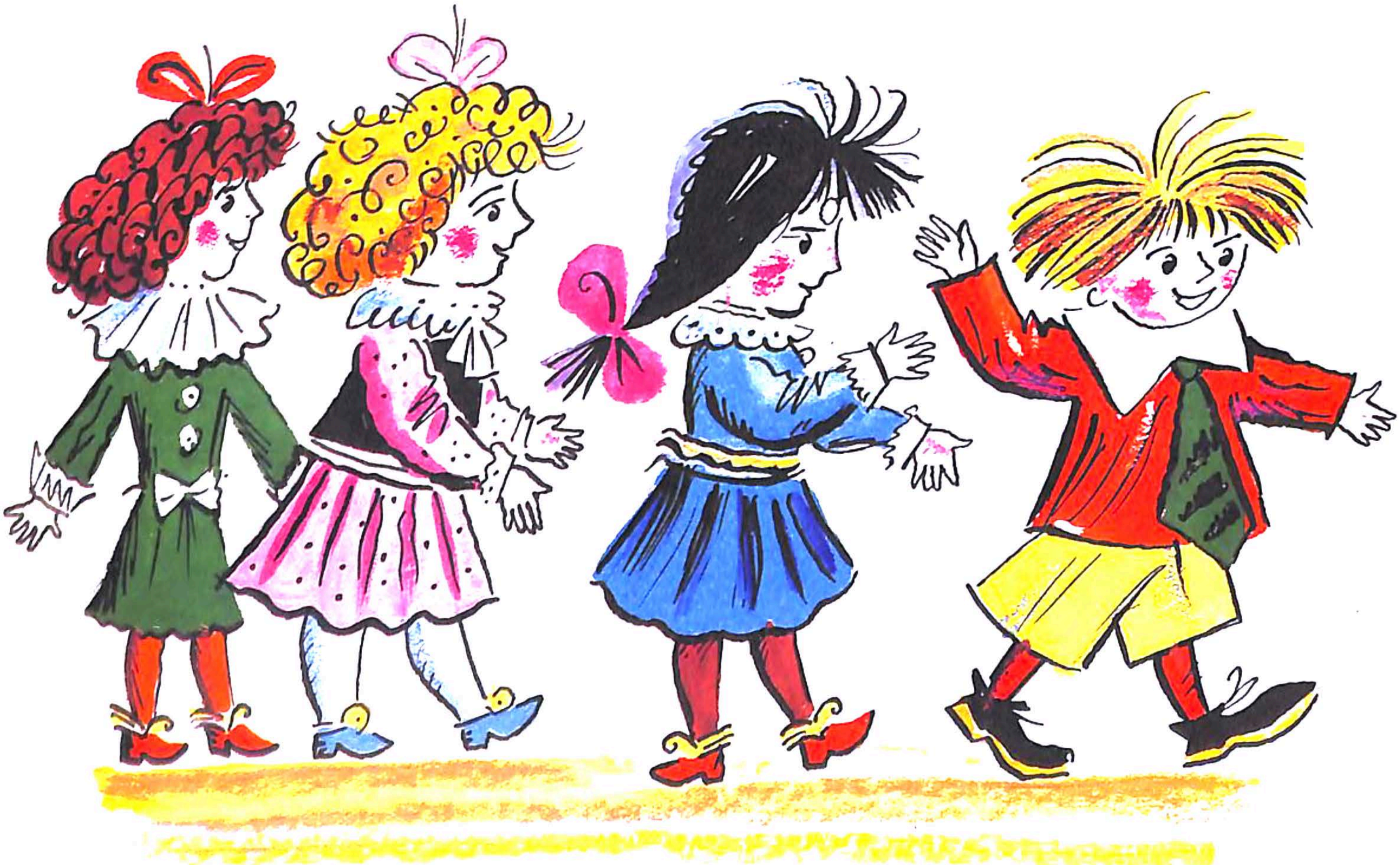
"तो आप कह रहे थे कि... 'मैंने... सोचना शुरू किया!'"

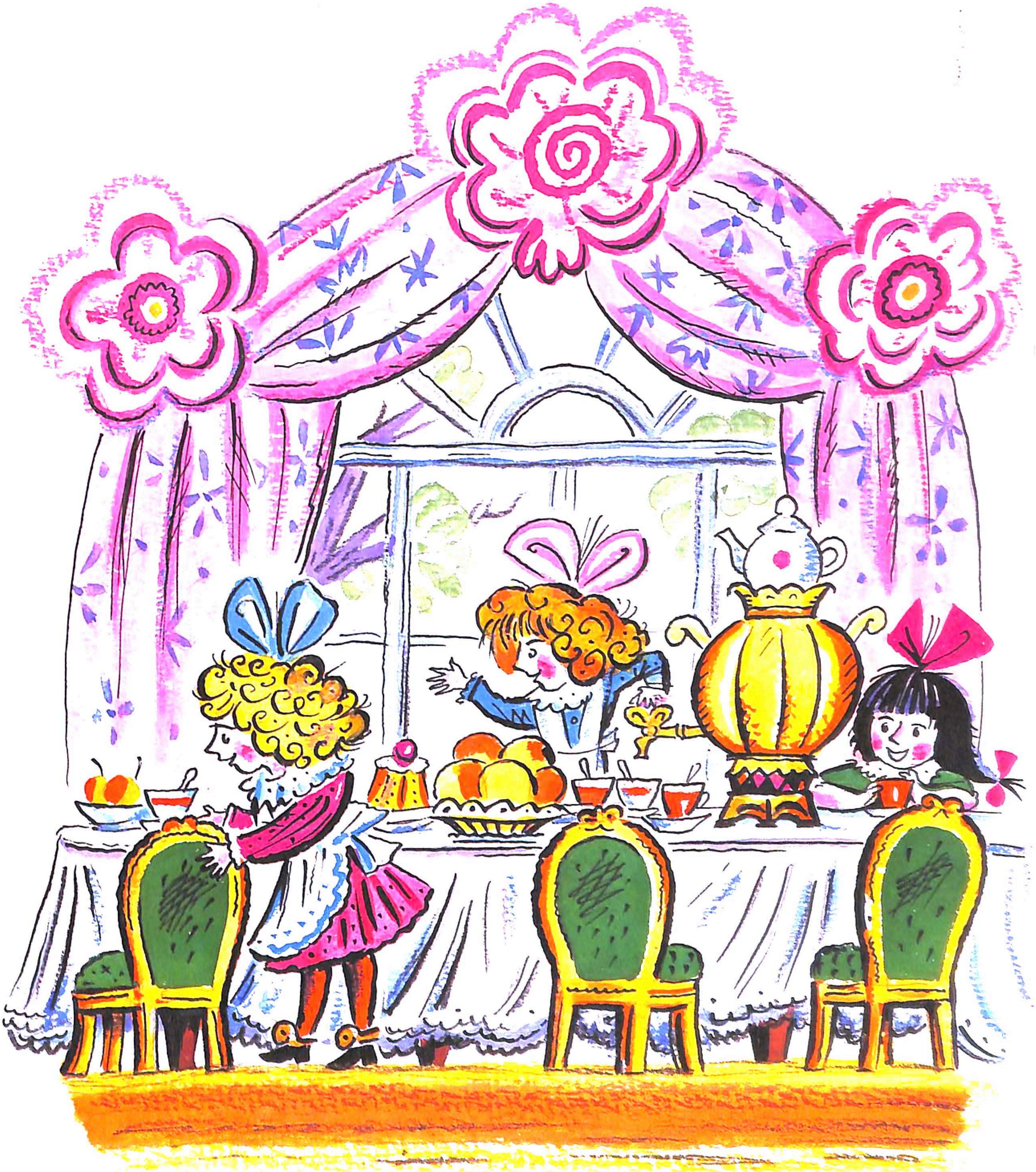
"हां!" उसने कहा मानो स्वप्न से जागा हो, पेस्ट्री मेज़ से टकराई। "इस तरह मैं तीन दिन, तीन रात बस सोचता ही रहा और लो, सोच निकाला! तब मैंने दोस्तों से कहा: 'भाइयो, अब काम का वक़्त आ गया है। मैं एक गुब्बारा बनाऊंगा।' और हमने मिल-जुलकर गुब्बारा बना डाला। हमारे फूलनगर के एक विख्यात कवि गुलदस्ता ने एक कविता भी लिखकर मुझे समर्पित की थी: 'नजानू ने गुब्बारा बनाया...' या शायद: 'गुब्बारा नजानू ने उड़ाया...' या 'गुब्बारा नजानू ने बनाया, गगन में लहराया'। ख़ैर, मारो गोली उस कविता को! लो, मैं भूल ही गया। अजी, मेरे बारे में तरह-तरह की कविताएं लिखी जा रही हैं—कहां तक याद रखूं उन्हें?"

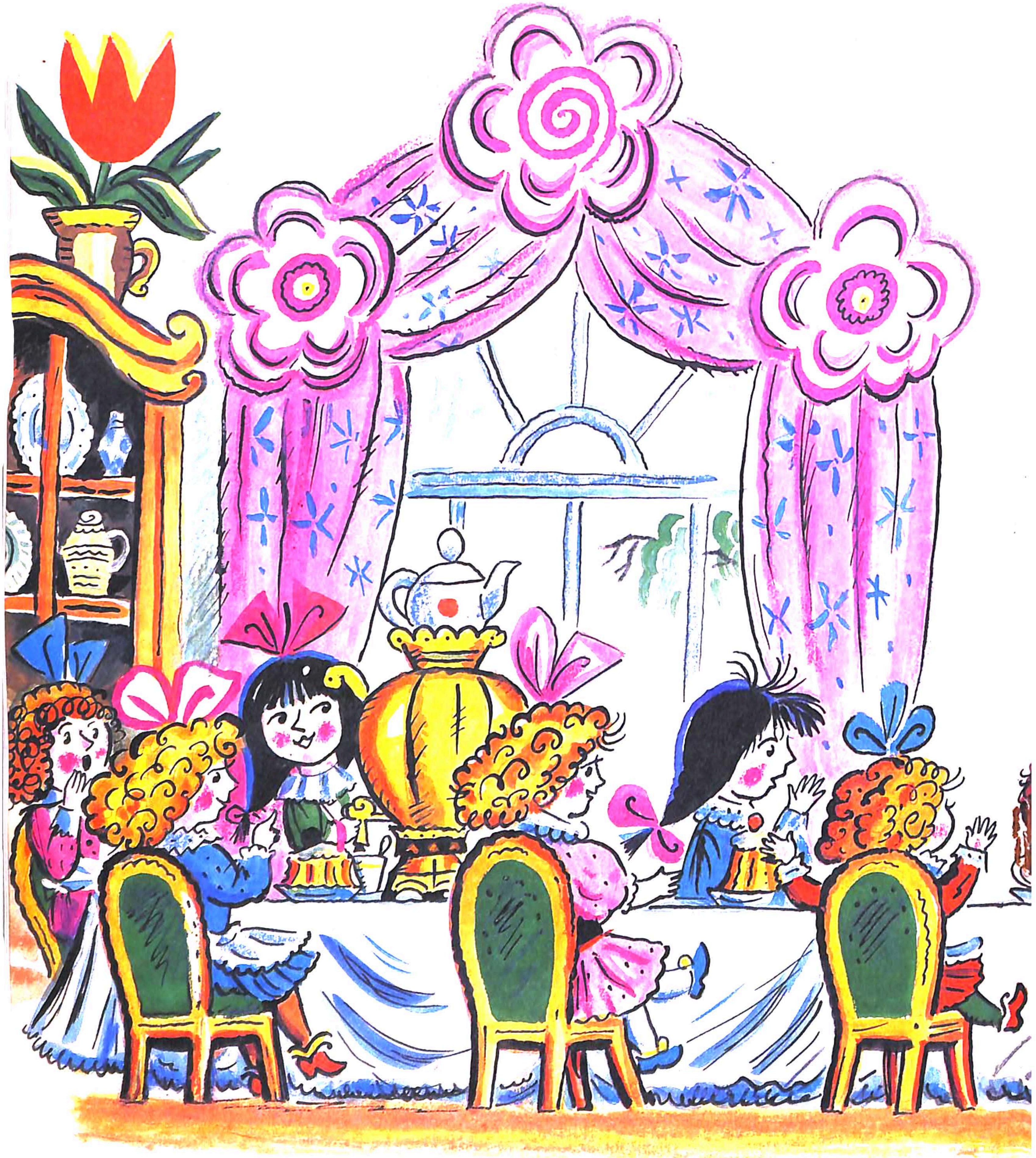
नजानू ने एक और पेस्ट्री उठाई।

"लेकिन आपने गुब्बारा कैसे बनाया?" नीलाक्षी ने पूछा।

"अजी, वह काम बड़ा विकट था। हमारे नगर के सारे छुटके दिन-रात गुब्बारा बनाने में ही जुटे रहे। कुछ लोग रबर का रस मल रहे थे,





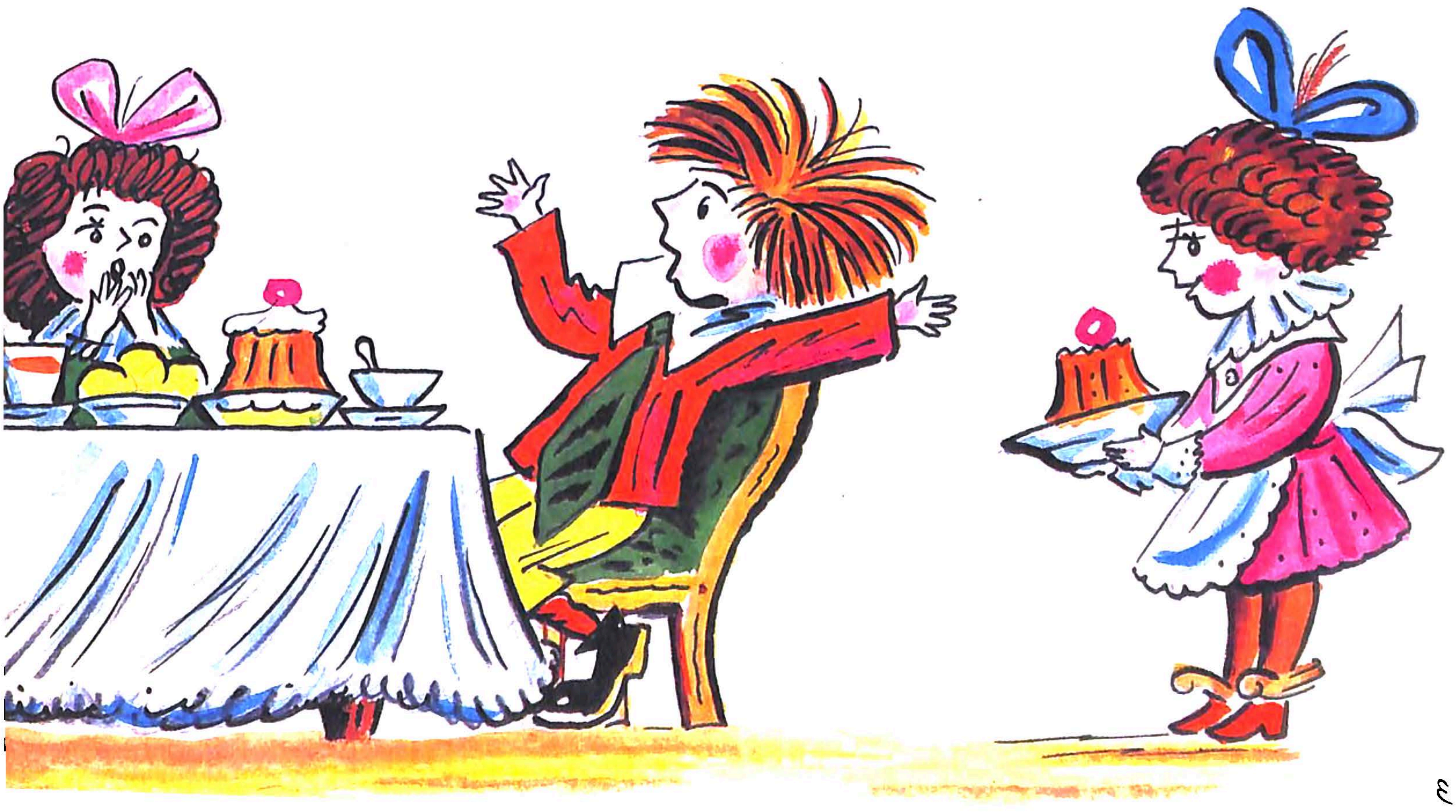


कुछ लोग पम्प से हवा भर रहे थे और मैं बस सीटियां बजाता घूम रहा था। आप इसे सिर्फ़ सीटियां बजाना ही न समझें, मैं हरेक का काम देख रहा था, समझा रहा था, आदेश दे रहा था... वहां मेरे सिवा किसी को कुछ पता न था। ज़रूरत पड़ने पर ख़ुद ही करके दिखाना पड़ता था। बड़ी ज़िम्मेदारी का काम था, गुब्बारा किसी वक़्त फट सकता था। हां, मेरे दो सहायक भी थे: मोड़ू और पेंचू। ग़ज़ब के कारीगर थे। पीर, बवर्ची, भिश्ती, खर – क्या नहीं थे वे! पर उनकी अक़्ल कम चलता था। हर चीज़ उन्हें करके दिखानी-समझानी पड़ती थी। मैंने उन्हें बॉयलर बनाना सिखाया। और देखते ही देखते बॉयलर बनकर तैयार हो गया: बॉयलर में पानी खद-बदाने लगा, भाप उड़ने लगी। लोग मुंह बाए खड़े रह गए।"

छुटकियां बड़े ध्यान से यह सारा क़िस्सा सुन रही थीं।

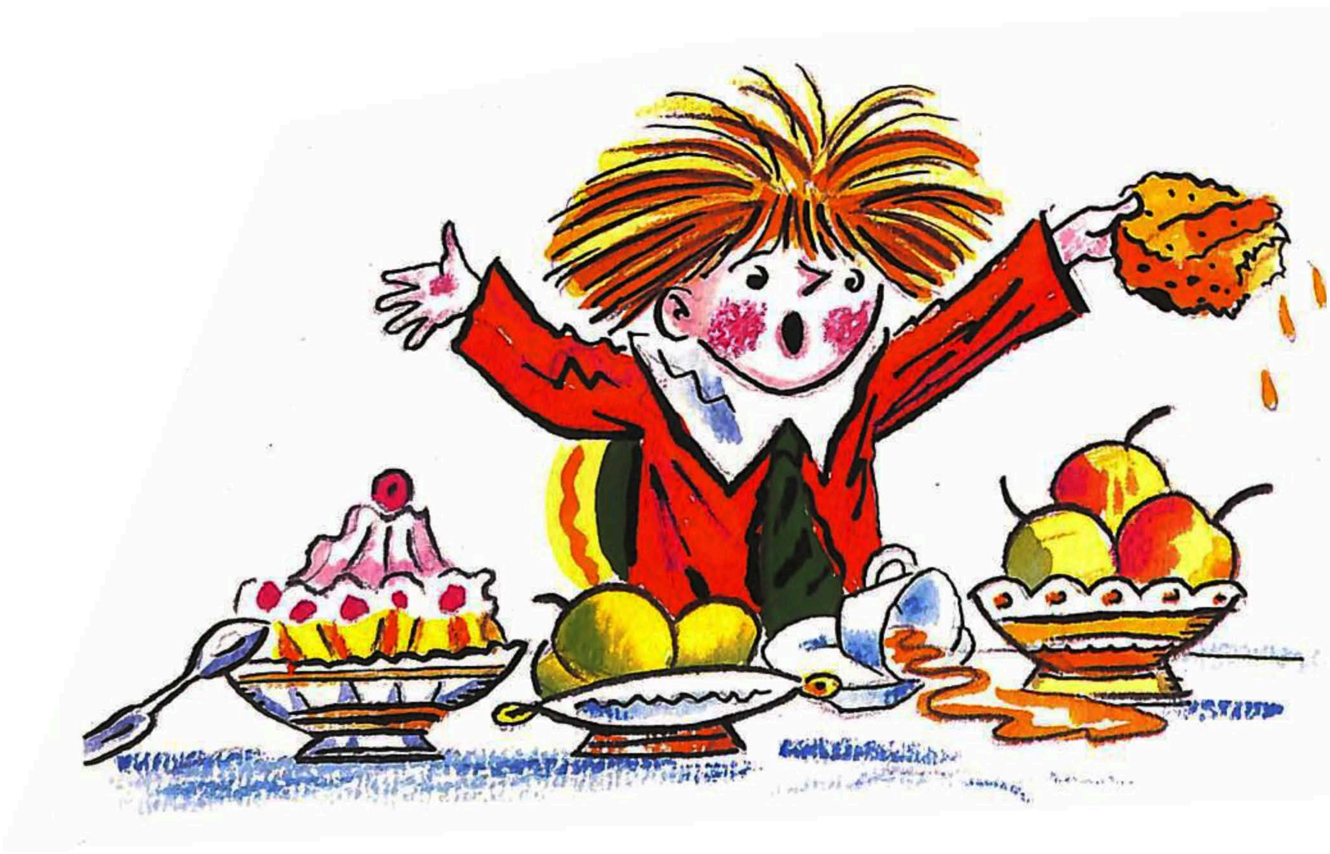
"फिर क्या हुआ? आगे क्या हुआ?" नजानू के चुप होते ही सभी एक साथ बोल पड़ीं।

"आख़िर उड़ान का दिन आ ही गया," नजानू सुनाता गया। "हज़ारों बौने वहां इकट्ठे हो गए। कुछ छुटके कहते कि गुब्बारा ज़रूर उड़ेगा, लेकिन कुछ कहते कि उड़ ही नहीं सकता। और इसी प्रश्न पर हंगामा हो गया। अजी, घमासान युद्ध छिड़ गया। वे, जिन्होंने कहा कि गुब्बारा उड़ेगा,



उनकी मुक्कों से ख़बर लेने लगे, जिन्होंने कहा था कि गुब्बारा नहीं उड़ेगा। और जिन्होंने कहा था कि नहीं उड़ेगा, वे उड़ान के समर्थकों के छक्के छुड़ाने लगे। या नहीं... शायद मामला उलट गया था। यानी कि जो यह कहते कि गुब्बारा उड़कर रहेगा, वे ही उड़ान के विरोधियों की ख़बर लेने लगे... या ऐसा लगता है कि मामला कुछ और ही था... ज़रा संक्षेप में कहें तो ऐसा हंगामा था, ऐसी भगदड़ थी कि पता ही न चला कि कौन किसे पीट रहा है। सभी एक दूसरे पर मुक्के चला रहे थे।"

"ख़ैर, छोड़िए भी इस झगड़े को!" नीलाक्षी ने कहा। "आप लड़ाई-झगड़े के बारे में न बताएं, गुब्बारे की उड़ान का ही क़िस्सा सुनाएं! हां,



तो फिर आगे क्या हुआ?"

"वही तो मैं बताने जा रहा था," नजानू ने कहा। "हां, तो जब वे लड़ते रहे, हम झपटकर गुब्बारे के झाबे में सवार हो गए। उड़ान से पहले मैंने एक छोटा-सा भाषण दिया: 'भाइयो, अलविदा, हम उड़ रहे हैं!' और हम उड़ लिए। और इत्ती ऊपर पहुंच गए कि ज़मीन इस कचौरी-सी दिखने लगी।"

"यह नहीं हो सकता!" छुटकियों ने अविश्वास प्रगट किया।

"अरे बाबा, मेरा बेड़ा ग़र्क़ हो जाए, अगर मैं झूठ बोलूं," नजानू ने कहा।

"कृपया, बीच में मत बोलिए," नीलाक्षी ने मायूस होकर कहा। "आप लोग टोकिए नहीं, भला वह झूठ क्यों बोलेगा।"

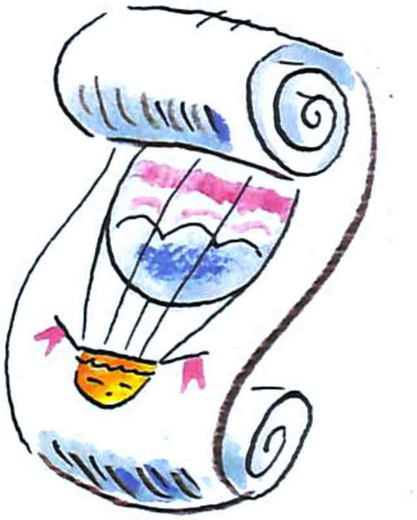
"अजी," नजानू ने कहा, "मुझे गप मारने से रोकिए नहीं... यानी कि... छि...! सच बोलने से रोकिए नहीं। बस, सुनते रहिए।"

"सुनाइए! · सुनाइए!" वे एक साथ चिल्लाईं।

"हां, हम लोग ऊपर ही ऊपर उड़ते रहे," नजानू ने कहा। "अचानक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी: फटाक! हम लोग बादल से जा टकराए। ग़ुब्बारा वहीं थम गया। अब क्या किया जाए?.. मुझे सोचने में ज़्यादा देर न लगी। हमने झट से अपना कुल्हाड़ा निकालकर बादल में सूराख़ कर डाला और फिर ऊपर उड़ने लगे। अचानक हमने देखा कि हम पैर ऊपर किए उड़ रहे हैं: आसमान नीचे और ज़मीन ऊपर! अजीब नज़ारा था।"

"आख़िर ऐसा क्यों?" छुटकियों ने आंखें फाड़ते हुए कहा।

"अजी, प्रकृति का नियम है," नजानू ने समझाया। "बादलों के पार सदैव पैर ऊपर करके उड़ते हैं। इस तरह हम ऊपर ही ऊपर उड़ते रहे और ख़ूब ऊंचाई पर पहुंच गए। ग़ज़ब की ठंड थी। वहां का तापमान शून्य से एक हज़ार दशमलव एक डिग्री कम था! सब ठिठुर गए थे। ग़ुब्बारा ठंडा होकर गिरने लगा। लेकिन मैं कोई मामूली विशेषज्ञ तो था नहीं। मैंने ग़ुब्बारे की उड़ान









से पहले ही रेत की बोरियां झावे में रखवा दी थीं। हम उन्हें नीचे फेंकने लगे। फेंकते रहे, फेंकते रहे—इस तरह सभी बोरियां नीचे फेंक दी गईं। अब क्या किया जाए? हमारे बीच में एक छुटका था। उसका नाम था जानू। वह बड़ा डरपोक था। जब उसने गुब्बारे को नीचे गिरता देखा तो लगा चीखने-चिल्लाने। और अचानक पैराशूट लेकर गुब्बारे से कूद गया। इसके बाद झाबा हलका हो गया और गुब्बारा ऊपर उड़ने लगा। लेकिन ज़्यादा देर तक न उड़ा। फिर से गिरने लगा, ज़मीन की तरफ़ खिंचता गया। ज़मीन पर टप्पे खाता, लहराता ज़मीन से आ टकराया... और एक अदद मैं गिर पड़ा धड़ाम से। वह भी सिर के बल..."



अपनी कहानी सुनाते हुए नजानू इतने जोश में आ गया कि उसने एक भरपूर मुक्का कचौरी पर दे मारा। अंदर भरा हुआ मुरब्बा चारों ओर बिखर गया। छुटकियां चौंककर अपनी कुर्सियों से गिरते-गिरते बचीं।



सन्नाटा छा गया। सभी छुटकियां नजानू को आश्चर्य से देख रही थीं। उनके हृदय में नजानू के प्रति आदर का भाव था। उनकी नज़र में वह एक सच्चा सूरमा था।

"भाई, फिर क्या हुआ?" जरा संभलने के बाद उन्होंने पूछा।

"बस इतना ही याद है मुझे।"

अन्त में नीलाक्षी ने कहा:



"हम तो आपके उड़न-गुब्बारे से बहुत डर गए थे। कल शाम को हम लोग बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे। अचानक हमने देखा कि एक बहुत बड़ा गुब्बारा हमारे घर की ओर उतरता चला आ रहा है। लेकिन वह अचानक चहारदी-

वारी से टकराया। फटाक! गुब्बारा फट गया और जब हम दौड़कर उसके पास पहुंचे तो देखा कि भोजवृक्ष की छाल का बना एक झाबा वहां पड़ा है।"

"और आप ज़मीन पर निर्जीव-से पड़े थे," जेता ने बात आगे बढ़ाई।

"एक जूता आपके पैर में था, दूसरा चहारदीवारी पर और हैट पेड़ की टहनी पर झूल रहा था," श्वेता ने कहा।

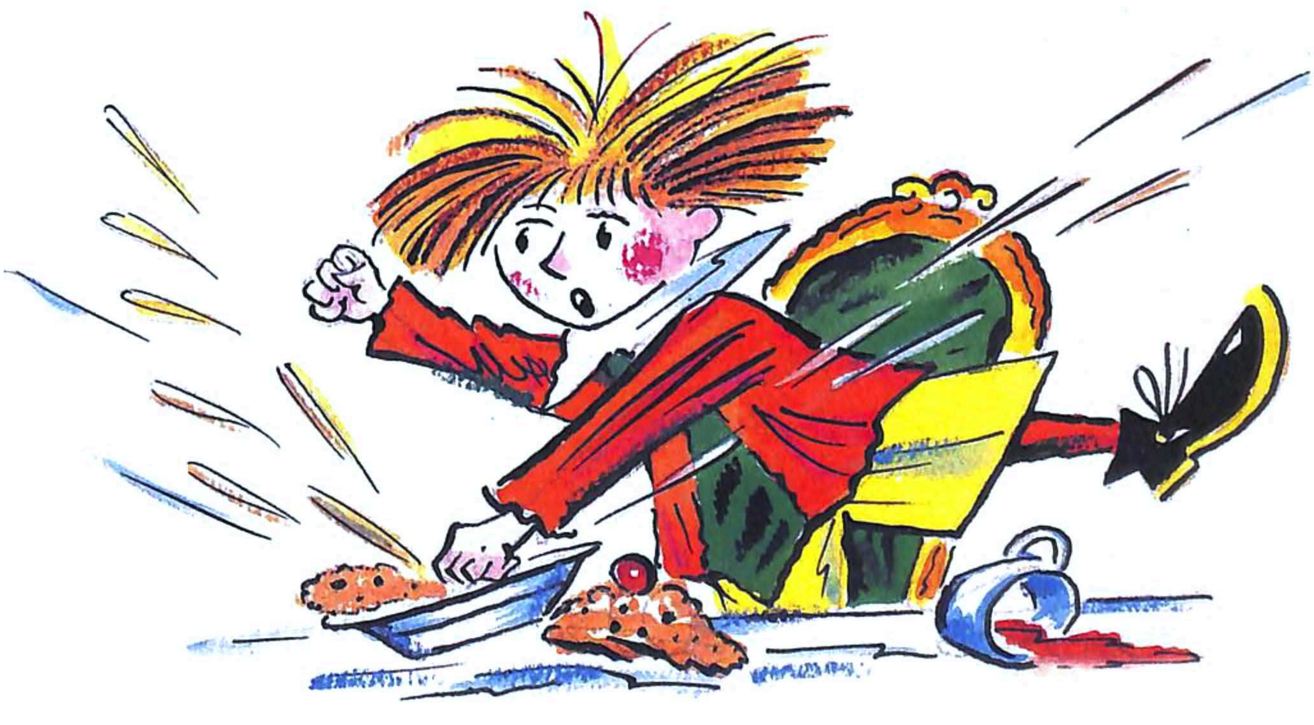
"आपकी जैकेट की आस्तीन फट गई थी और आज सुबह ही वह हमें मिली है।" मिट्ठू ने कहा। "उसे जल्दी से जल्दी सिलना पड़ा।"

"मुझे यहां कौन लाया?" नजानू ने पूछा।

"हम लोग। आख़िर आपको रात में बाहर तो छोड़ नहीं सकते थे," नीलाक्षी ने कहा।

"आप मृतप्राय थे, मामूली-सी सांस चल रही थी," जेता ने फिर अपनी बात जोड़ दी। "लेकिन मधुरिमा ने कहा कि जान वापस लौट आएगी, क्योंकि आपका जिस्म ... क्या कहते हैं उसे ... फौ-ला-द का बना है।"

"हां, फौलाद ही समझें, लेकिन मेरी खोपड़ी तो और भी मज़बूत है," नजानू ने ज़रा और शेख़ी बघारते हुए कहा। "मेरी जगह कोई और होता तो मस्तिष्क-व्याघात हो चुका होता।"





"अजी, व्याघात नहीं, आघात," नीलाक्षी ने नजानू की ग़लती सुधार-ते हुए कहा।

"लेकिन आपने कहा था कि उड़ान के समय गुब्बारे में आप अकेले न थे," नीलाक्षी ने पूछा।

"बेशक अकेला न था। हम सब सोलह यात्री थे। सच है कि डरपोक जानू छलांग लगा गया, इस तरह बाक़ी बचे पंद्रह! .."

"वे सब कहां हैं?" मिली ने पूछा।

"पता नहीं," नजानू ने कहा। "तो क्या झाबे में मेरे अलावा कोई और नहीं था?"

"वहां तो सिर्फ़ रंग का एक डिब्बा और मेडिकल बॉक्स ही मिला था।"

"रंग का डिब्बा तो ट्यूबेश का है और मेडिकल बॉक्स डाक्टर टिकि-यावाला का," नजानू ने कहा।

इसी समय दरवाज़ा खुला और कमरे में तुषारिका ने प्रवेश किया।

"कुछ सुना आपने?" वह ज़ोर से चिल्लाई। "एक नई ख़बर है। एक और गुब्बारा धरती पर उतरते ही फट गया। उस पर चौदह छुटके सवार थे। वे कल शाम को नगर के किनारे गिर पड़े थे। हमारी छुटकियों ने आज सवेरे ही उन्हें देखा था। वे अस्पताल में भर्ती किए जा चुके हैं।"

"क्या वे सभी घायल हैं?" आह भरते हुए श्वेता ने कहा।

"घबराने की बात नहीं," तुषारिका ने शांत स्वर में जवाब दिया। "मधुग्मिा ने कहा है कि वे सभी ठीक हो जाएंगे।"

"वे मेरे दोस्त ही होंगे!" नजानू ने कहा। "इसी समय मुझे अस्पताल जाना होगा। तभी सारा हाल मिल पाएगा।"

"चलो, मैं भी आपके साथ चलती हूं," नीलाक्षी ने कहा।

"और मैं भी," तुषारिका ने कहा।

इसी समय उसकी नज़र नीलाक्षी के माथे पर चिपके गोलाकर प्लास्टर पर पड़ी: "अहा, तुम्हारे माथे पर कित्ता ख़ूबसूरत घेरा है। हाय, तुम पर तो ख़ूब फब रहा है। कोई नया फ़ैशन है क्या? शायद, ऐसा मैं भी अपने लिए बनाऊंगी।"

"नहीं," नीलाक्षी ने कहा। "यह तो प्लास्टर है। दरवाज़े से माथा टकरा गया था।"

"तो यह बात है..." तुषारिका ने मायूसी से कहा।

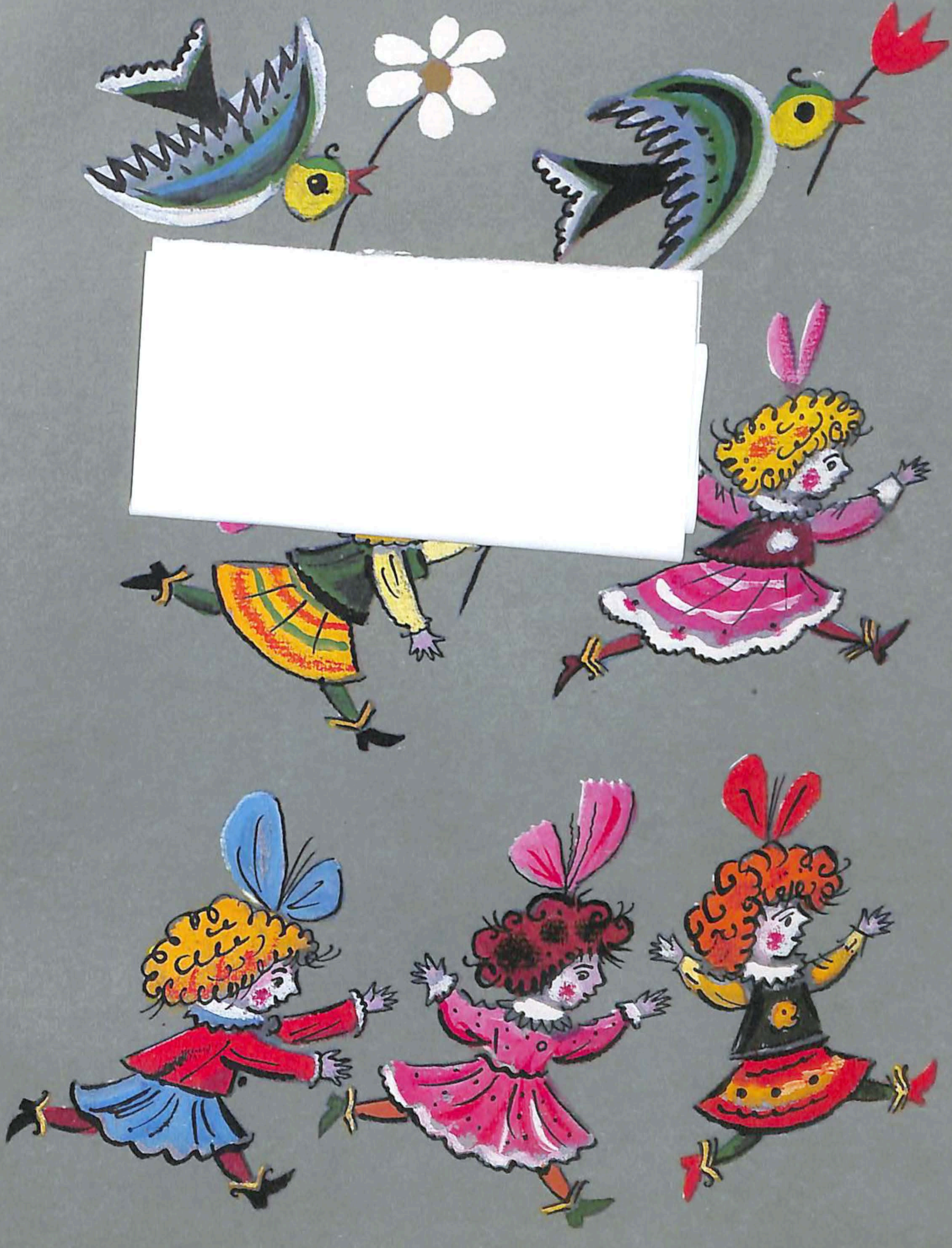
क्षण भर में कमरा ख़ाली हो गया। हरेक अपने पड़ोसियों को यह गरमा-गरम ख़बर बताने दौड़ पड़ा।



**Н. Носов**
РАЗГОВОР ЗА СТОЛОМ
*На хинди*

**N. Nosov**
DUNNO TELLS OF HIS ADVENTURES
*In Hindi*







अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इस पुस्तक में पढ़ सकते हैं :

**नगर की सैर**

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002110-3

# नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव



14

# शहर की सैर



# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

14

# शहर की सैर

*चित्र: बोरिस कलौशिन*

*हिंदी: अरविन्द गुप्ता*







स्नोड्रॉप, कॉर्नफ्लावर और नजानू एक गली में गए जो पतली विलो की टहनियों से बनी बाड़ से घिरी हुई थी। बाड़ के पीछे लाल और हरी छतों वाले सुंदर घर दिख रहे थे। घरों के ऊपर सेब, नाशपाती और अन्य फलों के बड़े-बड़े पेड़ थे। पेड़ सड़कों के साथ-साथ बगीचों में भी उग रहे थे। वहाँ इतने सारे पेड़ और झाड़ियाँ थीं कि उस शहर का नाम "ग्रीनविल" पड़ गया।

नजानू ने उत्सुकता से अपने चारों ओर नज़र डाली। सब कुछ एकदम साफ़-सुथरा था। हर बगीचे में बौनी-लड़कियां यानि छुटकियां काम करती हुई दिख रही थीं।

उनमें से कुछ घास काट रही थीं, कुछ रास्ते साफ़ कर रही थीं, और कुछ बिछे हुए कालीन से धूल झाड़ रही थीं। ये कालीन न सिर्फ़ ग्रीनविल के घरों के फ़र्श पर, बल्कि फुटपाथ और सड़कों पर भी बिछाए गए थे।

कुछ ग्रहणियों को इतना डर था कि आने-जाने वाले राहगीर उनके कारपेट गंदे कर देंगे कि वे बाड़ के पास खड़ी होकर उनसे गुज़ारिश करती थीं कि वे उन पर न चलें, या अगर चलें भी, तो पहले अपने पैर अच्छे से पोंछ लें। सामने के गार्डन में रास्तों पर भी कालीन लगे थे, और घरों के बाहर चमकीले कालीन लटके हुए थे।

ग्रीनविल में पानी की सप्लाई सरकंडों के बने पाइपों से होती थी। सरकंडा, जैसा कि सब जानते हैं, खोखला होता है, और इसलिए वो पाइप के तौर पर बहुत अच्छा काम करता है। जैसा आप सोच सकते हैं, उन्हें ज़मीन में नहीं, बल्कि ज़मीन से ऊपर, लकड़ी के खंभों पर बिछाया गया था ताकि वे सड़ें नहीं। बौने, सरकंडो से निकले पानी के लीक पर नज़र रखते थे और ध्यान से उनकी मरम्मत करते थे, और इसलिए सरकंडे लंबे समय तक चलते थे। पानी के मुख्य पाइप की एक ब्रांच हर घर में जाती थी। इसके अलावा, हर घर के सामने एक फव्वारा भी था। फव्वारा फायदेमंद होने के साथ-साथ देखने में भी सुंदर था। फव्वारे के किनारे से बहने वाले पानी का इस्तेमाल बगीचों में पानी देने के लिए किया जाता था। हर घर में एक किचन गार्डन था जिसमें चुकंदर, गाजर, शलजम, मूली और दूसरी सब्ज़ियाँ उगाई जाती थीं।

नजानू ने कुछ लड़कियों को एक बगीचे में सब्ज़ियाँ इकट्ठा करते हुए देखा। पहले उन्होंने एक शलजम या गाजर के लिए ज़मीन खोदी, फिर उसके ऊपर रस्सी बाँधी और पूरी ताकत से उसे बाहर खींचा। जब शलजम या गाजर जड़ से बाहर आ गई, फिर लड़कियाँ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते और हँसते हुए उसे घर ले गईं।

"ऐसा कैसी बात है कि आपके शहर में मुझे सिर्फ़ लड़कियाँ ही दिखती हैं? क्या यहाँ कोई लड़के नहीं रहते?" नजानू ने पूछा।

"नहीं, ऐसा नहीं है। सभी लड़के नदी के किनारे रहने चले गए हैं। उन्होंने अपना खुद का एक शहर बनाया है जिसका नाम 'काइट टाउन' है।”



"उन्होंने ऐसा क्यों किया?" नजानू ने पूछा।

"उन्हें वहां ज़्यादा अच्छा लगता है। वे गर्मियों में पूरे दिन धूप में लेटे रहते हैं और तैरते हैं, और सर्दियों में बर्फ़ पर स्केटिंग करते हैं। वसंत में जब नदी उफनती है और उनके शहर में बाढ़ आती है, तब उन्हें बहुत मज़ा आता है।"

"उन्हें इसमें क्या मज़ा आता है?" हैरान नजानू ने पूछा।

"मुझे नहीं पता," स्नोड्रॉप ने कहा, "लेकिन हमारे लड़के-माइट्स (बौनों) को यह बहुत पसंद है। वे एक-दूसरे को बचाने के लिए नावों में घूमते हैं। उन्हें एडवेंचर यानि रोमांच बहुत पसंद हैं।"

"मुझे भी," नजानू ने कहा। "क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारे बौनों यानि छुटकों से जान-पहचान कर सकता हूँ?"

"नहीं, तुम वहाँ नहीं जा सकते," स्नोड्रॉप ने कहा। "सबसे पहले, काइट टाउन तक पहुँचने में पूरा एक घंटा लगता है; दूसरी बात, हमारे छुटके तुम्हारे दिमाग में बुरे आइडिया डाल देंगे; और तीसरी बात, हम उनसे बात नहीं करते।"

"ऐसा क्यों?"

कॉर्नफ्लावर ने कहा, "उसका बहुत अच्छा कारण है।" "पिछली सर्दियों में उन्होंने हमें नए साल की पार्टी में बुलाया था, कहा था कि म्यूज़िक और डांस होगा, और जब हम वहाँ पहुँचे, तो पता है उन्होंने क्या किया? उन्होंने हम पर स्नोबॉल फेंके!"

"फिर क्या हुआ?"

"फिर क्या हुआ? हमने तब से उनसे कोई बात नहीं की। हममें से कोई भी उनसे मिलने भी नहीं जाता है।"

"और क्या वे आपसे मिलने नहीं आते?"

"नहीं, वे ऐसा नहीं करते। पहले तो उनमें से कुछ ने ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन आप यकीन मानिए कोई लड़की उनके साथ खेलने को तैयार नहीं थी। हमने उन्हें इतना बुरा-भला कहा कि वे शरारत करने लगे — खिड़कियां तोड़ने लगे और बाड़ें गिराने लगे," स्नोड्रॉप ने कहा।

कॉर्नफ्लावर ने कहा, "फिर उन्होंने नेल्स नाम के एक बदमाश छुटके को हमारे शहर भेजा। वह कुछ खास था!"

"बस इतना ही नहीं था!" स्नोड्रॉप ने कहा। "वह आया और उसने कहा कि वह हमसे दोस्ती करना चाहता है क्योंकि उसे लड़के भी पसंद नहीं थे, वे बहुत शरारती थे। हमने उसे अपने शहर में रहने की इजाज़त दी, और आपको लगता है उसने क्या किया? वो रात में खिड़की से बाहर निकला और उसने एक घर के दरवाज़े पर एक खंभा लगा दिया ताकि सुबह कोई बाहर ही न निकल सके, दूसरे के दरवाज़े पर लकड़ी का एक टुकड़ा लटका दिया ताकि जो भी उसे खोले उसके सिर पर चोट लगे, तीसरे के दरवाज़े पर रस्सी बांध दी ताकि जो भी बाहर निकले वह लड़खड़ाकर गिर जाए, चौथे की चिमनी गिरा दी, पांचवें की खिड़कियां तोड़ दीं...."



यह सब सुनकर नजानू लगभग हंस पड़ा।

कॉर्नफ्लावर ने कहा, "तुम्हें शायद यह मज़ेदार लगे, लेकिन तुम्हें देखना चाहिए था कि उससे कितनी छुटकियों की नाक पर चोट लगी! एक छुटकी तो चिमनी ठीक करने के लिए छत पर चढ़ते समय गिर गई और उसका पैर लगभग टूट गया था।"

"मैं छुटकियों पर नहीं हंस रहा हूं," नजानू ने कहा। "मैं उस छुटके नेल्स पर हंस रहा हूं।"





स्नोड्रॉप ने कहा, "तुम्हें उस पर हंसना नहीं चाहिए, तुम्हें नेल्स को सज़ा देनी चाहिए, ताकि वह फिर कभी ऐसी बुरी हरकतें न करे।"

उस समय वे सड़क के बीच में उगे एक सेब के पेड़ के पास से गुज़र रहे थे। पेड़ की सभी डालियाँ पके हुए लाल सेबों से लदी हुई थीं। उसके सहारे एक लकड़ी की सीढ़ी रखी गई थी, लेकिन वह तने के आधे हिस्से तक ही पहुँच पा रही थी। ऊपर की डालियों से रस्सी की सीढ़ियाँ लटकी हुई थीं। दो लड़कियाँ पेड़ पर चढ़ी थीं। उनमें से एक सेब के तने को आरी से काट रही थी, दूसरी उसे पकड़े थी ताकि सेब नीचे गिरे।



"सावधान रहना," कॉर्नफ्लावर ने नजानू को चेतावनी दी। "कोई सेब तुम्हारे सिर पर भी गिर सकता है और उससे तुम्हारी मौत हो सकती है।"

"मैं नहीं मरूँगा!" नजानू ने घमंड से कहा। "मेरी खोपड़ी बहुत मोटी है!"

स्नोड्रॉप ने कहा, "छुटके सोचते हैं कि वे बहुत बहादुर हैं, लेकिन हम भी उनकी तरह ही बहादुर हैं।" "ज़रा देखो कि वे दोनों लड़कियां कितनी ऊंचाई पर चढ़ गई हैं।"

"लेकिन लड़कियां गुब्बारों में नहीं चढ़तीं और मोटर कारों में भी नहीं घूमतीं हैं," नजानू ने कहा।

"ओह, है ना?" स्नोड्रॉप ने कहा, "हमारी बहुत सी लड़कियां गाड़ी चलाना जानती हैं।"

"तो क्या आपके पास कार है?"

"हाँ, है। लेकिन अब वो खराब हो गई है। हमें नहीं पता कि उसे कैसे ठीक करें। शायद आप उसे ठीक करने में  हमारी कुछ मदद कर सकें?"

"हाँ, जरूर," नजानू ने कहा। "मुझे कारों के बारे में थोड़ा-बहुत पता है। जैसे ही बेंडम और ट्विस्टम हॉस्पिटल से बाहर आएँगे, मैं उनसे आपकी कार ठीक करवा दूँगा।"

"बहुत धन्यवाद!" स्नोड्रॉप ने ताली बजाते हुए कहा।

इस समय नजानू की नज़र एक ऐसी चीज़ पर पड़ी जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। सड़क के बीच में बड़ी-बड़ी हरी गेंदें पड़ी थीं जो दो या तीन मंज़िला घर जितनी ऊंची थीं।

"क्या वे गुब्बारे हैं?" उसने पूछा।

स्नोड्रॉप और कॉर्नफ्लावर हँस पड़ीं।

"ये तरबूज हैं," उन्होंने कहा। "क्या तुमने पहले कभी तरबूज नहीं देखे?"

"कभी नहीं," नजानू ने माना। "जहां से मैं आता हूं वहां तरबूज नहीं उगते। वे किस काम आते हैं?"

"यह छुटका इतना भी नहीं जानता कि तरबूज किस काम आते हैं!" स्नोड्रॉप हँसी। "अरे, तुम एक मिनट में मुझसे यह भी पूछोगे कि सेब और नाशपाती किस काम आते हैं?"





"क्या तुम्हारा मतलब है कि लोग उन्हें खाते हैं?" हैरानी से नजानू ने पूछा। "इतने बड़े साइज़ की किसी भी चीज़ को खाने में कम-से-कम एक साल लग जाएगा।"

कॉर्नफ्लावर ने कहा, "हम इन्हें खाते नहीं हैं। हम इनका जूस निकालते हैं। वह सिरप जैसा होता है। अगर आप तरबूज के तले में छेद कर दें, तो एक तरबूज से कई बैरल सिरप मिल सकता है।"

"इन्हें लगाने के बारे में किसने सोचा?" नजानू ने पूछा।

कॉर्नफ्लावर ने कहा, "हमारे यहाँ थिसल नाम की एक बहुत होशियार छोटी लड़की है। उसे फल और सब्ज़ियाँ उगाना और नई-नई किस्में लाना बहुत पसंद है। हमारे यहाँ पहले कभी तरबूज़ नहीं होते थे, लेकिन एक दिन किसी ने कहा कि उसने जंगल में जंगली तरबूज़ उगते देखे हैं। उस पतझड़ में, थिसल एक टीम के साथ, जंगल में तब तक खोजबीन करती रही, जब तक उसे जंगली तरबूज़ नहीं मिल गए। वे लोग बीज वापस लाए, और अगली बसंत में थिसल ने उन्हें बो दिया।

इन बीजों से निकले तरबूज बहुत बड़े थे, लेकिन उनका रस खट्टा था। थिसल ने दिन-रात मेहनत की, सभी तरबूजों को चखा, जब तक उसे एक ऐसा तरबूज नहीं मिला जिसका रस कुछ मीठा था। अगले साल उसने इस खरबूजे के बीज बोए। नए फल का रस ज़्यादा मीठा था। फिर से थिसल ने सबसे मीठा तरबूज चुना और अगले साल इस खरबूजे के बीज बोए। वह हर साल ऐसा करती रही, जब तक उसे शहद जितने मीठे तरबूज नहीं मिल गए।

"लोगों ने थिसल को किस बात के लिए डांटा?" नजानू ने पूछा।

"किसी को यकीन नहीं था कि उन तरबूजों से कोई फायदा होगा। और तो और, पूरा शहर तरबूजों से भर गया था — आप मुश्किल से तरबूजों के कारण सड़क पर चल सकते थे। अक्सर वे घरों के पास उगते थे। जब तक वे छोटे होते थे, तब तक कोई नुकसान नहीं होता था, लेकिन जब वे बड़े हो जाते थे तो दीवारों को गिराने की धमकी देते थे। एक घर तो तरबूज की वजह से सच में गिर गया। हमारी कुछ लड़कियां तरबूज लगाने से मना करना चाहती थीं लेकिन कुछ ने थिसल का साथ दिया और उन्होंने उसके काम में उसकी मदद की।"

इस समय तक वे नदी के किनारे तक पहुँच चुके थे।

स्नोड्रॉप ने कहा, "इसे वॉटर-मेलन (तरबूज) नदी कहते हैं। देखो उसके किनारे पर कितने सारे तरबूज उगे हैं।"

एक पतला पुल जो कालीन की पट्टी जैसा दिखता था, एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाता था। यह बहुत मोटे और मज़बूत सामान से बना था।

कॉर्नफ़्लावर ने कहा, "हमने इस पुल को बनाया। उसे बुनने में हमें एक महीना लगा, फिर लड़कों ने उसे नदी के पार खींचने में हमारी मदद की।”

"बहुत मज़ा आया!" स्नोड्रॉप ने कहा। "उनमें से एक पानी में गिर गया और वो लगभग डूब ही गया था, लेकिन फिर किसी ने उसे बाहर निकाल लिया।"

कॉर्नफ्लावर हिम्मत करके पुल पर चढ़ी और दूसरी तरफ चली गई। नजानू बड़ी हिम्मत करके पुल पर चढ़ा, लेकिन जब उसे लगा कि पुल हिल रहा था तो फिर वह रुक गया।

"तुम रुक क्यों गए?" स्नोड्रॉप ने पूछा। "क्या तुम डर गए?"

"बिल्कुल नहीं। मैं तो बस सोच रहा था कि यह कितना मज़ेदार पुल है।"

नजानू नीचे झुका और उसने दोनों तरफ़ से पकड़ा। फिर हँसते हुए वो यह दिखाने लगा कि उसे डर नहीं लग रहा था।



बाद में स्नोड्रॉप ने उसका एक हाथ पकड़ा, कॉर्नफ्लावर ने दूसरा, और दोनों मिलकर उसे पुल के पार ले गए। वे दोनों देख सकते थे कि वह काफी डरा हुआ था, लेकिन वे नजानू पर हँसे नहीं क्योंकि वे जानते थे कि छुटकों को हँसी बर्दाश्त नहीं होती।

दूसरी तरफ़ पहुँचकर वे सड़क पर तब तक चले जब तक वे हरे रंग की छत वाले एक सफ़ेद घर तक नहीं पहुँच गए।

कॉर्नफ्लावर ने कहा, "यह हमारा अस्पताल है।"



**Н. Носов**

ПУТЕШЕСТВИЕ ПО ГОРОДУ

*На языке бенгали*

**Nikolai Nosov**

A WALK ABOUT TOWN

*In Bengali*

শিশুদের জন্য





30 к.



# नजानू की कहानियाँ

निकोलाई नोसोव



१५

# अस्पताल की दास्तान

रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

१५

निकोलाई नोसोव

# अस्पताल की दास्तान

अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस(प्रा)लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





तुषारिका, नीलाक्षी और नजानू अस्पताल के गेट पर पहुंचकर रुक गये। तुषारिका ने घण्टी का बटन दबाया। घण्टी बज उठी: "झन्न-झन्न!" गेट खुल गया। दहलीज़ पर एक नर्स खड़ी थी—सफ़ेद गाउन पहने और टोपी लगाए, जिसके नीचे से सुनहरी-सी घुंघराली लटें झूल रही थीं।

"हाय रे, एक और मरीज़," नर्स ने उन्हें देखते ही ठण्डी सांस ली। "यहां भर्ती के लिए जगह नहीं है, यकीन करें! अजी, ये कहां से आ टपके? पूरे साल हमारा अस्पताल खाली था, इलाज के लिए कोई नहीं आया। लेकिन आज ही चौदह मरीज़ भर्ती हो चुके हैं।"

"यह छुटका मरीज़ नहीं है," तुषारिका ने कहा। "यह तो अपने दोस्तों से मिलने आया है।"

"अगर ऐसा है, तो अन्दर आ जाइये।"

वे तीनों डाक्टर के कमरे में पहुंचे। मधुरिमा मेज़ पर बैठी कुछ लिख रही थी। उसके सामने मरीज़ों के ढेर सारे कार्ड रखे थे, जिन पर मर्ज़ों के ब्योरे लिखे जाते हैं। तुषारिका और नीलाक्षी को देखते ही उसने कहा:

"कहिये, मरीज़ों से मिलने आए हैं? पर उनसे मिलना कतई मना है। आप लोग भूल जाते हैं कि मरीज़ों को आराम की ज़रूरत होती है। अरे, नीलाक्षी, आपके माथे पर तो प्लास्टर लगा है? बहुत खूब! मैंने तो पहले ही सोचा था कि यही होगा। घर में एक छुटका आया नहीं, कि आफ़त शुरू हो जाती है। कहीं किसी के नीले निशान पड़ते हैं, कहीं गुमटे उभरते हैं। ऐसी है इन छुटकों की मेहरबानी!"

"हम लोग मरीज़ों से नहीं मिलेंगे," नीलाक्षी ने उत्तर दिया। "मरीज़ों से तो यह छुटका मिलना चाहता है, उसके दोस्त यहां भर्ती हैं।"

"हुं, अरे, इसे तो मैंने बिस्तर पर लेटने के लिए कहा था। पर ये जनाब डाक्टर का कहना नहीं मानते, और उसके चेहरे से ही दिख रहा है कि यह किसी से लड़ चुका है। मैं उससे मिलने की अनुमति नहीं दे सकती। अस्पताल कोई अखाड़ा नहीं है।"

"मैं लड़ूंगा नहीं," नजानू ने उत्तर दिया।

"नहीं, नहीं!" मधुरिमा ने सख्ती से कहा और मेज़ को अपने भोंपूनुमा स्टेथिस्कोप से खटखटाया। "छुटके हमेशा यही कहते हैं: 'अब मैं नहीं लड़ूंगा।' लेकिन थोड़ी देर में ही फिर लड़ने लगते हैं।"

नजानू से बात खत्म करके मधुरिमा नीलाक्षी की ओर मुड़कर बोली:

"दिखाइये आपके ज़ख्म का क्या हाल है।"

उसने प्लास्टर हटाया और नीलाक्षी का माथा देखने लगी।

"प्लास्टर की अब कोई ज़रूरत नहीं," मधुरिमा ने डाक्टरी जांच के बाद कहा। "चलिये, आपके माथे की बिजली से सेंकाई कर दें, ताकि नीला दाग मिट जाए।"

वह नीलाक्षी को साथ लेकर कमरे से बाहर निकली। नजानू ने देखा कि हैंगर पर सफ़ेद गाउन और टोपी टंगी है। उसने आव देखा न ताव, गाउन पहना, टोपी लगाई और अब आंख पर ऐनक लगाया, जिसे मधुरिमा जाते वक्त मेज़ पर छोड़ गई थी। इस तरह नजानू डाक्टरी लिबास में स्टेथिस्कोप लेकर निकल पड़ा कमरे के बाहर। तुषारिका उसे जिज्ञासु नज़र से देख रही थी, वह उसके साहस और बुद्धि कौशल पर हैरान थी।

अस्पताल का गलियारा पार करके उसने एक दरवाज़ा खोला और उस वार्ड में पहुंचा, जहां उसके दोस्त छुटके भर्ती थे। वह पहली पलंग के पास आया, देखा कि बड़बड़िया बिस्तर पर लेटा है, चेहरा उदास और खीझा हुआ है।





"कहिये, कैसी तबियत है?" नजानू ने आवाज़ का लहजा बदलते हुए कहा।

"बहुत अच्छी!" बड़बड़िया ने कहा और ऐसा मुंह बनाया जैसे कि बस दम निकलने ही वाला है।

"अच्छा, तो उठिये," नजानू ने कहा।

बड़बड़िया बेमन से उठा और फिर झट से बिस्तर पर बैठ गया, बुझी-बुझी आंखों से सीधे सामने देख रहा था। नजानू ने मरीज़ के सीने पर स्टेथिस्कोप लगाया।

"ज़रा गहरी सांस लीजिये," उसने कहा।

"अजी, यह क्या तमाशा है!" बड़बड़िया ने बड़बड़ाते हुए कहा। "कभी कहते हैं उठिये, कभी लेटिये, कभी गहरी सांस लीजिये, कभी सांस रोके रहिये।"

नजानू ने बड़बड़िया के सिर पर स्टेथिस्कोप को टकराकर कहा:

"यार बड़बड़िया, रहे वही के वही, हमेशा की तरह बड़बड़ाते रहते हो।"

"अरे, नजानू तुम!" बड़बड़िया उसे हैरानी से देखते हुए कह उठा।

"शी-शी!" नजानू ने धीरे-से कहा।

"भाई नजानू, मुझे इस चक्कर से छुटकारा दिलाओ," बड़बड़िया ने फुसफुसाते हुए कहा। "यकीन करो, मैं भला-चंगा हूं। मेरे घुटने में चोट लगी

थी। पर अब दर्द लगभग नहीं है। लेकिन ये लोग मुझे बिस्तर से उठने ही नहीं देते, न मेरे कपड़े ही वापस करते हैं। अजी, मैं आजिज़ आ गया हूं! मैं बाहर घूमना-फिरना चाहता हूं!"

बड़बड़िया ने नजानू की आस्तीन पकड़ ली और उसे छोड़ ही नहीं रहा था।

"अच्छा, ज़रा धीरज से काम लो," नजानू ने उत्तर दिया, "मैं कोई उपाय सोचूंगा। पर वायदा करो, जो मैं कहूंगा, वही तुम करोगे। समझे? और अगर छुटकियां पूछें कि गुब्बारा किसने बनाया, तो कहना नजानू ने।"

"हां, हां, जो चाहोगे, वही कहूंगा। बस, मुझे यहां से छुट्टी दिला दो," खुश होकर बड़बड़िया ने कहा।

"फ़िक्र न करो," नजानू ने वायदा किया।

तब वह अगले पलंग के पास पहुंचा, जहां डाक्टर टिकियावाला लेटा हुआ था।

"यार, बचाओ!" डाक्टर टिकियावाला मद्धिम स्वर में गिड़गिड़ाया। "देखो





न, मेरी क्या हालत हो गई है! ज़िन्दगी भर दूसरों का इलाज करता रहा, अब यहां मेरा इलाज हो रहा है।"

"पर तुम तो बीमार हो, न?"

"अजी, कोई बीमारी हो तब न! भाई, मैं तो भला-चंगा हूं। सोचो ज़रा, ऐसे आदमी को अस्पताल में कैसे रख सकते हैं, जिसकी बस दो मामूली खरोंचें हैं: एक—नाक के नीचे, दूसरी—कन्धे पर।"

"लेकिन तुम्हें यहां किसलिए रोका गया है?"

"बस, इसलिए कि सारा अस्पताल खाली है और उन्हें कोई न कोई मरीज़ चाहिए। डाक्टरी की सनक सवार है। वाह री, छुटकियां! इलाज भी खूब करती हैं! लानत है! अजी, ज़ख्म पर शहद की पट्टियां बांधते हैं और शहद पिलाते हैं। यहां तो बेतुका इलाज किया जाता है। घाव पर आयोडीन लगाना चाहिए, कॉस्टर आयल पिलाना चाहिए। यह इलाज नहीं, नीमहकीमी है। मैं ऐसे इलाज को नहीं मानता।"

"भाई, मैं भी सहमत नहीं हूं," बगल की पलंग से कदाचित् ने कहा। "अब देखिये न, यहां चलना-फिरना मना है, दौड़ना मना है, आंख-मिचौली और आइस-पाइस खेलना भी मना है। और तो और, गाइये भी नहीं। सभी के कपड़े

जमा हैं, अस्पताल के कपड़े और तौलिये मिले हैं। पड़े रहो बिस्तर पर नाक सुड़कते और पोंछते! बस, हो गई फ़ुर्सत!"

"आप यहां कैसे आए?"

"कल रात हम लोग गुब्बारेवाली टोकरी से गिरे और सो गए। सुबह होते ही कुछ छुटकियों ने हमें जगाया और पूछताछ करने लगीं। हमने बताया कि गुब्बारे में उड़कर आए हैं, दुर्घटना का शिकार हो गए हैं। 'दुर्घटना?' वे हैरानी से बोलीं। 'हाय रे, चलिये, हमारे अस्पताल में भर्ती हो जाइये।' और आप देख ही रहे हैं कि हम लोग अस्पताल में भर्ती हैं।"

"यानी कोई भी ज़ख्मी नहीं है?" नजानू ने पूछा।

"नहीं। बस, गोलीबाज़ ही ज़ख्मी है।"

नजानू गोलीबाज़ के पास आया।





"अजी, तुम्हें क्या हुआ है?"

"मेरे घुटने की हड्डी खिसक गई है। मैं बिल्कुल चल-फिर नहीं सकता। मुझे इसका कतई अफ़सोस नहीं। अफ़सोस है बेचारे गुर्रा का, मिल ही नहीं रहा है। भाई, मेहरबानी करो, मेरे ग़ुर्रा को ढूंढ़ दो। वह कहीं आसपास ही होगा। मैं तो अपनी जगह से हिल भी नहीं सकता।"

"फ़िक्र न करो," नजानू ने कहा। "मैं तुम्हारे ग़ुर्रा को ढूंढ़ लाऊंगा, लेकिन तुम सबसे यही कहना कि गुब्बारा मैंने ही बनाया है। रही बात पक्की?"

नजानू अस्पताल में भर्ती सभी छुटकों से मिल आया और सहेज आया कि वे सबसे यही कहें कि गुब्बारा उसने ही बनाया है। अन्त में वह डाक्टर के कमरे में लौट आया। तुषारिका बड़ी बेचैनी से उसका इन्तज़ार कर रही थी।

"कहिये, मरीजों के क्या हाल हैं?" उसने पूछा।

"अजी, कैसे मरीज़, सभी तो ठीक-ठाक हैं," नजानू ने मुस्कराकर कहा। "सिर्फ़ गोलीबाज़ ही थोड़ा ज़ख्मी है।"

"तब तो उन्हें जल्द ही छुट्टी मिल जाएगी?" तुषारिका ने चहकते हुए पूछा। "जानते हैं, मेरा क्या इरादा है? हम लोग छुटकों के स्वास्थ्य लाभ की खुशी में बॉल-नृत्य का आयोजन करेंगे। खूब मज़ा आएगा!"

"लेकिन लगता नहीं कि उन्हें जल्द ही छुट्टी मिल जाएगी," नजानू ने कहा।

इसी समय मधुरिमा और नीलाक्षी लौट आईं।

"आपने यह गाउन क्यों पहना? यह मनमानी किसलिए?" मधुरिमा ने नजानू की ओर झुकते हुए कहा।

"इसमें कोई मनमानी नहीं," नजानू ने कहा। "मैं तो अस्पताल का मुआयना करने गया था।"

"हां, तो मुआयने में आपने क्या देखा?" मधुरिमा ने व्यंग्य से पूछा।

"यही कि सिर्फ़ एक को छोड़कर सब स्वस्थ हैं और उन्हें डिस्चार्ज किया जा सकता है।"

"अजी, क्या कहते हैं आप?" मधुरिमा ने सहमते हुए कहा। "ज़रा सोचिये,



उस वक्त क्या होगा, जब चौदह छुटकों को एक साथ छोड़ दिया जाएगा? वे सारा शहर सिर पर उठा लेंगे! खिड़कियों का एक भी शीशा साबुत न बचेगा। किसी की खैर न रहेगी, सबके शरीर पर गुमटे और नीले निशान दिखाई देंगे। इसलिए ज़रूरी है कि छुटकों को अस्पताल में ही रहने दिया जाए, ताकि शहर में नीलों और गुमटों की महामारी न फैले।"

"शायद एक-एक करके छुटकों को छोड़ा जा सकता है?" नीलाक्षी ने कहा। "एक दिन में एक छुटके को।"

"एक दिन में एक—यह तो कम है। शायद दो को छोड़ना ठीक होगा। हम लोग उनके साथ मिलकर बॉल-नृत्य भी तो करना चाहते हैं।"

"तो फिर ठीक है," मधुरिमा ने सहमत होकर कहा। "हम लोग छुटकों की एक लिस्ट बनाएंगे और कल से ही उन्हें एक-एक करके छोड़ना शुरू कर देंगे।"

तुषारिका ने उमंग से तालियां बजायीं और मधुरिमा से लिपटकर उसे मनाने लगी:

"लेकिन एक नहीं, दो! दो! मैं कितनी बेताब हूं कि उन्हें झट से छुट्टी मिल जाए। आखिर आप भी तो नाचना चाह रही होंगी! क्या गज़ब का नाचती हैं आप!"

"तो चलो, तुम्हारी ही बात रही। दो छुटके ही एक दिन में छोड़े जाएंगे," मधुरिमा ने नर्म पड़ते हुए कहा। "शुरूआत हम सबसे विनयशील छुटकों से करेंगे। इस काम में आप हमारी मदद करिये," उसने नजानू की ओर मुड़ते हुए कहा। "कहिये, सबसे विनयशील छुटके कौन-से हैं?"

"अजी, विनयशील तो सभी छुटके हैं!"

"इस पर मुझे विश्वास नहीं। छुटकों में विनयशीलता होती ही नहीं। ज़रूरी है कि उनके लिए कोई न कोई काम ढूंढ़ रखा जाए, ताकि वे शैतानियां भूलकर काम में उलझे रहें।"

"अगर ऐसा ही है, तो सबसे पहले मोड़ू और पेंचू को छोड़ दिया जाए। वे अस्पताल से बाहर निकलते ही कार की मरम्मत में जुट जाएंगे," नीलाक्षी ने कहा।

"ख्याल अच्छा है!" मधुरिमा ने कहा। "तो हम मोड़ू और पेंचू से ही शुरूआत करते हैं।"

मोड़ू और पेंचू के नाम एक कागज़ पर लिख लिए गए।





"अब इनके बाद बड़बड़िया का नम्बर है," मधुरिमा ने कहा। "नाक में दम किए रहता है। हर वक्त बड़बड़ाता है, किसी को चैन नहीं लेने देता।"

"अरे, नहीं, नहीं! उसे अभी अस्पताल में ही रहने दीजिये," नजानू ने कहा। "वह बहुत ज़्यादा बड़बड़ाता है, इलाज होना चाहिए।"

"तो फिर डाक्टर टिकियावाला के बारे में क्या ख्याल है? वह हमारे अस्पताल से बड़ा नाखुश है। हर समय हमारे इलाज का मखौल उड़ाता है। नकचढ़ा मरीज़ है। उसे छोड़ने में मुझे कोई एतराज़ नहीं।"

"नहीं, डाक्टर टिकियावाला को यहीं रहने दीजिये," नजानू ने अक्ल दौड़ाई। "वह सारी ज़िन्दगी दूसरों का इलाज करता रहा, अब उसका इलाज हो जाने दो! बेहतर हो कि ट्यूबेश को छोड़ दिया जाए। वह एक श्रेष्ठ चित्रकार है, ऐसे छुटके के लिए काम ढूंढ़ने में दिक्कत न होगी। आखिर मेरा शिष्य है न। मैंने ही उसे चित्रकारी सिखायी है।"

"सचमुच!" तुषारिका ने हैरानी से कहा। "क्या उसे आज ही छुट्टी नहीं दी जा सकती? मैं उससे कहूंगी कि वह मेरा एक चित्र बना दे।"

"और बाजाबाज़ के बारे में क्या ख्याल है?" नजानू ने एक नाम और जोड़ दिया। "वह भी मेरा शिष्य है। मैंने ही उसे बांसुरी बजाना सिखाया है।"

तुषारिका फिर से मधुरिमा के गले में लिपट गई और मिन्नतें करने लगीं:

"ट्यूबेश और बाजाबाज़ को छोड़ दीजिये! मेहरबानी करके!"

"ठीक है, तो इनके लिए खास रियायत बरती जाएगी।" मधुरिमा का स्वर नर्म पड़ गया। "लेकिन बाकी मरीज़ों को क्रमवार छोड़ा जाएगा।"

आखिरकार वन ही गई मरीज़ों की लिस्ट। मधुरिमा ने आदेश दिया कि ट्यूबेश और बाजाबाज़ के कपड़े वापस दिए जाएं। कुछ देर बाद वे दोनों खुशी-खुशी मधुरिमा के कमरे में आ पहुंचे।

"आप लोगों को अस्पताल से मुक्त किया जाता है," मधुरिमा ने कहा। "लेकिन खबरदार, कोई बेजा हरकत नहीं होनी चाहिए। अगर शिकायत मिली तो फिर अस्पताल में भर्ती कर दिया जाएगा।"



Н. Носов
В БОЛЬНИЦЕ
*На хинди*

N. Nosov
IN THE HOSPITAL
*In Hindi*



ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002413-7







अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं:

**मौज का रंग**

**सफ़र**

नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१६

# मौज का रंग



रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१६

# मौज का रंग


अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



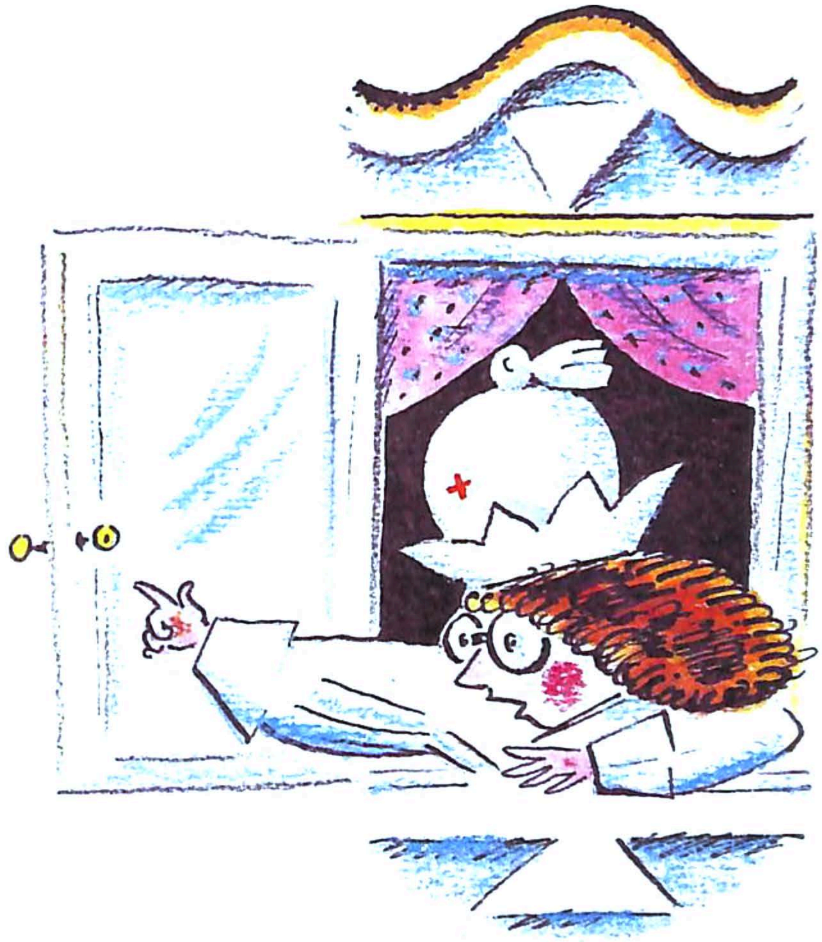


रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर 302001





सारे नगर में खबर फैल गई कि मशहूर यात्री नजानू और उसके दोस्त अस्पताल में भर्ती हैं। मिली और रोज़ा दौड़-दौड़कर, एक घर से दूसरे घर जा-जाकर यह खबर अपनी सहेलियों को सुना रही थीं। इस तरह एक छुटकी से दूसरी छुटकी को और दूसरी छुटकी से तीसरी छुटकी को यह खबर पहुंचती गई। देखते ही देखते नगर की सारी आबादी अस्पताल की ओर बढ़ चली। हरेक छुटकी किसी न किसी तरह मुसीबत के मारे छुटकों की मदद करना चाहती थी। वे अपने साथ तरह-तरह की ज़ायकेदार चीज़ें ला रही थीं। किसी के पास स्वादिष्ट कचौड़ियां थीं, तो किसी के पास मुरब्बे और कोई मीठी-मीठी पेस्ट्रियां लिये थीं।

थोड़ी ही देर में अस्पताल की सड़क पर दर्शकों की भीड़ जमा हो गई। इस भीड़ को गेट पर ही रोक दिया गया। आखिर सब अन्दर

कैसे जा सकते थे? मधुरिमा ने अस्पताल के बरामदे में आकर कहा कि हमारे मरीज़ों को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, इसलिए सभी छुटकियां अपने-अपने घर लौट जायें और यहां शोर न करें। लेकिन छुटकियां टस से मस न हुईं। उन्हें तो किसी तरह चुपके से पता चल गया था कि छुटकों का लीडर नजानू अपने दोस्त ट्यूबेश और बाजाबाज़ के साथ अस्पताल से बाहर निकलनेवाला है।

मधुरिमा ने फिर यह सूचना दी कि नजानू को तब तक अस्पताल से जाने नहीं दिया जाएगा, जब तक भीड़ यहां से नहीं हटती। लेकिन छुटकियां कम चतुर न थीं। वे घर लौटने के बजाय अपनी-अपनी सहेलियों के यहां चली गईं, जो अस्पतालवाली सड़क पर बने घरों में ही रहती थीं। नजानू, ट्यूबेश और बाजाबाज़ जब तुषारिका और नीलाक्षी के साथ सड़क पर आए तो उन्हें लगा कि खिड़कियों के पीछे से दर्जनों आंखें उन्हें घूर-घूर कर देख रही हैं। नजानू फूलकर कुप्पा हो गया।

"अजी, कौन है वो बड़े नामवाला नजानू?" अचानक उसे सुनाई दिया।

"वो रहा पीली पतलूनवाला!"

"कौन सा? बड़े कानवाला? अजी, मैं तो उसे कभी नजानू नहीं समझ सकती थी। वह तो निरा बुद्धू दिखता है।"

"सच, दिखता तो बुद्धू सा है, पर आंखों से अक्ल छलकती है।"

एक घर की दूसरी मंज़िल से किसी छुटकी ने नजानू को देखते ही हाथ हिला-हिलाकर स्वागत सा किया। वह खनकती आवाज़ में ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी:

"नजानू ज़िन्दाबाद! नजानू ज़िन्दाबाद!"

यह छुटकी खिड़की से बाहर झुकी हुई थी। बस सड़क पर गिरते-गिरते बची। गनीमत समझो कि बाकी छुटकियों ने ऐन वक्त पर उसकी टांगें पकड़ लीं और उसे झट से अन्दर घसीट लिया।

"छि: अजीब बेशर्मी है! ऐसे तो इस नजानू का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ सकता है!" हाव-भाव से सख्त, नुकीली ठुड्डी और छोटे चेहरेवाली एक छुटकी ने कहा।



"तुम ठीक कहती हो, बुलबुल," उसकी एक सहेली ने कहा, जिसका ऊपरी होंठ कुछ छोटा-सा था और सफ़ेद दांत चमचमा रहे थे। "अजी, छुटकों को तो हवा भी न लगनी चाहिए कि कोई उनकी तरफ़ ध्यान भी दे रहा है। जब उनकी हरकतें कोई देखेगा ही नहीं, तो खुद शैतानियां भूल जाएंगे।"

"यही तो मैं भी कहती हूं, पूसी," बुलबुल ने हां में हां मिलाई, "इन छुटकों की उपेक्षा करनी चाहिए। अपनी उपेक्षा देखकर तमीज़ से काम लेंगे।"

बुलबुल और पूसी बारी-बारी से छुटकियों के कान में फुसफुसाकर समझाने लगीं कि उड़नबाज़ छुटकों की उपेक्षा करनी चाहिए। इस तरह सभी छुटकियों ने मिलकर यह तय किया कि छुटकों के साथ सख्ती बरती जाये। अगर राह चलते वे कहीं मिल जायें, तो वापस मुड़ लिया जायें या रास्ता काटकर दूसरी तरफ़ चल दिया जायें।

लेकिन जल्द ही छुटकियों का समझौता बेअसर रहा। खासकर जब



उन्हें पता चला कि छुटका ट्यूबेश एक बढ़िया पेण्टर है और बाजाबाज़ एक महान संगीतकार। सभी का जी ललचाया कि क्यों न झटपट बांसुरी सुनी जाये। यूं तो हरित नगर के लोग सिर्फ़ हार्प बजाना ही जानते थे। बांसुरी का नाम उन्होंने पहली बार सुना था। कई लोग तो यह भी नहीं जानते थे कि ऐसा कोई वाद्ययंत्र भी हो सकता है।

जल्द ही छुटकियों को पता चला कि ट्यूबेश और बाजाबाज़ सेब चौक में छुटकी बटनिया के यहां अपना डेरा जमा चुके हैं। बटनिया के घर की दूसरी मंज़िल पर एक खूब लम्बा-चौड़ा कमरा था, जिसमें खूब बड़ी सी खिड़की थी। ट्यूबेश को यह कमरा पसन्द आया क्योंकि यह था भी खूब रोशनीदार। शायद इसीलिये ट्यूबेश और बाजाबाज़ ने यहीं रहने का फ़ैसला किया।

कमरे की खिड़की बाहर सेब चौक की तरफ़ खुलती थी। सेब चौक में अक्सर शाम को सन्नाटा रहता था। लेकिन आज वहां छुटकियों का जमघट लग गया था। वे बांह में बांह डाले, दो-दो का जुट बनाये





इधर-उधर चहलकदमी कर रही थीं। लेकिन वे बीच-बीच में रोशनीदार खिड़की की ओर नज़र बचाकर देख लेती थीं। निश्चय ही वे ट्यूबेश या बाजाबाज़ की खातिर ऊपर नहीं देख रही थीं, बल्कि संगीत सुनने के लिये बेचैन थीं।

रह-रहकर उन्हें खिड़की के पीछे से कभी बाजाबाज़ के संवरे हुए बाल झलक जाते थे, कभी ट्यूबेश की बिखरी हुई ज़ुल्फ़ें। और अब खिड़की के करीब कुछ भी नहीं दिख रहा था। अचानक छुटकियों





ने ट्यूबेश को देखा, जो खिड़की के दासे पर कोहनी टिकाये, ख्यालों में खोया-खोया सा दूर कुछ देख रहा था। उसके बाद बाजाबाज़ दिखाई दिया। वे दोनों किसी गम्भीर मसले पर इधर-उधर देखते हुए हाथ हिला-हिलाकर बातें कर रहे थे। थोड़ी देर में वे खिड़की के पीछे ओझल हो गए।

अब तो छुटकियों की उम्मीद पर पानी फिरता नज़र आया। पर दर्शकों की भीड़ निराश न हुई और वहीं डटी रही। देखते ही देखते बांसुरी का मीठा-मीठा स्वर गूंजने लगा, मानो नदी की लहरों का संगीत हो। बांसुरी का स्वर लयबद्ध था, जैसे लहरों का प्रवाह हो, जो एक के बाद एक उमड़ रहा हो। स्वर लहरियां कभी उछलतीं, कभी यकायक खामोश सी पड़ जातीं, तो कभी हवा में गूंजतीं, एक दूसरे का



पीछा करती हुई धकेलती सी चलती थीं। बांसुरी ने सभी का दिल खुश कर दिया। मानो वह सभी के अंग-अंग में थिरकन पैदा कर रही हो, नृत्य के लिए उत्साहित कर रही हो।

चुपचाप घरों की खिड़कियां खुलने लगीं। सेब चौक की हलचल थम गई। सभी श्रोता मौन थे इस कोशिश में कि कहीं कोई स्वर छूट न जाये।

अन्त में बांसुरी का स्वर थम गया। लेकिन इसी समय सामनेवाली खिड़की से हार्प का स्वर गूंजने लगा। इस वाद्ययंत्र पर वही धुन बजाने की कोशिश की जा रही थी, जो अभी बांसुरी पर थिरक रही थी। किसी की उंगलियां हार्प के तारों पर धुन साधने का प्रयास कर रही







थीं। संगीत की तीव्र धुन धीरे-धीरे धीमी पड़ती गई । और अब बिल्कुल खामोश हो गई। लेकिन इसी क्षण बांसुरी ने जवाबी संगीत छेड़ दिया। अब तो हार्प पूरी रौ में बजाया जाने लगा। शीघ्र ही दूसरा हार्प भी बजने लगा। देखते ही देखते तीसरे हार्प ने भी साथ दिया। संगीत-सरिता बह चली। अब हार्पों का मिला-जुला स्वर कहीं अधिक तेज़ और सुखदायी लगने लगा।

इसी समय नजानू झपटकर ट्यूबेश के लिए रंग और ब्रश ले आया। सेब चौक में उसने एक अनोखा दृश्य देखा। सारा का सारा सेब चौक छुटकियों से खचाखच भरा हुआ था। वे सभी मिलकर इस अनोखे संगीत समारोह का लुत्फ़ उठा रही थीं।

नजानू भी मज़े से संगीत सुन रहा था। वह इतना मस्त था कि एक पैर पर उछलने, थिरकने लगा। लेकिन उसे लगा कि उसकी नृत्य-कला का अपमान किया जा रहा है, कोई उसे देख ही नहीं रहा है। इस कारण वह मायूस होकर दरवाज़े के पीछे ओझल हो गया।



Н. Носов
КОНЦЕРТ
*На языке хинди*

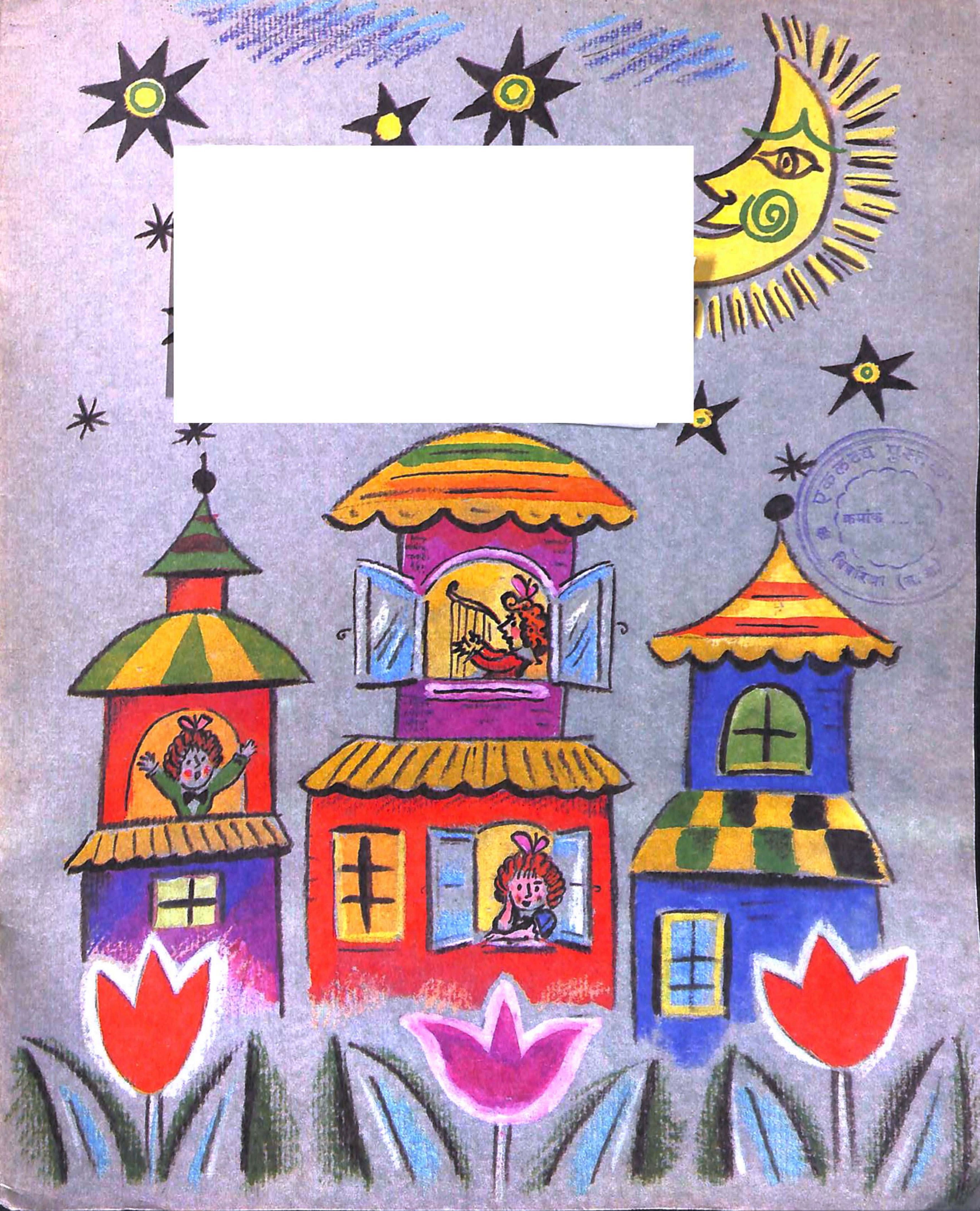
N. Nosov
THE CONCERT
*In Hindi*

Для дошкольного возраста



सोवियत संघ में प्रकाशित







प्यारे बच्चो,

नजानू और उसके दोस्तों के रोचक कारनामे आपको ज़रूर पसन्द आये होंगे। नजानू की कहानियों के इस क्रम में फूलनगर के निवासियों के बारे में आप हमारे यहां से प्रकाशित होनेवाली आगामी पुस्तकों में पढ़ेंगे:

**सफ़र**

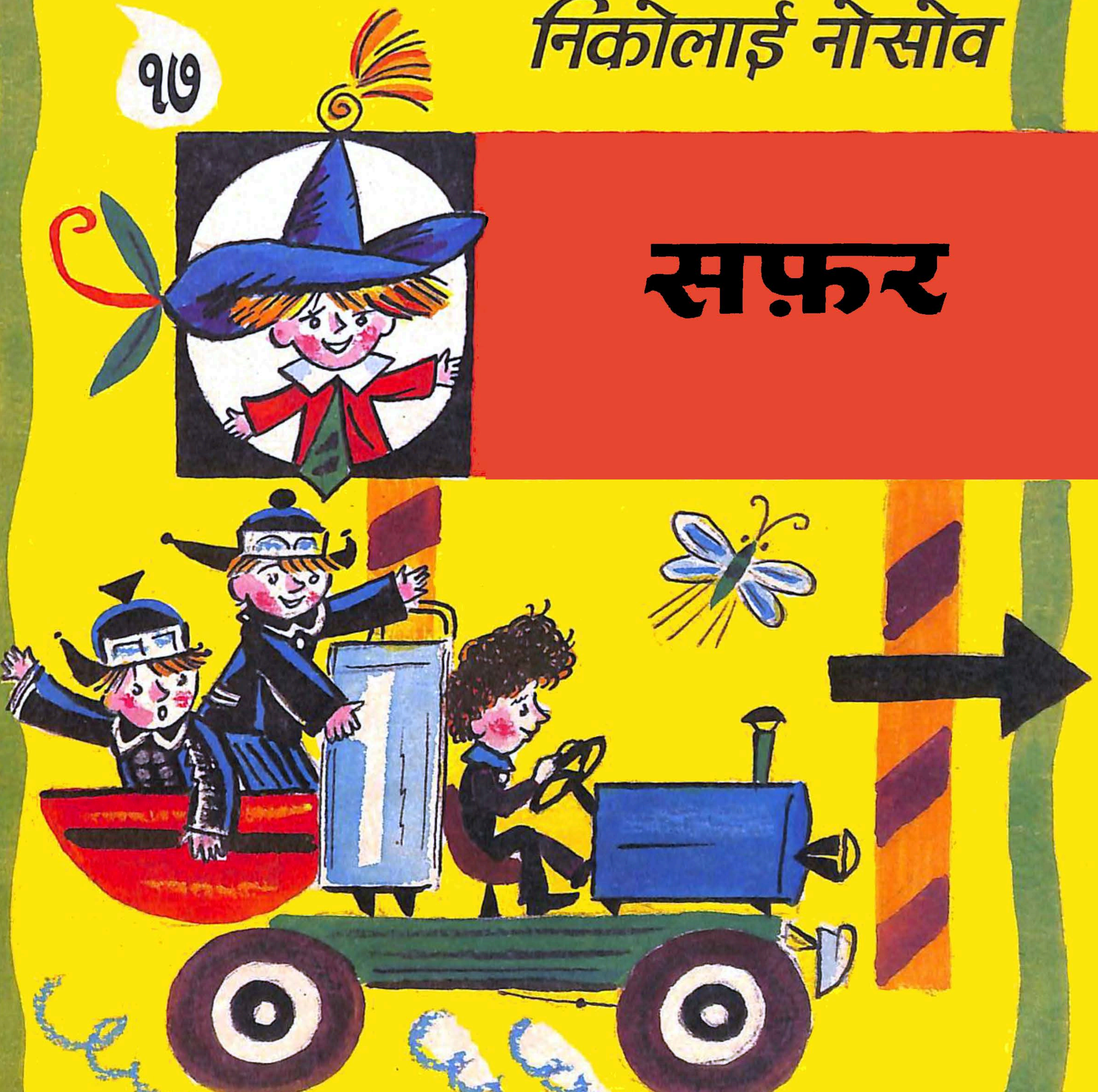
**पतंग नगर में**

ISBN 5-05-000987-0
ISBN 5-05-003228-9

# नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१७



# सफ़र

रादुगा प्रकाशन · मास्को



## नज़ानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

१७

# सफ़र


अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन





रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर 302001





एक-एक कर मैदान में आओ,
मिल-जुल कर कतार बनाओ,
शुरू करो व्यायाम से दिन,
आलस को तुम दूर भगाओ!

कवि गुलदस्ता का लिखा यह व्यायाम-गीत मोड़ू और पेंचू मिलकर गा रहे थे।

हरित नगर के निवासी अभी मीठी नींद में सो रहे थे कि ये दो छुटके कदम से कदम मिलाते, व्यायाम-गीत गाते, सड़कें रौंदते और पी० टी० करते हुए चले जा रहे थे। शाम को ही—एक दिन पहले उन्हें पता चल गया था कि अस्पताल से छुट्टी मिलनेवाली है, ताकि वे छुटकियों की कार की मरम्मत कर

सकें। और इसीलिये सूरज उगने से पहले, जब उसकी लालिमा भी न दिखी थी, वे उठ बैठे और लगे कहने कि उन्हें छोड़ दिया जाय। शरारत और शोरगुल से घबड़ानेवाली मधुरिमा उन्हें जल्दी से जल्दी आज़ाद कर देना चाहती थी। उनके कपड़े वापस दिए जा चुके थे।

और अब वे सड़क पर लेफ़्ट-राइट करते हुए चले जा रहे थे। दूर से ही उनके गीत के बोल सुनकर अनेक छुटकियों की नींद खुल गई। वे खिड़कियों के पास खड़ी होकर झांकने लगीं, कुछ छुटकियां बाहर सड़क पर भी आ गईं।

"अरी, छुट्कियो, अपना मोटर गैराज बताओ न!" मोडू ने चिल्लाकर कहा।

"आइये, मैं चलती हूं।" रोयेंदार कालरवाला ओवरकोट पहने और लाल हैट लगाये एक छुटकी ने कहा।

"किधर जाना है, दायें या बायें?" मोडू ने कहा।



"दायें," उस छुटकी ने कहा, उनकी चमड़े की जैकेटों को उत्सुकता से देखते हुए, जो छुटके पहने हुए थे।

"दायें मुड़! तेज़ चल!" मोड़ू ने कहा और मुड़ते हुए वे सड़क पर चलने लगे। "दायें-बायें! दायें-बायें!"

पेंचू कदम से कदम मिलाते हुए उसके पीछे-पीछे चल रहा था और उनकी गाइड – रास्ता बतानेवाली छुटकी – दौड़ती, छलांगें मारती बमुश्किल पीछा कर पा रही थी।

दौड़ते-दौड़ते मोड़ू और पेंचू गैराज से काफी दूर निकल गए।

इस बीच मोड़ू ने गैराज में झांककर देखा, अन्दर एक कार खड़ी थी। इस





समय कुछ और छुटकियां गैराज तक आ धमकी थीं।

"अन्दर तो अन्धेरा है," मोड़ू ने कहा, "चलो, कार बाहर निकाली जाय।"

"लेकिन यह खराब है, चलती नहीं," छुटकियों ने कहा।

"कोई बात नहीं, धक्के ही लगायेंगे। चलिये, ज़ोर लगाइये। चाल दिखाओ – एक, दो! मोटर ठेलो – एक, दो!"

कार घरघराने लगी। एक कर्कश आवाज़ गूंजते ही कार लुढ़कने लगी।

मोड़ू और पेंचू पलक झपकते ही कार के नीचे पहुंच गए और उसका मुआयना करने लगे। छुटकियां कार को घेरे खड़ी थीं और हैरानी से कार के नीचे ताक-झांक कर रही थीं।

"तो यह बात है! टंकी लीक कर रही है," कार के नीचे से "टप, टप, टप" की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"एक नट ही गायब है। सीरप सप्लाई करनेवाला पाइप ही फट गया है।"



अन्त में वे कार के नीचे से बाहर निकल आए।

"जाइये, प्लास, स्पैनर, सोल्डरिंग आयरन और हथौड़ी ले आइये," मोड़ू ने छुटकियों से कहा।

"लेकिन हमारे यहां ये चीज़ें नहीं हैं!"



"आखिर हैं क्यों नहीं? आपके पास क्या-क्या चीज़ें हैं?"

"आरी है, कुल्हाड़ी है।"

"वाह, वाह! आप लोग भी! कुल्हाड़ी से कहीं कार की मरम्मत होती है? यहां कहीं आस-पास छुटके रहते हैं?"



"छुटके सिर्फ़ पतंग नगर में रहते हैं!"

"दूर है?"

"करीब एक घण्टे का रास्ता है!"

"घण्टा भर तो आपके लिए है, हम तो जल्दी पहुंच जाएंगे। लेकिन वहां पहुंचा कैसे जाए?"

"आगे सड़क से मुड़ जाइये, फिर वहां सीधे, बिल्कुल सीधे बढ़ते जाइये। फिर एक रास्ता मिलेगा, मैदान को पार करते हुए सीधे बढ़ते जाइये, बस पतंग नगर पहुंच जाएंगे!"

"समझ लिया," मोडू ने कहा, "तेज़ चल! लेकिन ठहरो!"—उसने आदेश दिया। "और, सभी छुटकियां, हमारे लौटने तक कपड़े से कार की धूल साफ़ करें, उसे भरपूर चमकायें! मोटर, मेरे दोस्तो, सफाई पसन्द होती है!"

"ठीक है, हम उसे साफ करेंगे," छुटकियों ने वायदा किया।



"तो अब हम चलते हैं!"
वे दोनों सड़क पर लेफ़्ट-राइट करने लगे।
दायें मुड़कर मोड़ू ने आदेश दिया:
"गीत शुरू किया जाय!"
और हमारे दोस्त भरपूर ताक़त से यह गीत गाने लगे:

बाग में, बागान में
कर रहा था मैं सैर,
साथ में दोस्त मेरा,
खा रहा था बैर!

तभी अचानक मेढक उछला,
मुंह से निकली – आह!
भागे सर पर पैर लिये,
कित्ते बहादुर हैं हम, वाह!



यह गीत खत्म होते ही दूसरा गीत शुरू हो गया, फिर तीसरा और चौथा गीत गाते हुए वे आगे बढ़ते रहे।

जल्द ही वे नगर के बाहर पहुंच गए और मैदान पार करने लगे। चलते हुए अभी घण्टा भर न हुआ था कि पतंग नगर दिखने लगा। ठीक इसी वक्त मोड़ू और पेंचू ने सड़क के बीचोंबीच खड़ी एक मोटर को देखा। ज़रा और करीब पहुंचे तो एक छुटका मोटर के नीचे दिखाई दिया। शायद मोटर की मरम्मत कर रहा था। वह कालिख पुती पतलून पहने था; बाहर सिर्फ टांगें दिख रही थीं।

"ए, भाई, धूप सेंक रहे हो?" पेंचू ने चिल्लाकर कहा।

काले घुंघराले बालोंवाले छुटके ने सिर बाहर निकालकर झांका:

"हां, भाई, मोटर के नीचे धूप का मजा ले रहे हैं," उसने उत्तर दिया।

"आखिर क्या हुआ?"

"कलमुंही, नखरे दिखाती है। भाई, या तो सीरप चुक गया है या सोडा वाटर की खुराक ज़्यादा हो गई है। नामालूम क्या बात है!"

छुटका बाहर निकल आया। और उसने कार के पहिये पर एक ज़ोरदार लात मारी।

उसकी जैकेट भी पतलून की तरह कालिख और तेल से बुरी तरह सनी हुई थी, जैसे चमड़े की बनी हो। यानी बेचारे उस छुटके का सारा वक्त मोटर चलाने से ज़्यादा उसकी मरम्मत और तरह-तरह की तीमारदारी में निकल जाता था। खासकर ये सोडा वाटर से चलनेवाली मोटर-कारें अक्सर अपने मालिकों का कचूमर ही निकाल देती हैं।

मोड़ू मोटर के चारों ओर घूम-घूमकर उसकी जांच-परख करता रहा। जब ऊपर कोई खराबी नज़र न आई तो वह कार के नीचे घुस गया। वह कुछ देर वहां अक्ल दौड़ाता रहा, फिर बाहर निकल आया और खड़े होकर सिर खुजलाने लगा। मोड़ू के बाद पेंचू मोटर के नीचे घुसा, लेकिन कोई नतीजा न निकला। इसके बाद मोटर मालिक पहले की तरह फिर मुआयना करने लगा। इस तरह वे कभी बारी-बारी से मोटर के नीचे घुसते, कभी हैरानी से उसे देखते और सिर खुजलाते खड़े रहते।

अन्त में मोड़ू ने मोटर की खराबी का कारण ढूंढ़ निकाला। देखते ही देखते मोटर चल पड़ी। मोटर मालिक ने खुशी से मोड़ू और पेंचू से हाथ मिलाया और कहा:

"धन्यवाद साथियो! आपकी मदद के बिना तो मैं शाम तक धूप सेंकता रह गया होता। आपको कहां जाना है? बैठिये, जहां कहें, पहुंचा दूं।" मोड़ू और पेंचू ने अपने सफर का कारण बताया।



“प्लास, स्पैनर और हथौड़ी तो है मेरे पास, सिर्फ सोल्डरिंग आयरन नहीं है,” मोटर मालिक ने कहा।

“क्या सोल्डरिंग आयरन आपके पतंग नगर में नहीं मिल सकता?”

“क्यों नहीं? हमारे मैकेनिक बोल्टू के पास ज़रूर होगा। चलते हैं उसके पास।”

वे तीनों मोटर में बैठ गए और कुछ ही मिनट में पतंग नगर की मुख्य सड़क पर पहुंच गए।





Н. Носов

ПОХОД

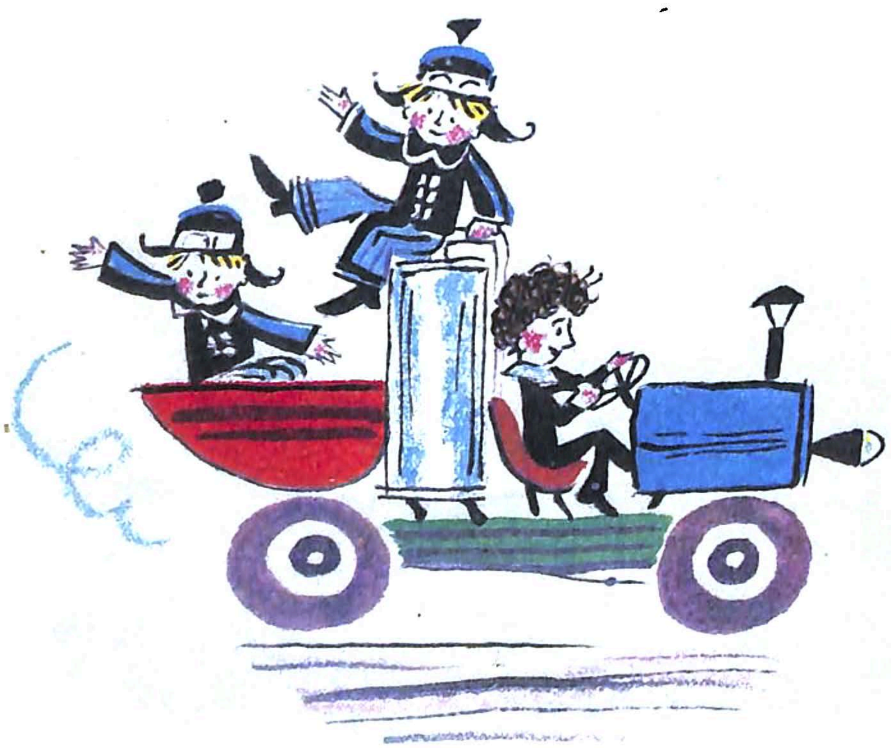
*На хинди*

N. Nosov

BENDUM AND TWISTUM GO
TO KITE TOWN

*In Hindi*









प्यारे बच्चो,

नजानू और उसके दोस्तों के रोचक कारनामे आपको ज़रूर पसन्द आये होंगे। नजानू की कहानियों के इस क्रम में फूलनगर के निवासियों के बारे में आप हमारे यहां से प्रकाशित होनेवाली आगामी पुस्तक में पढ़ेंगे:

**पतंग नगर में**

ISBN 5-05-000982-0

ISBN 5-05-003229-6

## नजानू की कहानियां

18

निकोलाई नोसोव



# काइट टाउन में



RADUGA PUBLISHERS



# नजानू की कहानियां

## निकोलाई नोसोव

18

# काइट टाउन में

*चित्र: बोरिस कलौशिन*

*हिंदी: अरविन्द गुप्ता*



RADUGA PUBLISHERS

MOSCOW

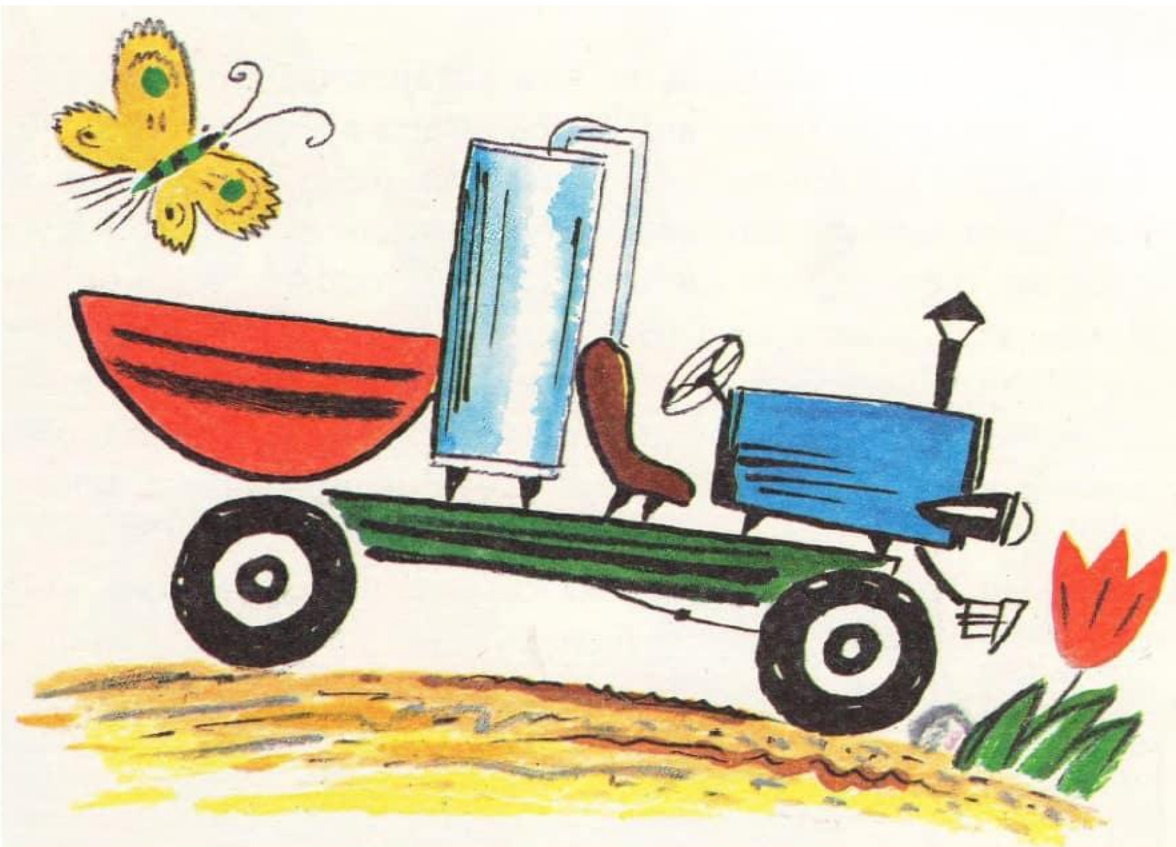




जैसा कि आपने सुना होगा, काइट टाउन शहर एक नदी के किनारे बसा है। वहाँ कोई पेड़ नहीं उगते, इसलिए वहाँ की सड़कें ग्रीनविल जितनी सुंदर नहीं हैं। लेकिन यहाँ लगभग उतने ही फूल हैं जितने फ्लावर टाउन में हैं, और वहां के घर बहुत सुंदर हैं। छतों पर मीनारें हैं जिनके ऊपर वेदर-कॉक या खिलौने वाली पवनचक्कियाँ लगी हैं जो हवा चलने पर गोल-गोल घूमती हैं। कई पवनचक्कियों में खड़खड़ाहट वाले यंत्र लगे हैं जो पवनचक्कियों के घूमने पर बहुत तेज़ आवाज़ करते हैं। शहर के ऊपर का आसमान हमेशा कागज़ की पतंगों से भरा रहता है, क्योंकि पतंग उड़ाना काइट टाउन में रहने वालों का पसंदीदा खेल है। इसीलिए उस शहर का नाम काइट टाउन पड़ा है। पतंगों के साथ बहुत ही साधारण बनावट के शोर करने वाले यंत्र लगे होते हैं। वे पूंछ से बंधी हुई साधारण कागज़ की लंबी पट्टियां होती हैं। जब हवा चलती है, तो ये पट्टियां बहुत ही अजीब तरह से सरसराहट करती हैं और चटकती हैं। पवनचक्कियों की खड़खड़ाहट और पतंगों की आवाज की वजह से, शहर में हमेशा बहुत शोर रहता है।

सभी घरों की खिड़कियों में जालीदार शटर लगे हैं। जब भी लड़के सड़कों पर फुटबाल खेलते हैं, तो ये शटर बंद कर दिए जाते हैं। फुटबाल उनका एक और पसंदीदा खेल है, और इन बेहतर जालीदार खिड़कियों का फ़ायदा यह है कि उनसे गेंदें रुकती है पर रोशनी अंदर आती रहती है। किसी अजीब वजह से गेंदें हमेशा खिड़कियों की तरफ़ ही उड़कर जाती हैं, न कि वहाँ जहाँ उन्हें उड़ना चाहिए।

मेन सड़क के अंत में पहुँचने के बाद कार एक साइड-स्ट्रीट में मुड़ गई और लकड़ी के एक गेट के सामने जाकर रुक गई। गेटवे के ऊपर एक कांच की गेंद लगी थी, जो सभी घरों और बाड़ों का एक प्यारा उल्टा प्रतिबिंब दिखाती थी, साथ ही उस कार का भी जो अभी-अभी उसके सामने आकर रुकी थी।





कार का मालिक (जिसका नाम प्रेट्ज़ेल था) बाहर निकला और गेट तक गया। दीवार में लगे एक छोटे से बटन को दबाने पर गेट बिना आवाज़ किए खुल गया।

“अंदर आओ और टैप्स से मिलो,” प्रेट्ज़ेल ने बेंडम और ट्विस्टम से कहा। “मुझे लगता है कि तुम्हें वो इंसान बहुत दिलचस्प लगेगा।”

तीनों दोस्त आंगन में घुसे और गेट के बाईं ओर बने घर की तरफ़ चले गए। पत्थर की कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद प्रेट्ज़ेल ने दूसरा बटन दबाया। घर का दरवाज़ा भी बिना किसी आवाज़ के खुला जैसे गेट खुला था, और हमारे दोस्तों ने खुद को एक अजीब कमरे में पाया। उसमें कुछ भी नहीं था — फ़र्नीचर का एक टुकड़ा भी नहीं, बल्कि दूर की दीवार से लटका एक झूला था। झूले के अंदर एक लड़का-माइट (बौना) नीले रंग के ओवरऑल में लेटा हुआ था, उसके हाथ जेब में थे और पैर क्रॉस किए हुए थे।

“तुम अभी भी सो रहे हो, टैप्स?” प्रेट्ज़ेल ने कहा। “देखो, अब उठने का समय हो गया है।”

“मैं सो नहीं रहा हूँ। मैं सोच रहा हूँ,” टैप्स ने मेहमानों की तरफ देखते हुए कहा।

“आओ, मेरे दोस्तों बेंडम और ट्विस्टम से मिलो। दोनों जुगाड़ू मिस्त्री हैं, और उन्हें एक सोल्डरिंग-आयरन की ज़रूरत है।”

“आपसे मिलकर खुशी हुई। बैठ जाइए,” टैप्स ने कहा।

सबको यह सुनकर काफी हैरानी हुई, क्योंकि वहां पर बैठने के लिए कुछ भी नहीं था। उसी समय टैप्स ने दीवार में लगा एक बटन दबाया और तुरंत सामने वाली दीवार से तीन फोल्डिंग सीटें नीचे गिर गईं।

बेंडम और ट्विस्टम बैठ गए।

“क्या आपने ध्यान दिया है कि मैं हर काम बटन से करता हूँ?” टैप्स ने पूछा। “एक बटन दरवाज़ा खोलता है, दूसरा सीट नीचे करता है, और अगर आपको टेबल चाहिए — यहाँ...”

फिर उसने एक और बटन दबाया। एक टेबल-टॉप नीचे गिरा, जो लगभग बेंडम के सिर पर जा लगा।

“बहुत सुविधाजनक है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?” टैप्स ने कहा।

"अद्भुत", सावधानी से चारों ओर देखते हुए बेंडम ने कहा। वो देख रहा था कि कोई और चीज तो उस पर नहीं गिरने वाली थी।

"सब कुछ मशीनीकृत है," टैप्स ने शेखी बघारी।



प्रेट्ज़ेल ने कहा, "एकमात्र कमी यह है कि सीटें दीवार से सटी हुई हैं।"

“बिलकुल सही,” आविष्कारक ने कहा। “मैं कुर्सियों को इधर-उधर करने का कोई तरीका सोचने में लगा हुआ हूँ।”

ट्विस्टम ने सुझाव दिया, "क्या साधारण कुर्सियों का उपयोग करना सबसे अच्छा तरीका नहीं होगा?"

“बस! एक शानदार आइडिया!” टैप्स ने खुशी से कहा। “मुझे कुछ सादी, साधारण कुर्सियाँ बनानी होंगी। सबसे शानदार आइडिया हमेशा सबसे आसान होते हैं। मैं देख सकता हूँ कि तुम्हें भी मैकेनिक हो और तुम्हें भी मशीनों में दिलचस्पी है, है ना?”

"हाँ, हम दोनों मैकेनिक हैं," ट्विस्टम ने कहा।

"तो, आपको सोल्डरिंग आयरन की ज़रूरत है, है ना?"

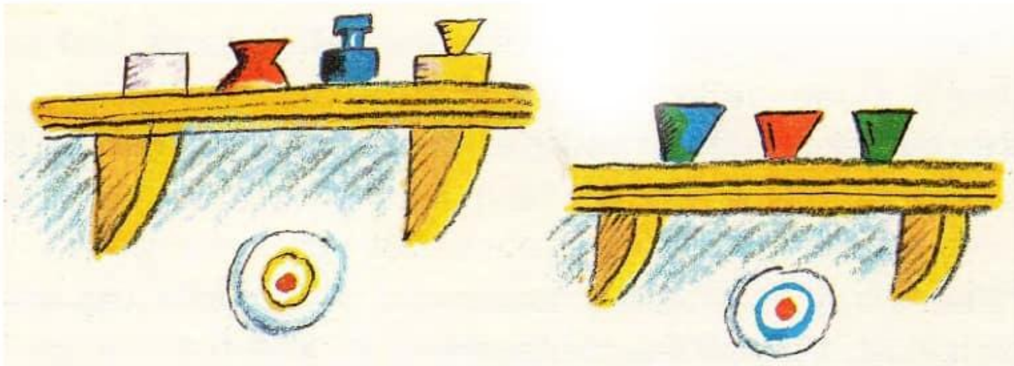




टैप्स ने एक और बटन दबाया, और सब हैरान रह गए जब झूला धीरे-धीरे नीचे को धंसने लगा। वह नीचे, नीचे गिरता गया जब तक कि टैप्स फर्श पर लेट नहीं गया।

टैप्स ने उठते हुए कहा, "जब आप किसी आम झूले से बाहर निकलते हैं, तो हमेशा आपका पैर उसमें फंसने और आपके नाक के बल गिरने का खतरा रहता है। मेरा मैकेनाइज्ड झूला इस खतरे को पूरी तरह खत्म कर देता है। आपको धीरे से फर्श पर उतारा जाता है, जिससे आप अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं। ठीक उसी तरह, जब आप झूले में जाना चाहते हैं तो पहले फर्श पर लेट जाते हैं, फिर बटन दबाते हैं, जिससे झूला अपनी ज़रूरत के हिसाब से ऊंचाई तक ऊपर उठ जाता है।"

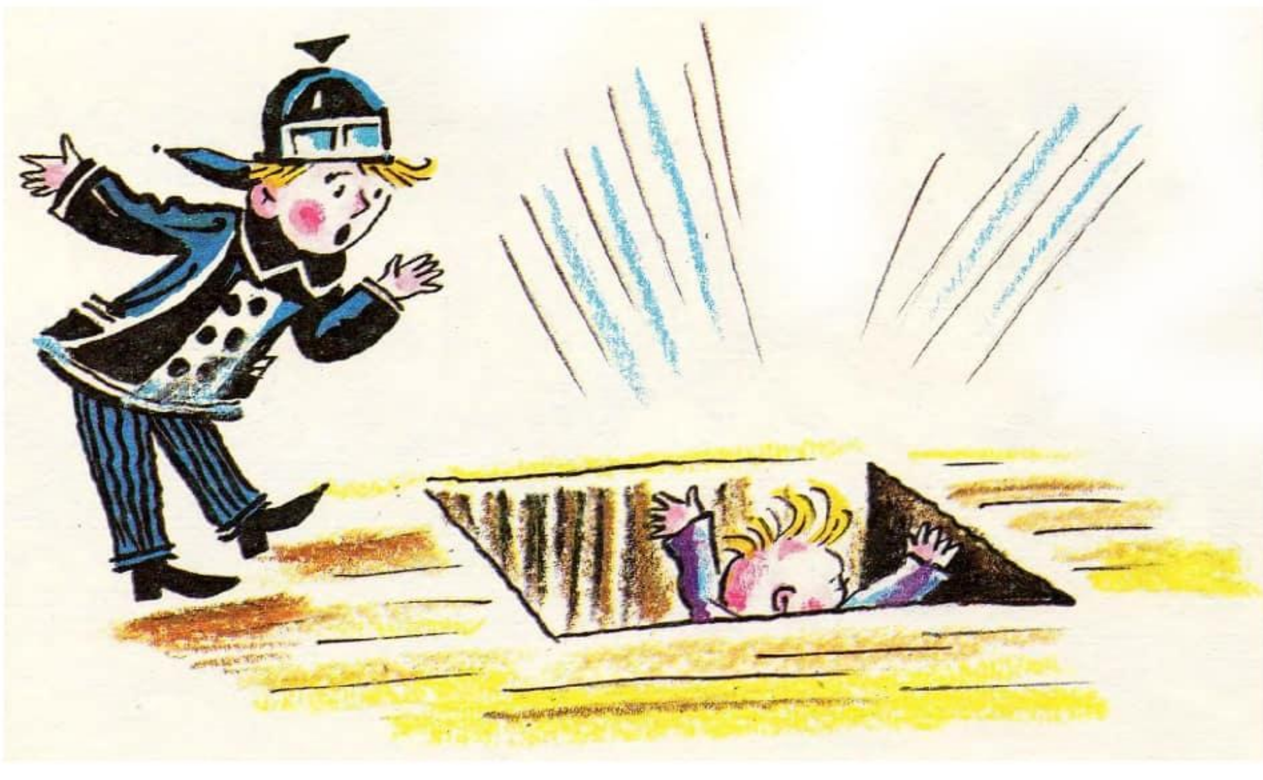




बात करते हुए, टैप्स ऊपर-नीचे घूम रहा था, टेबल, कुर्सियाँ और शेल्फ खोलने वाले बटन दबा रहा था और अलमारियां और कबर्ड खोल रहा था। आखिरी बटन दबाने पर फर्श में एक ट्रैप-डोर खुल गया जिससे वह नीचे तहखाने में गिर गया। एक मिनट बाद बाहर आंगन से उसकी आवाज़ सुनाई दी:

"इधर आओ, दोस्तों!"

फिर तीनों मित्र बाहर गये।



"यह मेरा गैरेज है," टैप्स ने कहा और वो बेंडम और ट्विस्टम को एक पत्थर की इमारत की ओर ले गया, जिसमें एक चौड़ा धातु का दरवाजा था।

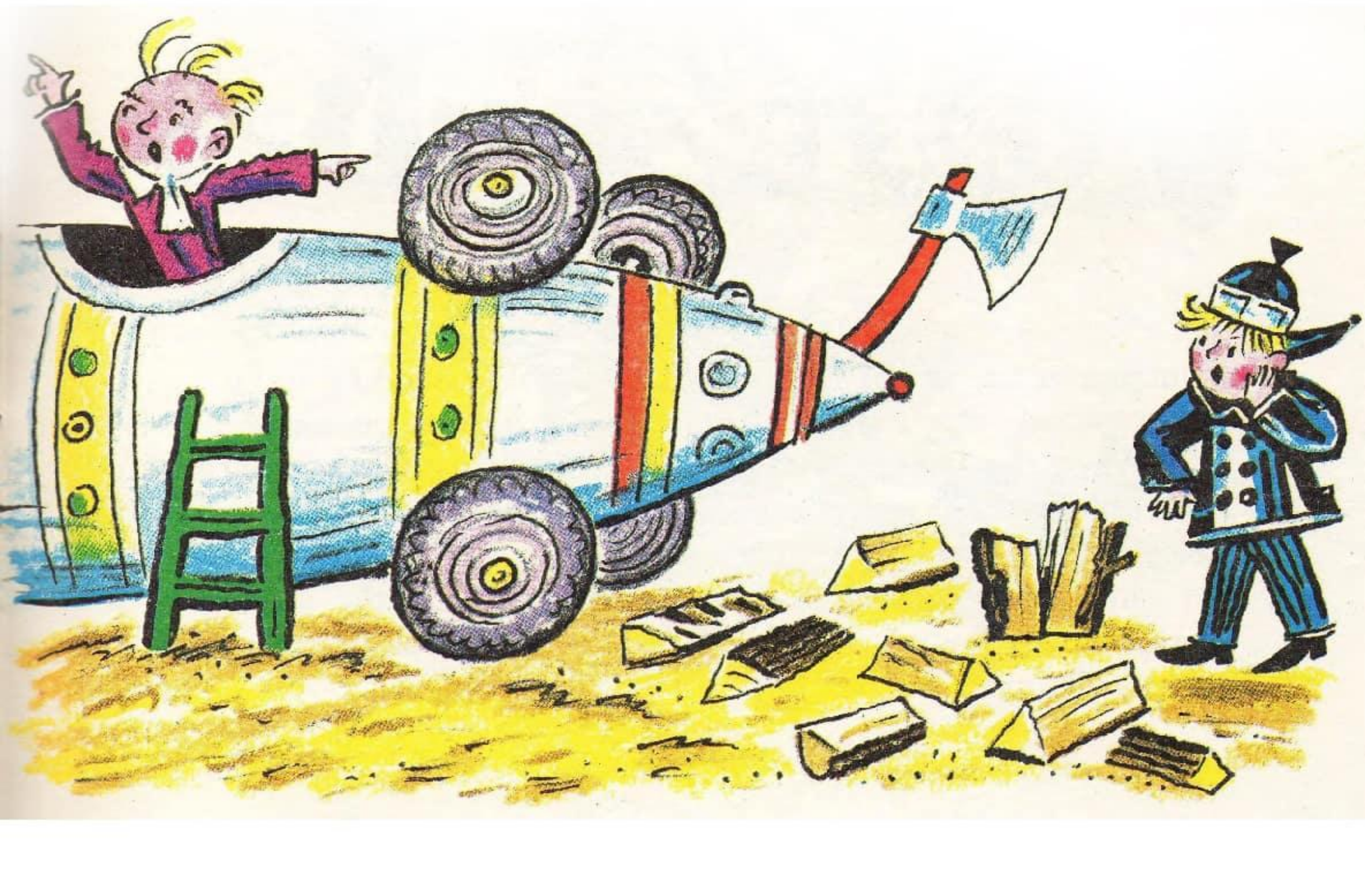
उसने एक बटन दबाया और दरवाज़ा स्टेज के पर्दे की तरह ऊपर उठ गया। गैरज के अंदर उन्हें एक अजीब सी कार दिखी जिसके चारों तरफ पहिए लगे हुए थे ।

“यह मेरी 8 पहियों वाली स्टीम-कार है जिसमें पिस्ता-कूलिंग सिस्टम है,” टैप्स ने बताया। “इसमें ऊपर चार पहिए और नीचे भी चार पहिए हैं। आम तौर पर यह नीचे के पहियों पर चलती है। ऊपर वाले पहिए सिर्फ़ तब काम आते हैं जब कार पलट जाए। सभी आठों पहिए एक एंगल पर जुड़े हैं ताकि कार न सिर्फ़ सीधी और उल्टी चल सके, बल्कि दोनों तरफ़ भी चल सके। इससे एक्सीडेंट का खतरा कम हो जाता है।”



टैप्स कार में बैठा और उसने दिखाया कि कार दोनों तरफ से सीधी और उल्टी कैसे चलती थी।

डेमोंस्ट्रेशन खत्म होने के बाद टैप्स ने कहा, “साधारण टैंक की जगह, इसमें एक बॉयलर है जिसमें सोडा-वॉटर गरम किया जाता है। इस सोडा-वॉटर से निकलने वाली भाप पिस्टन पर प्रेशर बढ़ाती है, जिससे पहिए आम कारों के मुकाबले अधिक तेज़ी से घूमते हैं। इस बॉयलर के पीछे एक फ्रीज़र है जिसमें सिलेंडर को ठंडा करने के लिए पिस्ता-आइसक्रीम बनाई जाती है। पिघली हुई आइसक्रीम को इंजन के तेल के तौर पर एक टैंक में पाइप से भेजा जाता है। कार में चार स्पीड हैं: पहली, दूसरी, तीसरी और चौथी, इसके अलावा कार साइड में या फिर उल्टी चल सकती है। कार के पीछे कपड़े धोने की मशीन भी लगी है। कपड़े तब भी धोए जा सकते हैं जब कार चारों स्पीड में से किसी पर भी चल रही हो। जब कार खड़ी होती है तो वह लकड़ी काट सकती है, मिट्टी मिला सकती है, ईंटें बना सकती है और आलू छील सकती है।”





जब दोस्तों ने जी भरकर कार को देख लिया, फिर वे टैप्स की वर्कशॉप में गए, जो हर तरह की चीज़ों से भरी हुई थी: पुरानी साइकिलें, टूटी हुई ट्राइसाइकिलें, स्कूटर के पार्ट्स, वैगन, टॉप्स और दूसरी चीज़ें। टैप्स बहुत देर तक सोल्डरिंग आयरन ढूंढता रहा, लेकिन वो उसे नहीं मिला। अचानक उसने अपने सिर पर हाथ मारा और कहा:

“हे भगवान, मैं कितना बेवकूफ़ हूँ! मैंने अपना सोल्डरिंग आयरन स्लिक के यहाँ छोड़ दिया है। आपको उसे लेने के लिए वहाँ जाना होगा।”

"यह बहुत आसान काम है। मैं तुम्हें कार से वहां छोड़ दूँगा," प्रेट्ज़ेल ने कहा।

"स्लिक कौन है?" बेंडम ने पूछा जब तीनों दोस्त, टैप्स से विदा लेकर गेट से निकल रहे थे।

“वो एक लेखक है,” प्रेट्ज़ेल ने कहा।

“सच में!” ट्विस्टम ने कहा। “क्या किस्मत है! मैं हमेशा से एक ज़िंदा लेखक से मिलना चाहता था।”

“यह अच्छा मौका है। वह सचमुच में एक दिलचस्प आदमी है,” प्रेट्ज़ेल ने कार में चढ़ते हुए कहा।



Н. Носов

В ЗМЕЕВКЕ

*На английском языке*

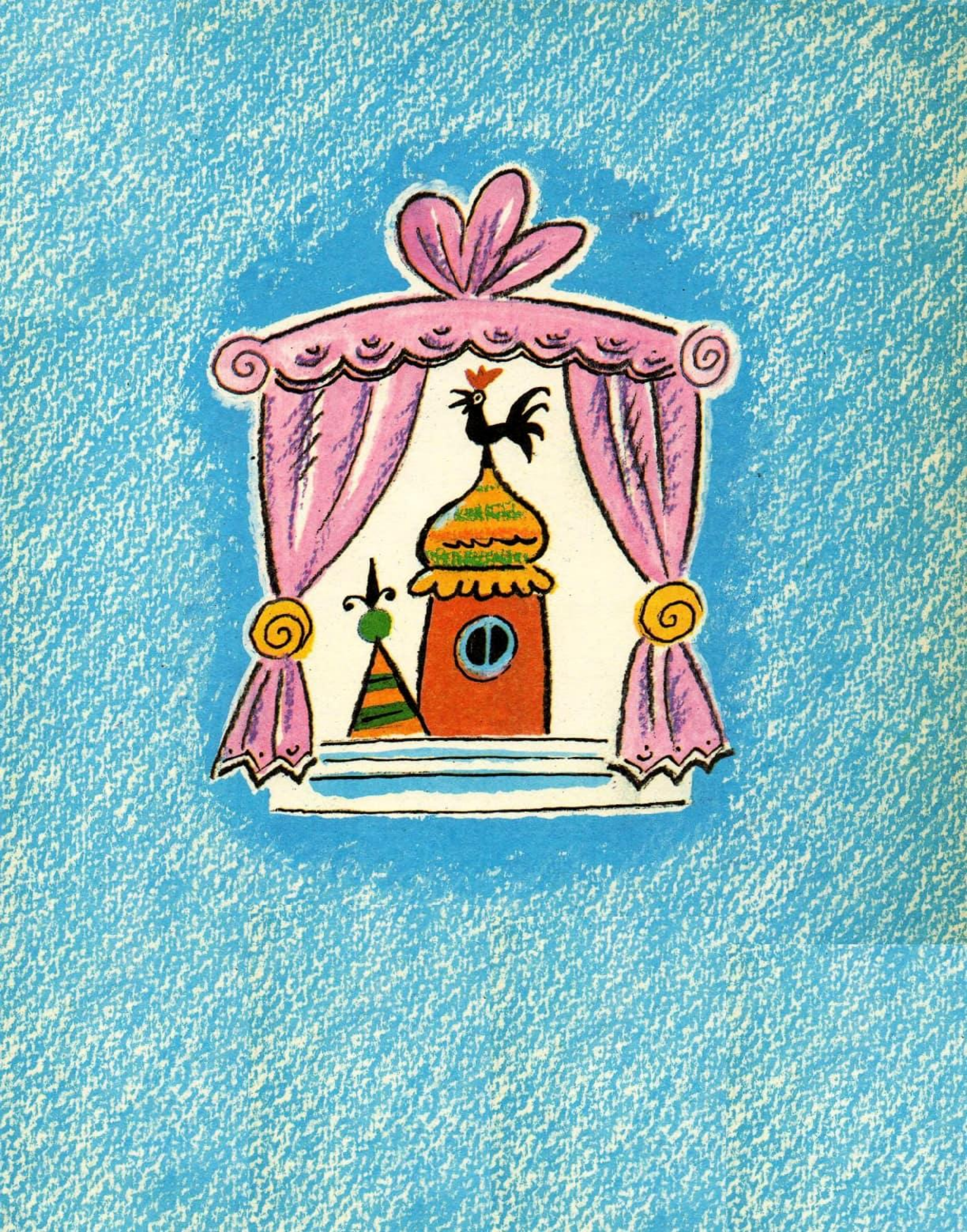
Перевод сделан по книге:
Н. Носов. «Приключения Незнайки и его друзей».
М., Издательство «Детгиз», 1958 г.

Для дошкольного возраста









# नजानू की कहानियां

19

निकोलाई नोसोव



# जीवित लेखक के घर का दौरा



RADUGA PUBLISHERS



स्लिक अपनी पढ़ने के कमरे की खुली खिड़की पर हाथ बांधे खड़ा था और कहीं दूर ताक रहा था। उसके लंबे बाल पीछे की ओर बंधे थे और उसकी मोटी काली भौंहें उसकी नाक पर मिल रही थीं, जिससे उसके चेहरे पर गहरी एकाग्रता का भाव था। जब उसके तीन दोस्त उसके कमरे में आए तो वह हिला तक नहीं। प्रेट्ज़ेल ने एक ऊँची आवाज़ में उसका स्वागत किया और बेंडम और ट्विस्टम का परिचय कराते हुए बताया कि वे सोल्डरिंग-आयरन के लिए आए थे, लेकिन स्लिक फिर भी खिड़की से बाहर ऐसे देखता रहा जैसे उसके दिमाग में कोई बहुत तेज़ और गंभीर विचार घूम रहा हो और वह उसे पकड़ने की पूरी कोशिश कर रहा हो। प्रेट्ज़ेल ने अपने कंधे उचकाए और बेंडम और ट्विस्टम को ऐसे देखा जैसे वो कह रहा हो: "मैंने तुमसे क्या कहा था?" आखिर में स्लिक ने खुद को ऐसे हिलाया जैसे वह अभी-अभी जागा हो, और फिर वो घूम गया।

"कैसे हो," उसने धीरे से कहा। "माफ़ करना, मेरे दोस्तों, मैं... उह... पीछे हट गया था, यूँ कहूँ — मैं अपनी कल्पना में, ऊँचे लोकों में बह गया था... स्लिक," उसने परिचय देते हुए कहा, और फिर उसने बेंडम की तरफ़ हाथ बढ़ाया।

बेंडम ने उसका हाथ पकड़ा, जो काफी हद तक फिश-केक जैसा लग रहा था, और फिर उसने अपना नाम बताया।

"स्लिक," लेखक ने फिर कहा और फिर उसने ट्विस्टम की ओर अपना हाथ बढ़ाया।

"ट्विस्टम," उसने फिश-केक हिलाते हुए कहा।

"स्लिक," लेखक ने तीसरी बार कहा और प्रेट्ज़ेल की ओर अपना हाथ बढ़ाया।

"लेकिन आप और मैं एक दूसरे को पहले से जानते हैं," प्रेट्ज़ेल ने कहा।



"अच्छा, तो आप प्रेट्ज़ेल है," स्लिक ने कहा। "आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। सच में बहुत खुशी हुई। बैठ जाइए, दोस्तों।"

फिर वे सब बैठ गये।

"तो तुम हमारे उस दोस्त टैप्स से मिल चुके हो, है ना?" स्लिक ने पूछा, यह सवाल पूछकर वो यह दिखाना चाहता था कि वह जिस भी दुनिया में गया था, वहाँ उसने प्रेट्ज़ेल की बातें सुनी थीं। "मुझे लगता है कि टैप्स ने तुम्हें अपनी फोल्डिंग कुर्सियाँ और टेबल जरूर दिखाई होंगी?" उसने हँसते हुए कहा।

बेंडम ने सिर हिलाया। स्लिक के मुंह के कोनों में एक मज़ाकिया मुस्कान थी और उसने अपने घुटनों को ऐसे रगड़ा जैसे उसे इससे खुशी मिल रही हो।

"ये आविष्कारक लोग अजीब होते हैं," उसने कहा। "अब आपको क्या लगता है कि इन सभी फोल्डिंग टेबल और कुर्सियों, उन सीक्रेट अलमारियों और गिरने वाले झूलों से भला किसी को क्या फायदा होगा? मैं एक साधारण कुर्सी पर बैठना पसंद करता हूँ जो आपके उठते ही ऊपर न उछले, और ऐसे बिस्तर पर सोना पसंद करता हूँ जो आपके लेटते ही ऊपर-नीचे न हो।



“मुझे ऐसे बिस्तर पर भला कौन सुला सकता है? अगर मैं नहीं चाहूँ तो फिर मुझे कौन सुला सकता है? अगर मेरी कोई इच्छा नहीं है तो फिर मुझे कौन सुला सकता है?”

"कोई भी ऐसा नहीं कर सकता है," प्रेट्ज़ेल ने कहा। "बस बात यह है कि टैप्स एक आविष्कारक है, और इसलिए वह हमेशा सुधार करने के बारे में सोचता रहता है। उसमें वह हमेशा सफल नहीं होता, लेकिन उसके कुछ आविष्कार बहुत काम के होते हैं। वह एक बहुत होशियार कारीगर है।"

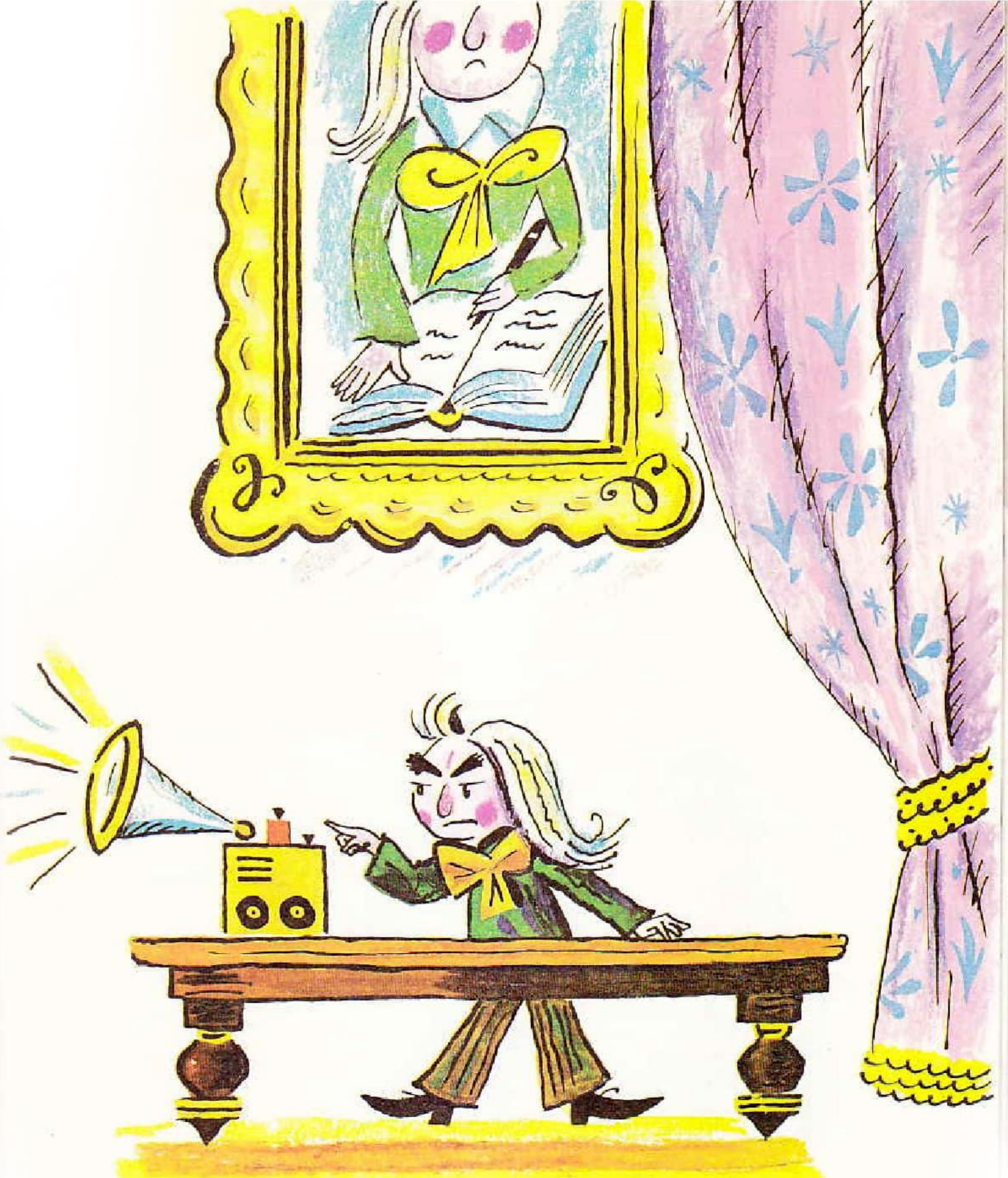
स्लिक ने कहा, "मैं यह नहीं कहता कि वह होशियार नहीं है। इसके उलट, मैं कहता हूं कि वह बहुत होशियार है। उदाहरण के लिए, उसने मेरे लिए एक बेहतरीन बातूनी मशीन बनाई है।"

"एक गप्पी?"

"हाँ, एक बोलने वाली मशीन। ये देखो।"

फिर स्लिक अपने मेहमानों को एक टेबल के पास ले गया जिस पर एक छोटा सा उपकरण रखा था।





"उस टाइटल बॉक्स, या बैग, या जो भी तुम उसे कहना चाहो, उसमें एक तरफ एक ओपनिंग है। अगर तुम ओपनिंग में कुछ शब्द बोलो और फिर यह बटन दबाओ, तो वह बातूनी तुम्हारी कही हर बात को दोहराएगा। इसे आज़मा कर देखो," स्लिक ने बेंडम से कहा।

बेंडम नीचे झुका और वो छोटे से बॉक्स में बोला:

"बेंडम, बेंडम, ट्विस्टम, ट्विस्टम।"

"और प्रेट्ज़ेल," प्रेट्ज़ेल ने कहा।

स्लिक ने एक बटन दबाया और मशीन ने भारी आवाज़ में दोहराया:

"बेंडम, बेंडम, ट्विस्टम, ट्विस्टम. और प्रेट्ज़ेल,"

ट्विस्टम ने पूछा, "तुम्हें टॉकिंग मशीन किसलिए चाहिए?"

स्लिक ने कहा, "अरे, कोई लेखक इस तरह की मशीन के बिना लगभग लाचार होता है।"

"मैं इसे लोगों के घरों में रखता हूँ, और यह मशीन उनकी हर बात रिकॉर्ड करती है। फिर मुझे बस शब्दों को कॉपी करना होता है और इस तरह तैयार होती है – एक छोटी कहानी या एक नॉवेल, प्रिंट के लिए तैयार।"



ट्विस्टम ने कहा, "यह तो बहुत आसान काम है! पर कुछ लोग कहते हैं कि एक लेखक के पास पहले एक प्लॉट होना चाहिए!"

"यह सब बकवास है!" स्लिक ने नफ़रत से कहा। "किताबों में यही लिखा होता है, लेकिन आप भला कैसे कोई नया प्लॉट सोच सकते हैं, जब उसे पहले ही किसी ने सोच लिया हो। दुनिया में ऐसा कोई प्लॉट नहीं है जो आपके दिमाग में आए और जो पहले किसी और के दिमाग ने न सोचा हो। नहीं, यह एकदम मॉडर्न तरीका है — अपनी सामग्री को, सीधे प्रकृति से जाकर लो। और किसे पता कि ऐसा करने पर, तुम कुछ ऐसा पाओगे, जिसके बारे में किसी लेखक ने पहले कभी सोचा ही न हो।"

बेंडम ने कहा, "लेकिन लोग शायद यह नहीं चाहें कि आप उनके घर में अपनी 'बकवास' करने वाली मशीन रखें।"

"मैं उन्हें बेवकूफ बनाता हूँ," स्लिक ने कहा। "जैसा कि आप देख रहे हैं, यह किसी साधारण छोटे बैग जैसा दिखता है। जब मैं अपने दोस्तों से मिलने जाता हूँ तो मैं उसे अपने साथ ले जाता हूँ, और जब मैं घर वापिस आता हूँ तो गलती से उसे किसी टेबल या कुर्सी के नीचे छोड़ देता हूँ। बाद में मैं अपने दोस्तों की हर कही बात को, सुनने का मज़ा लेता हूँ।"



"और आपके दोस्त इसके बारे में क्या कहते हैं?" ट्विस्टम ने पूछा। "यह जानना बहुत दिलचस्प होगा।"

"हाँ। मुझे खुद भी कुछ अंदाज़ा नहीं था कि लोग जो कहते हैं वो इतना दिलचस्प होगा। पर फिर मुझे पता चला कि लोग असल में कुछ भी नहीं कहते। वे बिना किसी वजह के सिर्फ ज़ोर-ज़ोर से हँसते हैं, मुर्गों की तरह बाँग देते हैं, कुत्तों की तरह भौंकते हैं, गुर्राते हैं, म्याऊँ-म्याऊँ करते हैं, लेकिन वे कुछ भी नहीं कहते।"

"यह तो बड़ी अजीब बात है!" बेंडम ने कहा।

"है ना?" स्लिक ने कहा। "जब तक मैं उनके साथ रहता हूँ, वे साधारण बौनों की तरह बात करते हैं, लेकिन जैसे ही मैं जाता हूँ, वे इस प्रकार की अजीब-अजीब आवाज़ें निकालने लगते हैं। लो, कल रात की रिकॉर्डिंग सुनो।"

स्लिक ने मशीन के अंदर एक डिस्क घुमाई और एक बटन दबाया। सबसे पहले मेहमानों को खरोंचने की आवाज़ और दरवाज़ा बंद होने जैसी धमाके की आवाज़ सुनाई दी।



इसके बाद एक पल की खामोशी छा गई और फिर हंसी की आवाज़ आई। किसी ने कहा: "टेबल के नीचे।" पैरों की खड़खड़ाहट हुई। फिर से हंसी का झोंका आया। भौंकना, बांग देना, रंभाना। भेड़ की मिमियाहट। किसी ने कहा: "लो, मैं गधे की तरह रेंकूंगा: ही-हा! ही-हा! ही-हा!" घोड़े की हिनहिनाहट। और हंसी।

"देखा?.. या फिर सही में सुनो?" स्लिक ने कंधे उठाते हुए कहा।

बेंडम ने कहा, "इस तरह एक नॉवेल लिखना काफी मुश्किल काम होगा।"

"यह कोई रहस्य नहीं है," प्रेट्ज़ेल ने स्लिक से कहा। "इस समय शहर में हर कोई तुम्हारी मशीन के बारे में जानता है, और इसलिए जैसे ही तुम अपने घर वापिस जाते हो, वे मशीन में तरह-तरह की बकवास बातें चिल्लाने लगते हैं।"

"लेकिन वो ऐसा क्यों करते हैं?"

"देखो तुम उन लोगों पर एक चाल चलना चाहते थे, लेकिन उन्होंने उलटे तुम पर ही एक चाल चल दी। यह तुम पर लोगों का छोटा सा एक मज़ाक है।"



स्लिक ने भौंहें चढ़ाईं।

"तो यही हो रहा है! लेकिन, अब मैं उनसे बेहतर करूंगा। मैं अपनी बकवास रिकार्ड वाली चीज़ उनकी खिड़कियों के नीचे रख दूंगा। मेरा छोटा सा बैग तब अपनी कीमत जरूर साबित करेगा। लेकिन इसे देखो – तुम्हें क्या लगता है यह क्या है?" – और फिर उसने एक भारी पैकेज की ओर इशारा किया जो मुड़े हुए टेंट या बड़े साइज़ के छाते जैसा लग रहा था।

"क्या यह कोई छाता है?" ट्विस्टम ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं। यह लेखकों के लिए एक पोर्टेबल कुर्सी और टेबल है," स्लिक ने कहा। "मान लो, कि एक लेखक किसी जंगल का विवरण लिखना चाहता है। वह जंगल में जाता है, अपनी टेबल खोलता है, और एक आरामदायक कुर्सी पर बैठता है, और जो कुछ भी देखता है उसका विवरण लिखता है। लो, तुम भी इस कुर्सी को आज़माओ," उसने ट्विस्टम से कहा।



स्लिक ने छाते के हैंडल जैसे दिखने वाले बटन को दबाया, और वह तुरंत एक छोटी सी टेबल और कुर्सी में बदल गया। ट्विस्टम को कुर्सी पर बैठने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ीं।

स्लिक ने कहा, "अब जब तुम आराम से बैठे होंगे तो तुम्हें ज़रूर प्रेरणा मिलेगी।"

"तुम इस बात से जरूर सहमत होगे कि घास या खाली ज़मीन पर बैठने के बजाय कुर्सी पर बैठकर लिखना हज़ार गुना ज़्यादा आरामदायक होगा।"

ट्विस्टम को न तो आराम महसूस हुआ और न ही उसने खुद को उत्साहित महसूस किया। उसे अपने पैर में ऐंठन महसूस हुई और इसलिए उसने जल्द-से-जल्द विषय बदलने का फैसला किया।

"आपने कौन सी किताबें लिखी हैं?" उसने कुर्सी से उठते हुए पूछा।

"मैंने अभी तक कुछ नहीं लिखा है," स्लिक ने कहा। "लेखक बनना उतना आसान नहीं है जितना आप सोचते हैं। लेखक बनने से पहले, मुझे खुद के लिए कई ऐसी चीज़ें जुटानी पड़ीं जिनका मिलना काफी मुश्किल होता है। सबसे पहले, मुझे अपनी फोल्डिंग टेबल और कुर्सी के तैयार होने का इंतज़ार करना पड़ा। उसमें सालों लग गए। फिर मुझे बातूनी मशीन का इंतज़ार करना पड़ा। आप खुद जानते हैं कि कारीगर लोग समय को कैसे खींचते हैं। खासकर टैप्स। उसे बातूनी को बनाने के बारे में सोचने में ही ढाई साल लग गए। उसे इस बात की कोई चिंता नहीं थी कि वो मुझे कितना इंतज़ार करवा रहा है! जैसे उसे क्रिएटिव कोशिशों की तकलीफ़ समझ में ही न आती हो! मुझे पता है कि बातूनी एक बहुत मुश्किल चीज़ है, लेकिन मुझे कोई वजह नहीं दिखती कि उसने आखिर उसे इतना जटिल क्यों बनाया?"

"उसने ऐसा क्यों किया?" बेंडम ने पूछा।

"उसने सच में ऐसा किया। एक सरल बातूनी बनाने के बजाय, उसने उसके साथ एक वैक्यूम-क्लीनर जोड़ दिया। मुझे वैक्यूम-क्लीनर की भला क्या ज़रूरत? उसमें और डेढ़ साल लग गए। लेकिन फिर यह सब खत्म हो गया," स्लिक ने हाथ हिलाते हुए कहा, "अब मेरे पास बातूनी है, और लिखना शुरू करने से पहले मुझे बस कुछ और छोटी-मोटी चीज़ें जमा करनी हैं।"

ट्विस्टम ने कहा, "क्या यह अच्छी बात नहीं होगी अगर कोई लेखकों के लिए एक सोचने वाली मशीन बनाए?"

"वो तो बहुत अच्छी बात होगी," स्लिक ने सहमति जताई।

तब तक सूरज डूबने लगा था और मेहमानों को लगा कि अब उनके जाने का समय हो गया था। उन्होंने अलविदा कहा, सोल्डरिंग-आयरन लिया और बाहर चले गए।

बेंडम ने कहा, "अगर हमें अंधेरा होने से पहले ग्रीनविले पहुंचना है तो हमें जल्दी करनी होगी।"

"डरो मत, मैं तुम्हें तुरंत वहाँ पहुँचा दूँगा," प्रेट्ज़ेल ने कहा। "लेकिन मुझे लगता है कि पहले हमें कुछ खा लेना चाहिए।"

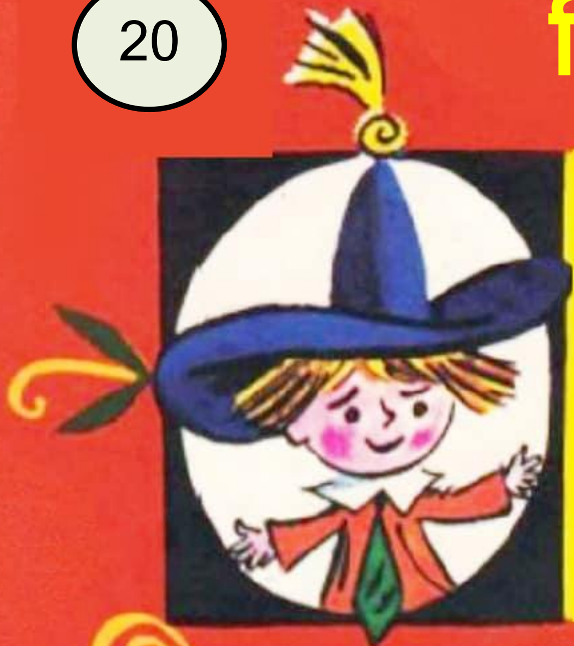
और फिर वह उन्हें डिनर के लिए अपने साथ घर ले गया।



# नजानू की कहानियां

20

निकोलाई नोसोव



# ब्लॉब्स काम पर



RADUGA PUBLISHERS



# नजानू की कहानियां

20

## निकोलाई नोसोव

# ब्लॉब्स काम पर

*चित्र: बोरिस कलौशिन*

*हिंदी: अरविन्द गुप्ता*







जब बेंडम और ट्विस्टम काइट-टाउन में थे, तब ग्रीनविल में कुछ ज़रूरी घटनाएँ घट रही थीं। सबसे पहले ब्लॉब्स ने स्नोड्रॉप का पोर्ट्रेट बनाया। इसे बनाने में उसे लगभग दो घंटे लगे, लेकिन वो समय का सही इस्तेमाल हुआ। इस पिक्चर में स्नोड्रॉप की इमेज एकदम सही थी। कुछ लड़की-बौनों यानि छुटकियों ने कहा कि चित्र स्नोड्रॉप से भी बेहतर था, लेकिन यह सच नहीं था। स्नोड्रॉप से कुछ बेहतर गढ़ना एक बेहद मुश्किल काम था। शायद ब्लॉब्स उसके फीचर्स की खूबसूरती को और ज़्यादा आकर्षक और एक्सप्रेसिव बनाने में कामयाब रहा। यकीनन, यही तो सच्ची कला का असली मकसद होता है।





तस्वीर नीचे वाले कमरे की दीवार पर टंगी थी, जहाँ सब उसे देख सकते थे। और जो भी उस तस्वीर को देखता, वह तुरंत ब्लॉब्स से अपनी पोर्ट्रेट बनाने की मांग करता। लेकिन स्नोड्रॉप किसी को भी ऊपर वाले कमरे में, ब्लॉब्स तक नहीं पहुँचने देती थी, जहाँ वह अब कॉर्नफ्लावर का पोर्ट्रेट बनाने में व्यस्त था।

नजानू, हमेशा ब्लॉब्स के इर्द-गिर्द नाचता रहता था और उसे पेंटिंग संबंधी अपना ज्ञान दिखाने के लिए तरह-तरह की फालतू सलाह देता रहता था। तभी नजानू ने नीचे से तेज शोर सुना।



"यह सब शोर क्या है? यह सब शोर क्या है?" वह सीढ़ियों से नीचे भागते हुए चिल्लाया। "यहाँ से तुम सब चले जाओ!" लेकिन बेचारी लड़कियाँ आर्टिस्ट तक पहुँचने के लिए इतनी बेचैन थीं कि उन्होंने नजानू, की बदतमीज़ी का बिल्कुल बुरा नहीं माना। इसके उलट, वे नजानू के चारों ओर इकट्ठा हो गईं और उसे "प्यारा, अच्छा नजानू," कहकर पुकारने लगीं, और उससे गुज़ारिश करने लगीं कि वह उन्हें वहाँ से वापिस न भेजे।





“तो फिर एक लाइन लगाओ,” नजानू चिल्लाया और उसने लड़कियों को ज़ोर से दीवार से सटा दिया। “मैंने कहा, लाइन लगाओ, वरना मैं तुम सबको भगा दूँगा!”

"उफ़, तुम कितने भयानक जानवर हो!" स्नोड्रॉप ने कहा। ‘यह बात करने का सही तरीका नहीं है। तुमने अपनी हरकतों से मुझे काफी शर्मिंदा किया है।”

"फिर आगे बढ़ो और शरमाओ," नजानू ने उससे कहा।

तभी एक और छुटकी कमरे में आई, और उस आम अफ़रा-तफ़री में, इससे पहले कि उसे कोई देखता वह किसी तरह सीढ़ियों तक पहुँच गई। नजानू उसके पीछे भागा और वो उसका हाथ पकड़ने ही वाला था कि वह छुटकी रुकी, और उसने गुस्से से देखते हुए, नजानू के चेहरे पर अपनी उंगली हिलाई।

"मुझे छूने की हिम्मत मत करना!" उसने कहा। "मुझे लाइन में लगने की ज़रूरत नहीं है। मैं एक कवयित्री हूँ।"

यह इतना अचानक हुआ कि नजानू बस खड़ा-खड़ा देखता ही रह गया, जबकि कवयित्री शांति से सीढ़ियाँ चढ़ती चली गई।



"वह कौन है?" नजानू ने उसकी ओर इशारा करते हुए पूछा।

"एक कवयित्री। वह कविता लिखती है," छुटकियों ने कहा।

"उसमें क्या बड़ी बात है?" नजानू ने धीरे से कहा। "जहां से मैं आता हूं, वहां भी एक कवि है। वह मेरा चेला है। कभी मैंने उसे कविता लिखना सिखाया था, लेकिन अब वह खुद लिखता है।"

"तो आप भी कवि हैं?" छुटकी ने हांफते हुए कहा।

"मैं हूँ।"

"सोचो! एक कलाकार और एक कवि!"

"और एक संगीतकार भी," नजानू ने गर्व से कहा।

छुटकियों ने कहा, "कृपया हमें अपनी एक कविता सुनाएं?"

"बाद में," नजानू ने ऐसे कहा जैसे उस समय उसके पास सोचने के लिए बहुत ज़्यादा ज़रूरी बातें हों।

"आपके कवि का नाम क्या है?"

"पोसी."

"पोसी?" लड़कियों ने ताली बजाते हुए कहा।



"तुम्हारे कवि का नाम पोसी है और हमारी कवि का नाम ब्लॉसम है। क्या तुम्हें नहीं लगता कि वे एक जैसे हैं?"

"वे थोड़े एक-जैसे जरूर होंगे," नजानू ने माना।

"क्या तुम्हें ब्लॉसम नाम पसंद आया?"

"वो नाम बुरा तो नहीं है।"

"तुम्हें उसकी कविताएं सुननी चाहिए!" छुटकियां चिल्लाईं।

"उसकी कविताएं बहुत रसीली होती हैं! ऊपर जाओ और वो तुम्हें कुछ जरूर सुनाएंगी। फिर हमें बताना कि तुम्हें वो कैसी लगीं।"

"मैं वैसा ही करूंगा," नजानू ने कहा।



जब वह ऊपर वाले कमरे में गया तो ब्लॉब्स, कॉर्नफ्लावर के पोर्ट्रेट को फ़ाइनल टच दे रहा था और ब्लॉसम सोफ़े पर ट्रिल्स के पास बैठी उसके साथ संगीत पर बात कर रही थी। नजानू ने अपने हाथ पीठ के पीछे बांध लिए और फ़र्श पर टहलने लगा, बीच-बीच में वो कवयित्री को, तिरछी नज़रों से देखता था।

"तुम पेंडुलम की तरह आगे-पीछे क्यों चल रहे हो?" ब्लॉसम ने कहा। "प्लीज़ बैठ जाओ। तुम्हें देखकर मुझे चक्कर आ रहा है।"

"अपने काम पर ध्यान रखो वरना मैं ब्लॉब्स से कह दूँगा कि तुम्हारी पोर्ट्रेट न बनाए," नजानू ने कहा।

"क्यों, क्या वह तुम्हें आदेश दे सकता है?" ब्लॉसम ने आश्चर्य से ब्लॉब्स से पूछा।

"वह यह कर सकता है। वह कुछ भी कर सकता है," ब्लॉब्स ने कहा। ब्लॉब्स पेंटिंग में इतना व्यस्त था कि उसने सुना ही नहीं कि नजानू ने क्या कहा था।

"देखा?" नजानू ने कहा। "हर किसी को मुझसे ऑर्डर लेना होगा क्योंकि मैं ही यहां का चीफ हूँ।"

यह देखते हुए कि वह कितना महत्वपूर्ण था, ब्लॉसम ने उससे सुलह करने का फैसला किया।

"क्या वो गुब्बारा तुमने ही बनाया था?" ब्लॉसम ने कहा।

"और कौन बनाता?" नजानू ने कहा।

"किसी दिन मैं तुम्हारे बारे में एक कविता लिखूंगी।"

"मुझे तुम्हारी कोई कविता नहीं चाहिए," नजानू ने कहा।

"ऐसा मत कहो," ब्लॉसम ने धीरे से कहा।

"तुम्हें नहीं पता कि मैं कितनी सुंदर कविताएँ लिखती हूँ। क्या तुम चाहोगे कि मैं उनमें से एक कविता तुम्हें सुनाऊँ?"

"अगर तुम्हारी मर्जी हो तो जरूर सुनाओ," नजानू ने बेपरवाही से कहा।



"तो मैं तुम्हें अपनी एक नई कहानी सुनाती हूँ। जो एक मेंढक के बारे में है:

मैंने एक मेंढक को पैर के अंगूठे से पकड़ा,
ट्रा-ला-ला, और फिर उसे जाने दिया।
मुझे मेंढक और चूहे बहुत पसंद हैं,
ट्रा-ला-ला, वे बहुत अच्छे होते हैं।
फिर मैंने एक भौंरा पकड़ा।
मैंने उसका डंक नहीं देखा, समझे आप।
डंक ने मुझे देख लिया, बु-हू! बु-हू!
और डंक मेरी उंगली में आर-पार चुभ गया।
मैं मेंढकों और मधुमक्खियों से तंग आ चुकी हूँ,
अठखेलियाँ करते-करते और पेड़ों पर चढ़ते-चढ़ते
ऐसी बातें मेरे दिमाग में नहीं बैठेंगी;
उनकी बजाय मुझे कोई किताब पढ़नी चाहिए।"

"हुर्रे! हुर्रे!" ब्लॉब्स चिल्लाया और उसने ताली भी बजाई।

"बहुत अच्छी कविता है," ट्रिल्स ने कहा। "यह न सिर्फ़ मेंढकों के बारे में बताती है, बल्कि बच्चों को किताबें पढ़ने के लिए भी बढ़ावा देती है। कविता बहुत जानकारी देने वाली है।"

"सुनो मेरी एक अन्य कविता," कवयित्री ने कहा।

इस बार कविता मेंढक के बजाय जुगनू के बारे में थी और वो "मुझे जाकर अपना बिस्तर ठीक करना चाहिए" शब्दों के साथ खत्म हुई, न कि "मुझे किताब पढ़नी चाहिए"।

अगली कविता एक मच्छर के बारे में थी और वो इस तरह खत्म हुई: "मुझे मुर्गियों को खाना खिलाते हुए देखना चाहिए", और आखिरी कविता इस तरह खत्म हुई: "मुझे पोल्ट्री शेड को पेंट करना चाहिए"।



उस समय तक ब्लॉब्स ने कॉर्नफ्लावर का पोर्ट्रेट पूरा कर लिया था। हर कोई इससे बहुत खुश था।

उन्होंने कहा, "बहुत सुंदर!"

"बहुत बढ़िया! एक मास्टरपीस!"



"क्या तुम मुझे भी ऐसी ही नीली ड्रेस में पेंट नहीं कर सकते?" ब्लॉसम ने ब्लॉब्स से कहा।

"लेकिन आपकी ड्रेस तो हरे रंग की है," ब्लॉब्स ने कहा।

"उससे क्या फ़र्क पड़ता है? आप उसे नीला रंग सकते हैं, भले ही मेरी ड्रेस हरी हो। अरे यार, अगर मुझे पता होता कि कॉर्नफ़्लावर की तस्वीर नीले रंग में इतनी अच्छी बनेगी तो मैं भी नीली ड्रेस जरूर पहनती।"

"मुझे लगता है मैं वैसा सकता हूँ," ब्लॉब्स ने कहा।

“फिर मेरी आँखें भी नीली कर दो।"

"तुम्हारी आँखें? लेकिन वे तो एकदम भूरी हैं," ब्लॉब्स ने कहा।

"उससे क्या फरक पड़ता है? अगर आप हरी ड्रेस को नीला कर सकते हैं, तो भूरी आँखों को नीला क्यों नहीं कर सकते? आओ, वैसा कर दो," उसने फुसलाया।

ब्लॉब्स ने कहा, "आंखों और कपड़ों में बहुत अंतर होता है।"

"आप अपनी ड्रेस बदल सकते हैं, लेकिन आप अपनी आंखें नहीं बदल सकते।"

"मैं समझ गई। ठीक है, तो अगर आपको उन्हें भूरा ही रंगना है, तो रंगो, लेकिन मेरी आँखों को जितना हो सके उतना बड़ा बनाओ।"

"वैसे भी आपकी आँखें काफी बड़ी हैं।"

"बस थोड़ा सा बड़ा कर दो, प्लीज़। और लंबी-लंबी पलकें भी बनाओ।"

"ठीक है।"

"और सुनहरे बाल। मेरे बाल तो लगभग सुनहरे ही हैं, है ना?" "लगभग," ब्लॉब्स ने कहा।

उसने कवयित्री की पेंटिंग बनाना शुरू किया। हर मिनट या तो वह तस्वीर को देखकर उछल पड़ती और कहती: "आँखें बड़ी करो — और भी बड़ी, और भी बड़ी!"

"मुँह छोटा करो - और भी छोटा, और भी छोटा!"

जब पोर्ट्रेट बनकर तैयार हुआ, तो उसमें बड़ी-बड़ी आँखें थीं, मुँह पिन की नोक जितना बड़ा था, और बाल ऐसे थे जैसे शुद्ध सोने के बने हों। चित्र, ब्लॉसम से लगभग बिल्कुल भी मिलता-जुलता नहीं था, लेकिन वह उससे बेहद खुश थी और उसने कहा कि वह इससे बेहतर कुछ नहीं चाह सकती थी।







